भारतीय रेल

जनवरी-2021

₹20

चिनाब ब्रिज

स्वदेशी तकनीक का श्रेष्ठ उदाहरण

ऊधमपुर-श्रीनगर-बारामुला राष्ट्रीय रेल लिंक परियोजना पृ. 12

वर्ष 2020 की उपलब्धियों की झांकी पृ. 20

पत्रिका के ऑनलाइन सदस्य बनने की प्रक्रिया पृ. 40

कैलेंडर-2021 पृ. 38

श्री सुनीत शर्मा ने संभाला अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का पदभार

श्री सुनीत शर्मा ने रेलवे बोर्ड (रेल मंत्रालय) के नये अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) तथा भारत सरकार के पदेन प्रमुख सचिव का 1 जनवरी, 2021 से पदभार संभाल लिया है। मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति ने श्री सुनीत शर्मा की रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं सीईओ के रूप में नियुक्ति को मंजूरी दी है। इससे पूर्व श्री शर्मा पूर्व रेलवे के महाप्रबन्धक के रूप में काम कर रहे थे।

आप ने वर्ष 1979 में एक स्पेशल क्लास अप्रेंटिस के रूप में भारतीय रेल में नियुक्ति पाई थी। उस समय वे आईआईटी कानपुर में इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहे थे। श्री शर्मा मैकेनिकल और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में स्नातक हैं और उन्हें भारतीय रेल में विभिन्न पदों पर काम करने का 40 वर्ष से अधिक का अनुभव प्राप्त है। उन्होंने ऑपरेशनल वर्किंग, शेड डिपो और वर्कशॉप में स्टिंट भी किया है। वे मुंबई में परेल वर्कशॉप के मुख्य कार्यशाला प्रबन्धक भी रहे, जहां उन्होंने पर्वतीय रेलवे के लिए नैरो गेज लोकोमोटिव्ज के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने मुंबई के निकट विरासत माथेरान लाइन के लिए पुराने नैरो गेज भाप इंजन की बहाली भी की थी। वर्ष 2006 में मुंबई उपनगरीय रेल विस्फोटों के दौरान श्री शर्मा उस टीम का हिस्सा थे, जिसने इन आतंकवादी हमलों के कुछ घंटों के दौरान ही उपनगरीय नेटवर्क को ठीक कर दिया था। मुंबई सीएसटी के एडीआरएम के रूप में उन्हें उपनगरीय नेटवर्क की सेवा बढ़ाने का श्रेय भी प्राप्त है, जिसे मुंबई की जीवन रेखा माना जाता है। 2008 के मुंबई आतंकवादी हमलों के दौरान भी, वह उस टीम का हिस्सा थे जिसने मुंबई सीएसटी, मध्य रेलवे पर हुए हमलों के बाद सेवा सुचारू रूप से शुरू करने का प्रबंधन किया था। पुणे में डीआरएम के रूप में बुनियादी ढाँचे का विस्तार करने में उन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, जिसके कारण परिचालन क्षमता में बढ़ोतरी हुई थी। डीजल लोकोमोटिव वाराणसी में मुख्य यांत्रिक अभियंता के रूप में विद्युत लोकोमोटिव का उत्पादन शुरू करने वाली टीम का उन्होंने नेतृत्व किया था। डीजल इंजनों को इलेक्ट्रिक इंजन में परिवर्तित करने का काम उन्हीं के नेतृत्व में हुआ था। यह कार्य दुनिया में कहीं भी पहली बार उनके नेतृत्व में ही रिकॉर्ड समय में पूरा किया गया था।

मॉडर्न कोच फैक्ट्री, रायबरेली के महाप्रबन्धक के रूप में श्री शर्मा ने एक वर्ष में बहुत अधिक आवश्यक आधुनिक यात्री डिब्बों का निर्माण दोगुना करने का कीर्तिमान स्थापित किया था।

पूर्व रेलवे के महाप्रबन्धक रूप में आपने माल गाड़ियों की गति रिकॉर्ड स्तर तक बढ़ाने की पहल शुरू की थी। आपने नई लाइनों की बुनियादी ढांचा परियोजनाओं और विद्युतीकरण का कार्य पूरा किया, जिससे न केवल परिचालन दक्षता बढ़ी, बल्कि स्थानीय क्षेत्रों का विकास भी हुआ। उन्हें काम को आसान बनाने और प्रशासनिक सुधारों के लिए प्रणालीगत बदलाव लाने के लिए भी जाना जाता है।

अपने कॅरियर के दौरान आपने अनेक पेशेवर पुरस्कार भी जीते हैं। महाप्रबन्धक, मॉडर्न कोच फैक्ट्री रायबरेली, और मुख्य यांत्रिक इंजीनियर, (बनारस लोकोमोटिव वर्क्स) के रूप में काम करने के दौरान आपने सर्वश्रेष्ठ उत्पादन इकाइयों के लिए पुरस्कार जीते हैं। श्री शर्मा ने जर्मनी और फ्रांस में व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त किया है और आपने अमेरिका में कार्नेगी मेलन विश्वविद्यालय के उन्नत नेतृत्व और प्रबंधन पाठ्यक्रमों में भी भाग लिया है। आपने लोकोमोटिव के निर्माण के लिए एक सलाहकार के रूप में ईरान का भी दौरा किया है।

श्री शर्मा एक उत्साही खिलाड़ी भी हैं। उन्होंने प्रतियोगी स्तर पर बिलियर्ड्स और स्नूकर खेला है। वे एक जाने-माने गोल्फ, बैडमिंटन और स्क्वैश खिलाड़ी भी हैं। ■

भारतीय रेल

रेल मंत्रालय की एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका

जनवरी 2021 | आरंभ : 1960 | वर्ष : 61 | अंक : 6 | मूल्य : ₹20

संपादक मंडल

श्री सुनीत शर्मा
अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड

श्री नरेश सालेचा
सदस्य (वित्त), रेलवे बोर्ड

श्री सुशांत कुमार मिश्रा
सचिव, रेलवे बोर्ड

श्री राजेश दत्त बाजपेई
कार्यकारी निदेशक, सूचना एवं प्रचार

संपादक

योगेश अवस्थी

संपादकीय कार्यालय

संपादक, भारतीय रेल,
कमरा नं. 337-बी, रेल भवन,
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001
editorbhartiyarailrb@gmail.com
editorbhartiyarail@gmail.com

विज्ञापन व सदस्यता हेतु संपर्क

श्री प्रशान्त कुमार पट्टनायक
व्यापार प्रबन्धक
कमरा नं. 310, रेल भवन
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001
टेलीफोन: 23303665, 23382531
bmpr310rb@gmail.com

सदस्यता शुल्क

सर्वसाधारण - ₹250
रेलकर्मियों के लिए - ₹200

संपादन सहयोग

श्री रणमत सिंह

आवरण

ऊधमपुर-श्रीनगर-बारामुला राष्ट्रीय रेल लिंक परियोजना : निर्माणाधीन चिनाब ब्रिज का एक विहंगम दृश्य

फॉलो करें

Twitter : @bhartiyarailrb
Facebook : bhartiyarailpatrika
Instagram : bhartiyarailpatrika

इस पत्रिका में छपी हर सामग्री का सम्बन्ध, जब तक विशेषत: स्पष्ट न लिखा जाए, किसी सरकारी सूत्र से न समझा जाए।

© भारतीय रेल

6 प्रधानमंत्री द्वारा न्यू भाउपुर-न्यू खुर्जा खंड तथा पूर्वी समर्पित मालढुलाई गलियारे के संचालन नियंत्रण केंद्र का उद्घाटन

8 प्रधानमंत्री ने 100वीं किसान रेल को झंडी दिखाकर रवाना किया
9 भारत और बांग्लादेश के प्रधानमंत्रियों ने किया हल्दीबाड़ी-चिल्हाटी रेल लिंक का उद्घाटन

ऊधमपुर-श्रीनगर-बारामुला राष्ट्रीय रेल लिंक परियोजना

13 रेल मंत्री ने जम्मू-कश्मीर में रेलवे की राष्ट्रीय परियोजना के कार्य में प्रगति की समीक्षा की
17 रेलवे को पार्सल व्यवसाय की वृद्धि पर ध्यान देने की जरूरत है : रेल मंत्री
18 भारतीय रेल में मनाया गया महापरिनिर्वाण दिवस

19-36
भारतीय रेल की वर्ष 2020 की उपलब्धियों की झांकी

33 मुम्बई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल परियोजना
34 मराठवाड़ा रेल कोच फैक्ट्री द्वारा प्रथम कोच शेल का निर्माण
35 आइसीएफ निर्मित नए विस्टाडोम टूरिस्ट कोच का सफल गति परीक्षण

36 दिल्ली-वाराणसी हाई स्पीड रेल कॉरिडोर...
37 'राष्ट्रीय रेल योजना' का मसौदा तैयार
46 अस्पताल प्रबंधन सूचना प्रणाली परीक्षण परियोजना प्रारंभ
47 रेलों के अंचल से
61 बरगद *(श्री जसविंदर शर्मा)*
67 सिक्किम *(डॉ. मुकुल श्रीवास्तव)*
71 मर्दाना जिस्म, वो भी रूई के फाहे-से नरम - धरम *(श्री अविनाश त्रिपाठी)*

10 रेल टिकटों की ऑनलाइन बुकिंग हेतु उन्नत ई-टिकटिंग वेबसाइट और मोबाइल ऐप लांच

44 बिजली लाइन वाली सबसे लंबी रेल सुरंग की रोचक जानकारी *(श्री विमलेश चन्द्र)*

63 चित्रकूट *(श्री सुरेन्द्र अग्निहोत्री)*

VAE VKN
Turnout Systems
CMS Crossings
Foundry Products

Product Range

- **CMS Crossings with welded leg extensions, EDH**
- **Switches /Thick Web Switches**
- **Diamond Crossings in CMS**
- **Scissor Crossover in CMS**
- **Turnout Solutions for MRTS**
- **Heavy Haul Turnout Solutions**
- **Castings of different steel grades ranging from 20 KG to 5 MT**

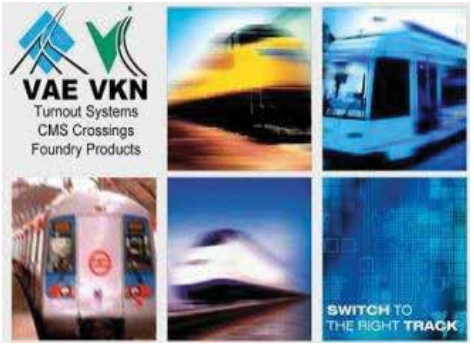

voestalpine VAE VKN India Pvt. Ltd., Sonepat (Haryana) is a joint venture, multinational company in collaboration with voestalpine VAE GmbH, Austria, globally renowned and a pioneer company in the field of Railway Track Systems and its affiliate company JEZ Sistemas Ferroviarios S.L., Spain, specialized in manufacture of CMS Crossings for conventional, heavy-haul and high-speed applications.

The Company is managed by competent, well qualified technical, commercial and managerial professionals merging international and local Indian expertise. VAE VKN is well equipped with most modern and state of the art infrastructure and technical back up by VAE and their associates all over the world over to produce and meeting quality requirement of the customers in all respects.

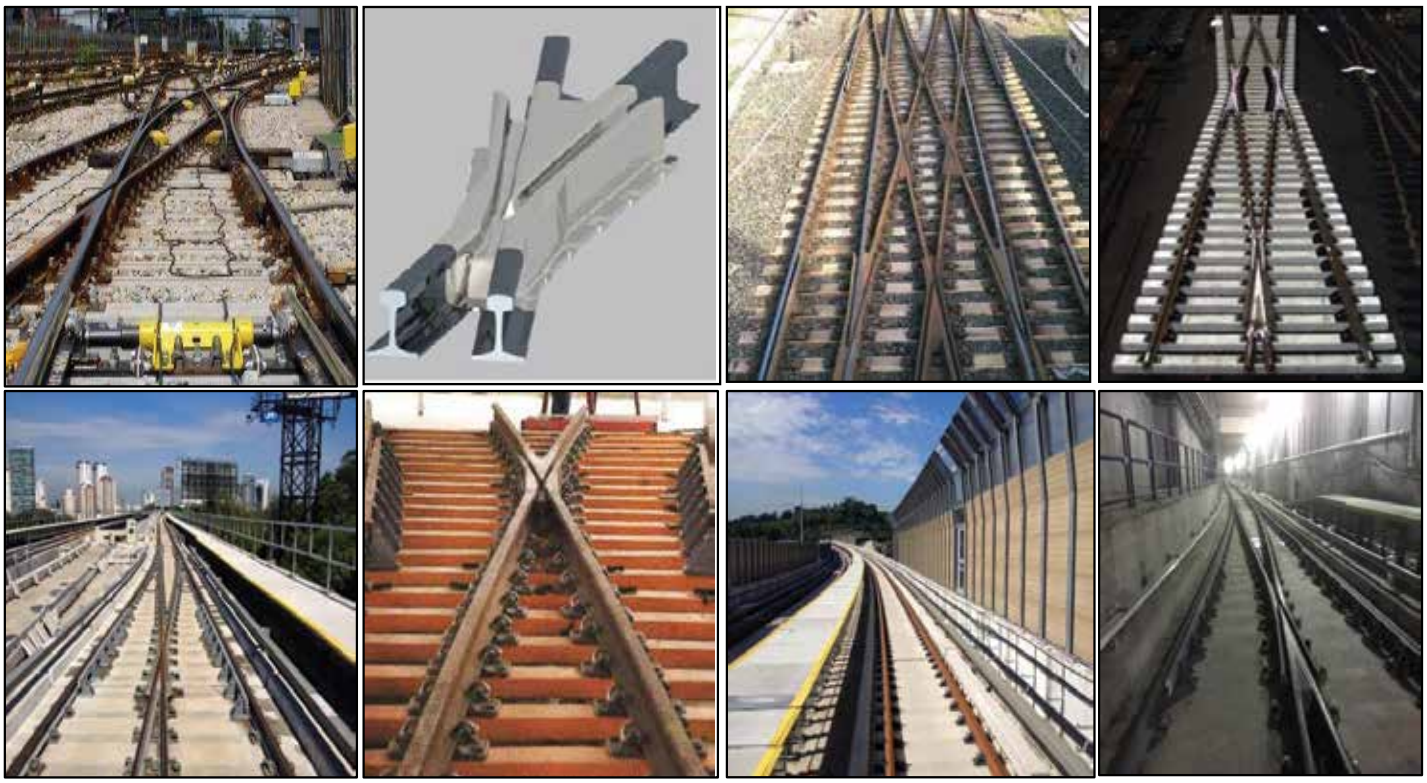

Works:
42 Milestone, GT Road, Bahalgarh
Sonepat (Haryana) – 131 001
INDIA
Tel.: +91 130 2381298 2380369
Fax: +91 130 2381698

Registered Office:
24/5, Sri Ram Road
Civil Lines, Delhi -110 054
INDIA
Tel.: +91 11 23965651
Fax: +91 11 23965653

संपादकीय

विश्वस्तरीय स्वदेशी तकनीक से आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर भारतीय रेल

भारतीय रेल परिवार की ओर से आप सभी को नव वर्ष 2021 की हार्दिक शुभकामनाएँ। कोविड-19 के कारण वर्ष 2020 इतिहास में हमेशा आपदा वर्ष के रूप में जाना जाएगा। जब सारा संसार असहाय महसूस कर रहा था, रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल की प्रेरणा से हमारे रेलकर्मियों ने इस आपदा को अवसर में बदला और अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन कर देश की प्रगति में अपना सहयोग दिया। भारतीय रेल 'आत्मनिर्भर भारत' नीति को पूरी तरह से आत्मसात् करते हुए आगे बढ़ रही है, जिसके परिणामस्वरूप अब भारतीय रेल में आयातित सामान का उपयोग केवल 1.6 प्रतिशत रह गया है। जल्द ही इसे शून्य स्तर पर लाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, ताकि हम गर्व से अपने आपको संपूर्ण स्वदेशी विश्वस्तरीय भारतीय रेल कह सकें।

'आत्मनिर्भर भारत' अभियान को आत्मसात् करते हुए भारतीय रेल ने वर्ष 2020 में कई महत्त्वपूर्ण कदम उठाए हैं। रेलवे ने अपनी प्रोक्योरमेंट पॉलिसी में आमूलचूल परिवर्तन कर स्वदेशी उत्पादों के उपयोग को बढ़ावा दिया, अर्थात् 'मेक इन इंडिया' की पॉलिसी को पूरी तरह से लागू किया गया।

वर्ष 2013-14 में भारतीय रेल में 5.6 प्रतिशत की तुलना में आयात घटकर वर्ष 2020 में 1.6 प्रतिशत रह गया है, जिसमें धुरों, पहियों तथा ट्रैक मशीन का भाग अधिक है। देश में ही धुरों का उत्पादन बढ़ाने के लिए रेल पहिया कारखाने में दूसरी इकाई स्थापित की जा रही है, जिसमें चालू वित्तीय वर्ष में उत्पादन शुरू हो जाएगा। रायबरेली में रेल इस्पात निगम के सहयोग से पहिया कारखाना लगाया जा रहा है, जिससे पहियों का आयात समाप्त हो जाएगा। ट्रैक मशीन, जो अब तक विदेशों से आयात होती थीं, अब भारत में ही बननी शुरू हो चुकी हैं। स्वदेश में बनी ट्रेनों में टक्कररोधी प्रणाली का उपयोग किया जा रहा है।

इलेक्ट्रिक लोकोमोटिव के 95 प्रतिशत से ज्यादा कलपुर्जे स्वदेशी स्रोतों से लिए जा रहे हैं। वंदे भारत के 44 रेकों के प्रोक्योरमेंट की प्रक्रिया चल रही है। डेडीकेटेड फ्रेट कॉरीडोर और बुलेट ट्रेन (अहमदाबाद-मुंबई) तथा अन्य सभी परियोजनाओं में भी स्वदेशी उत्पाद को महत्त्व दिया जा रहा है। आयातित सामान पर निर्भरता कम करने हेतु भारतीय रेल ने अपनी उत्पादन इकाइयों में उत्पादन क्षमता को बढ़ाया है। आईसीएफ कोचों के स्थान पर अब एलएचबी कोचों का निर्माण किया जा रहा है। वर्ष 2019-20 में इसके उत्पादन में 42 प्रतिशत वृद्धि दर्ज की गई है। इलेक्ट्रिक लोकोमोटिव के उत्पादन में 30 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। 6,000, 9,000 तथा 12,000 हॉर्स पावर के लोकोमोटिव अब देश में ही बन रहे हैं। 12,000 हॉर्स पावर का अत्याधुनिक लोकोमोटिव का निर्माण पीपीपी मोड पर किया गया है। आईएसबी ने इस पर केस स्टडी की जिसे हार्वर्ड बिजनेस स्कूल ने प्रकाशित किया है। अब रेलवे अत्याधुनिक 10,000 हॉर्स पावर के यात्री लोकोमोटिव तथा 9,000 हॉर्स पावर के फ्रेट लोकोमोटिव बना रही है।

भारतीय रेल उत्पादन क्षेत्र के साथ-साथ ऊर्जा क्षेत्र में भी आत्मनिर्भर हो रही है। भारतीय रेल सौर ऊर्जा से 2030 तक 33 बिलियन यूनिट से अधिक बिजली का उत्पादन करेगी। वर्तमान ऊर्जा आवश्यकता लगभग 21 बिलियन यूनिट है। अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए भारतीय रेल की वर्ष 2030 तक अपनी खाली भूमि पर 20 गीगावॉट क्षमता का सौर संयंत्र लगाने की योजना है। संपूर्ण ब्रॉडगेज का विद्युतीकरण करने का कार्य वर्ष 2023 तक पूर्ण कर लिया जाएगा, जिससे आयातित ईंधन पर निर्भरता कम होगी। साथ ही, रेलवे को प्रतिवर्ष करीबन 14,500 करोड़ की ईंधन तथा ऊर्जा बिल में बचत होगी।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 29 दिसम्बर को न्यू भाउपुर-न्यू खुर्जा खंड तथा पूर्वी समर्पित माल ढुलाई गलियारे के संचालन नियंत्रण केन्द्र का उद्घाटन किया। भारतीय रेल की यात्रा में यह एक नया अध्याय है। डेडीकेटेड फ्रेट कॉरीडोर गलियारे के पूर्ण रूप से प्रारंभ होने पर मालगाड़ियों की गति बढ़ेगी, साथ ही वर्तमान ट्रैक पर यात्री गाड़ियों की गति तथा संख्या बढ़ाई जा सकेगी।

किसान रेल हमारे किसान भाईयों के लिए आशीर्वाद साबित हो रही है। आज छोटे किसान भी अपने कृषि उत्पाद दूर स्थित बाजारों तक आसानी से तथा कम दामों पर पहुँचा कर अपनी आमदनी बढ़ा रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 28 दिसम्बर को 100वीं किसान रेल को हरी झंडी दिखाई।

आज के डिजिटल युग में ई टिकट का अपना महत्त्व है, आईआरसीटी के माध्यम से प्रतिदिन 8 लाख से अधिक आरक्षित टिकटों की बुकिंग होती है, जो कुल आरक्षित टिकटिंग का 83 प्रतिशत है। वर्तमान में आईआरसीटी के करीबन 6 करोड़ से अधिक यूजर्स हैं। हाल ही में और अधिक युजर्स फ्रेंडली ई-टिकटिंग वेबसाइट को रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल ने लांच किया।

पाठकों के स्नेह को देखते हुए पूर्व वर्ष की भांति इस वर्ष भी नववर्ष 2021 का कैलेंडर प्रिन्ट किया जा रहा है, जो आशा है कि आपके लिए काफी उपयोगी सिद्ध होगा। हमेशा की तरह आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी। ■

प्रधानमंत्री द्वारा न्यू भाउपुर-न्यू खुर्जा खंड तथा पूर्वी समर्पित मालढुलाई गलियारे के संचालन नियंत्रण केंद्र का उद्घाटन

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ की उपस्थिति में न्यू भाउपुर-न्यू खुर्जा खंड तथा पूर्वी समर्पित मालढुलाई गलियारे के संचालन नियंत्रण केन्द्र का वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से उद्घाटन किया

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 29 दिसम्बर को वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से न्यू भाउपुर-न्यू खुर्जा खंड तथा पूर्वी समर्पित मालढुलाई गरियारे के संचालन नियंत्रण केन्द्र का उद्घाटन किया। इस अवसर पर रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ उपस्थित थे।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने आधुनिक रेल अवसंरचना परियोजना के धरातल पर लागू होने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि जब खुर्जा-भाउपुर माल ढुलाई गलियारे में पहली मालगाड़ी चलती है तो हम आत्मनिर्भर भारत की दहाड़ सुन सकते हैं। इसी अवसर पर प्रयागराज स्थित पूर्वी डीएफसी ऑपरेशन कंट्रोल सेंटर का उद्घाटन करते हुए कहा कि प्रयागराज स्थित संचालन नियंत्रण केन्द्र आधुनिक नियंत्रण केंद्रों में से एक है, जो नए भारत की नई ताकत का प्रतीक है। प्रधानमंत्री ने कहा कि इंफ्रास्ट्रक्चर किसी भी राष्ट्र की ताकत का सबसे बड़ा स्रोत है।

न्यू भाउपुर-न्यू खुर्जा खंड तथा पूर्वी समर्पित मालढुलाई गलियारे के संचालन नियंत्रण केन्द्र का रेल भवन से उद्घाटन करते हुए रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल तथा अध्यक्ष एवं कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड श्री वी. के. यादव

प्रयागराज स्थित पूर्वी समर्पित मालढुलाई गलियारे के संचालन नियंत्रण केन्द्र का दृश्य

जब भारत एक बड़ी आर्थिक शक्ति बनने की राह पर तेजी से आगे बढ़ रहा है, तो सबसे अच्छी कनेक्टिविटी देश की प्राथमिकता है। सरकार पिछले छह वर्षों से आधुनिक कनेक्टिविटी के हर पहलू को ध्यान में रखते हुए काम कर रही है। सरकार राजमार्गों, रेलवे, वायुमार्ग, जलमार्ग और आई-वे के पांच पहियों पर ध्यान केंद्रित कर रही है। आज पूर्वी समर्पित मालढुलाई गलियारे के एक बड़े हिस्से का उद्घाटन इस दिशा में एक बड़ा कदम है।

प्रधानमंत्री ने इन समर्पित माल ढुलाई गलियारों की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि जनसंख्या बढ़ने के साथ अर्थव्यवस्था बढ़ी और मालढुलाई की मांग कई गुना बढ़ गई। चूंकि यात्री रेलगाड़ियां और मालगाड़ियां दोनों एक ही ट्रैक पर चलती हैं, इसलिए मालगाड़ी की गति धीमी है। मालगाड़ी की गति धीमी होने से परिवहन की लागत अधिक होगी। महंगा होने के कारण हमारे उत्पाद देश के बाजारों के साथ-साथ विदेशों में भी प्रतिस्पर्धा में हार जाते हैं। इस स्थिति को बदलने के लिए समर्पित मालढुलाई गलियारे की योजना बनाई गई।

प्रारंभ में 2 समर्पित मालढुलाई गलियारे की योजना बनाई गई थी। पूर्वी लुधियाना से दनकुनी के लिए समर्पित मालढुलाई गलियारे में कोयला खदान, थर्मल पावर प्लांट और औद्योगिक शहर हैं। इनके लिए फीडर रूट भी बनाए जा रहे हैं। जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट से दादरी तक पश्चिमी समर्पित मालढुलाई गलियारा है। इस गलियारे में, मुंद्रा, कांडला, पिपावाव, डावरी और हजीरा जैसे बंदरगाहों को फीडिंग मार्गों के माध्यम से जोड़ा जाएगा। इन दोनों मालढुलाई गलियारे के आसपास दिल्ली-मुंबई और अमृतसर-कोलकाता का औद्योगिक गलियारा विकसित किया जा रहा है। इसी तरह उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम गलियारे की भी योजना बनाई जा रही है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि इस तरह के समर्पित मालढुलाई गलियारों के बल पर यात्री रेलगाड़ियों के परिचालन में देरी की समस्याओं का समाधान किया जाएगा। मालगाड़ी की इस गति के कारण मालढुलाई की मात्रा को दोगुना करना संभव होगा। जब मालगाड़ियां समय पर पहुंचेंगी तो हमारी लॉजिस्टिक्स लागत कम होगी और हमारा माल सस्ता होगा, जो हमारे निर्यातों के लिए फायदेमंद होगा। इससे बेहतर माहौल बनेगा, कारोबारी सुगमता बढ़ेगी तथा भारत निवेश के लिए एक आकर्षक स्थान बन जाएगा एवं स्वरोजगार के अनेक नए अवसर भी पैदा होंगे।

प्रधानमंत्री ने कहा कि उद्योग, व्यवसायी, किसान या उपभोक्ता, हर कोई इस गलियारे से लाभान्वित होने जा रहा है। मालढुलाई गलियारा पूर्वी भारत के विकास को बढ़ावा देगा, जो औद्योगिक रूप से पीछे रह गया है। लगभग 60 प्रतिशत गलियारा यूपी में पड़ता है। यह यूपी की ओर बहुत सारे उद्योगों को आकर्षित करेगा। इस समर्पित गलियारे से किसान रेल को फायदा होगा। किसान अपनी उपज रेल द्वारा देश के किसी भी बड़े बाजार में सुरक्षित व कम कीमत पर भेज सकते हैं। उत्तर प्रदेश में किसान रेल के कारण बहुत सारे भंडारण और कोल्ड स्टोरेज की सुविधा हो गई है।

उन्होंने कहा कि वर्ष 2014 के बाद, निरंतर निगरानी और हितधारकों के साथ बैठक के परिणामस्वरूप लगभग 1,100 किलोमीटर का काम अगले कुछ महीनों में पूरा हो गया। अलग रेल बजट के उन्मूलन के साथ इसमें बदलाव किया गया था और रेल ट्रैक पर निवेश किया गया था। उन्होंने कहा कि सरकार ने रेल नेटवर्क के चौड़ीकरण तथा विद्युतीकरण एवं मानव-रहित रेल क्रॉसिंग को खत्म करने पर ध्यान केंद्रित किया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि रेलवे में हर स्तर पर सुधार किए गए हैं, जैसे - स्वच्छता, बेहतर भोजन, पेय एवं अन्य सुविधाएं आदि। उन्होंने कहा कि इसी प्रकार रेलवे से संबंधित विनिर्माण के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता पाना एक बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने कहा कि भारत अब आधुनिक रेलगाड़ियों का निर्माण करने के साथ-साथ उनका निर्यात भी कर रहा है। वाराणसी विद्युत इंजनों के निर्माण के लिए एक प्रमुख केंद्र बन रहा है। रायबरेली में निर्मित रेल कोच अब विदेशों में निर्यात किए जाते हैं। ■

प्रधानमंत्री ने 100वीं किसान रेल को झंडी दिखाकर रवाना किया

केंद्रीय रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल व कृषि मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर की उपस्थिति में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से संगोला, महाराष्ट्र से शालीमार, पश्चिम बंगाल के बीच 100वीं किसान रेल को झंडी दिखाकर रवाना करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 28 दिसम्बर को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से संगोला, महाराष्ट्र से शालीमार, पश्चिम बंगाल के बीच 100वीं किसान रेल को झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर केंद्रीय कृषि मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर और रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने कहा कि किसान रेल सेवा देश के किसानों की आय बढ़ाने की दिशा में एक बड़ा कदम है। उन्होंने कोविड-19 महामारी के बीच 4 महीनों में 100वीं किसान रेल चलाए जाने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह सेवा कृषि से जुड़ी अर्थव्यवस्था में बड़ा बदलाव लेकर आएगी और देश की कोल्ड सप्लाई चेन को सशक्त करेगी। उन्होंने कहा कि किसान रेल के माध्यम से कृषि उत्पादों की ढुलाई में कोई न्यूनतम सीमा तय नहीं की गई है। यहां तक कि इससे छोटे-से-छोटा उत्पादक भी कम लागत में बड़े बाजारों तक उपयुक्त ढंग से पहुंच सकता है।

किसान अब अपने उत्पाद न सिर्फ अपने राज्य में बेच सकते हैं बल्कि किसान रेल और कृषि उड़ान सेवाओं के माध्यम से भी अपने उत्पादों की बिक्री कर सकते हैं, जिनकी कृषि क्षेत्र में बड़ी भूमिका होगी। उन्होंने आगे कहा कि किसान रेल सचल शीत गृह (मोबाइल कोल्ड स्टोरेज) की व्यवस्था फल, सब्जी, दूध, मछली जैसे जल्द खराब होने वाले उत्पादों को बाजारों तक पहुंचाती है, वह भी पूर्ण सुरक्षा के साथ। प्रधानमंत्री ने कहा कि यूं तो भारत के पास आजादी के पहले से भी रेलवे का एक बड़ा नेटवर्क मौजूद है, कोल्ड स्टोरेज तकनीक भी पहले से थी लेकिन किसान रेल के माध्यम से इस समय इसे सशक्त बनाया गया है।

किसान रेल जैसी सुविधाओं ने पश्चिम बंगाल के लाखों किसानों को एक बड़ी सुविधा उपलब्ध कराई है। यह सुविधा किसानों के साथ-साथ स्थानीय छोटे व्यवसायियों के लिए भी उपलब्ध है।

जल्द खराब होने वाले कृषि उत्पादों के भंडारण केंद्र रेलवे स्टेशनों के आसपास निर्मित किए जा रहे हैं, जहां किसान अपने उत्पादों का संग्रहण कर सकते हैं। यह प्रयास ज्यादा-से-ज्यादा संख्या में फलों और सब्जियों को ग्राहकों तक पहुंचाने के क्रम में किया जा रहा है। आवश्यकता से अधिक उत्पाद होने की स्थिति में जूस, आचार, चिप्स इत्यादि को छोटे निर्माताओं तक पहुंचाया जाना चाहिए।

प्रधानमंत्री ने रेखांकित किया कि सरकार की प्राथमिकता संग्रहण से जुड़े ढांचे के निर्माण और कृषि उत्पादों के मूल्य संवर्धन संबंधित प्रसंस्करण उद्योग हैं। मेगा फूड पार्क, कोल्ड चेन बुनियादी ढांचा और कृषि प्रसंस्करण क्लस्टर योजनाओं के अंतर्गत 6500 परियोजनाओं को प्रधानमंत्री कृषि संपदा योजना के तहत स्वीकृति दे दी गई है। 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' के तहत सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के लिए 10,000 करोड़ रुपये की राशि को मंजूरी प्रदान की गई है।

इस अवसर पर रेलवे बोर्ड में आयोजित कार्यक्रम में रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल तथा कृषि मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर उपस्थित थे। श्री गोयल ने किसानों के लिए भारतीय रेल द्वारा उठाए गए कदमों की तथा श्री तोमर ने कृषि मंत्रालय के कार्यों की विस्तृत जानकारी दी। ■

भारत और बांग्लादेश के प्रधानमंत्रियों ने किया हल्दीबाड़ी-चिल्हाटी रेल लिंक का उद्घाटन

हल्दीबाड़ी और बांग्लादेश के चिल्हाटी के बीच एक रेलवे लिंक का संयुक्त रूप से उद्घाटन करते हुए भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और बांग्लादेश की प्रधानमंत्री सुश्री शेख हसीना

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और बांग्लादेश की प्रधानमंत्री सुश्री शेख हसीना ने 17 दिसंबर, 2020 को आभासी द्विपक्षीय शिखर सम्मेलन के दौरान भारत के हल्दीबाड़ी और बांग्लादेश के चिल्हाटी के बीच एक रेलवे लिंक का संयुक्त रूप से उद्घाटन किया। इसे भारत और बांग्लादेश के लोगों के बीच गहन संपर्क को बढ़ावा देने की दिशा में एक ऐतिहासिक घटना के रूप में देखा जा रहा है।

बाद में बांग्लादेश के रेल मंत्री मोहम्मद नूरुल इस्लाम सुजान की ओर से एक मालगाड़ी को चिल्हाटी स्टेशन से हरी झंडी दिखा कर रवाना किया गया। इस गाड़ी ने अंतरराष्ट्रीय सीमा से गुजरते हुए भारत में प्रवेश किया और इस तरह दोनों देशों में रहने वाले लोगों के लिए एक नए युग की शुरुआत हुई। भारत और बांग्लादेश के बीच रेलवे नेटवर्क ज्यादातर ब्रिटिश युग के समय के भारतीय रेल से विरासत के रूप में मिला है। वर्ष 1947 में विभाजन के बाद भारत और तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान (1965 तक), जो अब बांग्लादेश बन चुका है, के बीच 7 रेल संपर्क लाइनें मौजूद थीं। इस समय भारत और बांग्लादेश के बीच 4 परिचालित रेल संपर्क लाइनें हैं जिनमें पेट्रापोल (भारत)-बेनापोल (बांग्लादेश), गेदे (भारत)-दर्शन (बांग्लादेश), सिंघाबाद (भारत)-रोहनापुर (बांग्लादेश), राधिकापुर (भारत)-बिरोल (बांग्लादेश) हैं। इसके साथ ही अब हल्दीबाड़ी-चिल्हाटी रेल लिंक को भी शुरू कर दिया गया है जो दोनों देशों के बीच पांचवीं रेल संपर्क सेवा बन गई है।

हल्दीबाड़ी-चिल्हाटी रेल संपर्क सेवा 1965 तक चालू थी। यह विभाजन के दौरान कोलकाता से सिलीगुड़ी तक ब्रॉड गेज मुख्य मार्ग का हिस्सा थी। विभाजन के बाद भी असम और उत्तरी बंगाल जाने वाली ट्रेनें तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान क्षेत्र से होकर गुजरती रहीं। उदाहरण के लिए, सियालदह से सिलीगुड़ी के लिए एक ट्रेन दर्शन से पूर्वी पाकिस्तान क्षेत्र में प्रवेश करती थी और हल्दीबाड़ी-चिल्हाटी संपर्क मार्ग का उपयोग करके बाहर निकल जाती थी। हालांकि सन् 1965 के युद्ध ने भारत और तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान के बीच सभी रेलवे संपर्क सेवाओं को बुरी तरह से काट दिया गया। इसलिए भारत के पूर्वी सेक्टर में रेलवे का विभाजन सन् 1965 में हुआ। इसलिए इस रेल लिंक को फिर से खोलने के महत्त्व को समझा जा सकता है।

- रेल लिंक का उद्देश्य क्षेत्र में लोगों के बीच संपर्क और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ाने में मदद करना है

मई 2015 में दिल्ली में आयोजित अंतर-सरकारी रेलवे बैठक में जारी संयुक्त घोषणा के अनुरूप रेलवे बोर्ड ने इस पूर्ववर्ती रेल लिंक को फिर से खोलने के लिए 2016-17 में हल्दीबाड़ी स्टेशन से चिल्हाटी बांग्लादेश तक 82.72 करोड़ रुपए की लागत से एक नई ब्रॉड गेज लाइन [लंबाई 3.50 किमी] के निर्माण के लिए मंजूरी दे दी। बांग्लादेश ने भी इस दिशा में कदम बढ़ाते हुए हल्दीबाड़ी स्टेशन से अंतरराष्ट्रीय सीमा तक पटरियों की मरम्मत और उन्हें नए सिरे से बहाल करना शुरू कर दिया। बांग्लादेश की तरफ चिल्हाटी-परबतीपुर-संथार-दर्शन मौजूदा लाइन पहले से ही ब्रॉड गेज है।

आज से खोल दिया गया हल्दीबाड़ी-चिल्हाटी रेल मार्ग असम और पश्चिम बंगाल से बांग्लादेश में पारगमन के लिए फायदेमंद होगा। यह नई खोली गई रेल संपर्क लाइन क्षेत्रीय व्यापार को बढ़ावा देने और क्षेत्र के आर्थिक और सामाजिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए मुख्य बंदरगाहों, शुष्क बंदरगाहों और जमीनी भौगोलिक सीमाओं तक रेल नेटवर्क की पहुंच को बढ़ाएगी। इस रेल संपर्क सेवा से दोनों देशों के बीच यात्री और माल परिवहन सेवाएं सुगम हो जाएंगी। इस नई संपर्क सेवा से बांग्लादेश से पर्यटक दार्जिलिंग, सिक्किम, डुआर्स के अलावा नेपाल, भूटान आदि जैसे देशों में आसानी से जा सकेंगे। इसके साथ ही दक्षिण एशियाई देशों की आर्थिक गतिविधियों को भी लाभ मिलेगा। ■

रेल टिकटों की ऑनलाइन बुकिंग हेतु उन्नत

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'डिजिटल इंडिया' विजन के अनुरूप भारतीय रेल ने ऑनलाइन आईआरसीटीसी रेल कनेक्ट मोबाइल ऐप का नवीनीकरण और उन्नयन किया है, जिसका रेल

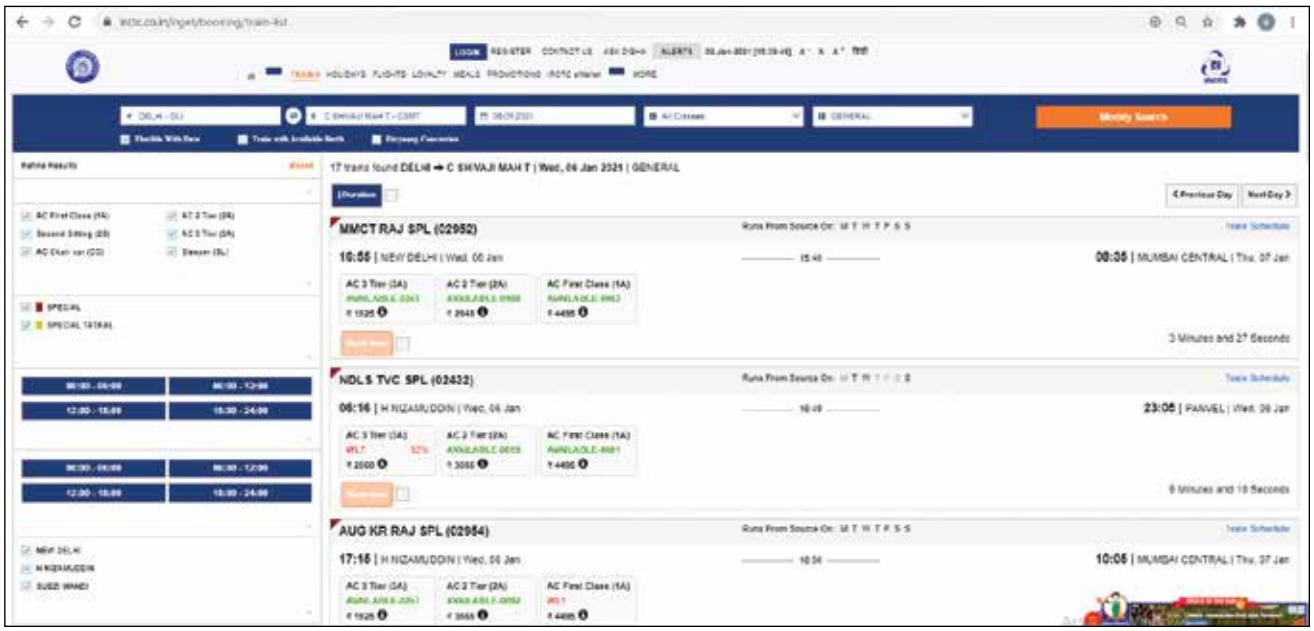

> "रेलवे राष्ट्र की सेवा के लिए प्रतिबद्ध है और रेल यात्रा के अनुभव को और बेहतर बनाने के लिए अपनी सेवाओं को बढ़ाने के लिए लगातार काम कर रही है। ऑनलाइन रेलवे टिकटों की बुकिंग के लिए यह अपग्रेडेड ई-टिकटिंग प्लेटफॉर्म, यात्री सुविधाओं को बढ़ाएगा।" उन्होंने कहा कि आईआरसीटीसी को वेबसाइट में सुधार करने के लिए काम करना जारी रखना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यह वेबसाइट डिजिटल इंडिया मिशन और प्रधानमंत्री के विजन के अनुसार दुनिया में अव्वल हो।"
>
> **- श्री पीयूष गोयल, रेल मंत्री**

उच्च स्तर की विशेषताएं

उन्नत ई-टिकटिंग वेबसाइट और मोबाइल ऐप का उद्देश्य अन्य ऑनलाइन यात्रा और टिकटिंग वेबसाइटों के बीच उपयोगकर्ताओं को बेहतरीन अनुभव प्रदान करना है। इनका स्तर अन्य टिकटिंग वेबसाइटों द्वारा वर्तमान में दी जा रही सुविधाओं की तुलना में अधिक उन्नत होगा। अधिकांश वेबसाइटों में, स्टेशनों की जानकारी अभी भी वर्णमाला के क्रम में है और टिकटों की उपलब्धता की स्थिति या तो है ही नहीं या काफी पुरानी है। इसके अलावा, इस वेबसाइट में ठहरने और भोजन आदि की बुकिंग की सुविधा को टिकट बुकिंग के साथ एकीकृत किया जाना अपने आप में बेजोड़ है।

रेल टिकटों की बुकिंग के लिए ई-टिकटिंग की सुविधा

यह उन्नत ई-टिकटिंग प्रणाली 2014 में शुरू की गई थी। इसका मकसद आईआरसीटीसी के माध्यम से टिकट बुकिंग सेवा को आसान बनाना है। उन्नयन उपभोक्ताओं के अनुभवों को ध्यान में रखते हुए इस वेबसाइट और ऐप को उन्नत बनाकर रेल यात्रियों को और अधिक सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं।

उन्नत वेबसाइट की मुख्य विशेषताएं

- इसमें उपयोगकर्ता के लॉगिन के साथ सभी उपलब्ध सुविधाओं जैसे भोजन, रिटायरिंग रूम और होटल बुकिंग की सुविधा को टिकट बुकिंग के साथ एकीकृत किया गया है।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से यात्रियों को स्टेशन में प्रवेश करने के साथ सभी तरह की सूचनाएं दिए जाने की व्यवस्था की जाएगी। इससे उन्हें यात्रा के पहले की परेशानियों से बचने तथा टिकट बुक करने में मदद मिलेगी।
- वेबसाइट और ऐप के जरिए यात्रियों को टिकट रिफंड की सारी जानकारी भी उनके लॉग-इन खाते में एक जगह मिल सकेगी। इससे पहले यह सुविधा नहीं थी।

6 करोड़ से ज्यादा ई-टिकटिंग वेबसाइट उपयोगकर्ता

8 लाख से अधिक टिकट प्रतिदिन बुक किए जाते हैं

83 प्रतिशत से अधिक कुल आरक्षित रेल टिकटों का

ई-टिकटिंग वेबसाइट और मोबाइल ऐप लॉन्च

बुकिंग के लिए इस्तेमाल की जाने वाली अपनी ई-टिकटिंग वेबसाइट www.irctc.co.in और मंत्री श्री पीयूष गोयल ने 31 दिसंबर, 2020 को शुभारंभ कर यात्रियों को नए साल का तोहफा दिया।

उन्नत ई-टिकटिंग वेबसाइट www.irctc.co.in *और आईआरसीटीसी रेल कनेक्ट मोबाइल ऐप का शुभारंभ करते हुए रेल मंत्री श्री पीयूष गोयल, साथ में मंच पर आसीन अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड श्री विनोद कुमार यादव*

- नियमित और मनपसंद यात्रा के लिए सभी आवश्यक जानकारियां देकर टिकट बुक की जा सकती है।
- रेलगाड़ियों की जानकारी और चयन की प्रक्रिया को सरल बनाते हुए रेलगाड़ियों और उनमें उपलब्ध श्रेणियों के किराए को एक ही पेज पर दिया गया है। पेज स्क्रॉल करके मनपसंद रेलगाड़ी और श्रेणी की टिकट बुक की जा सकती है। इससे पहले यह सुविधा नहीं थी और हर रेलगाड़ी के लिए अलग से उसकी जानकारी लेनी पड़ती थी।
- वेबसाइट के साथ एक 'कैशे अप्रणाली' की शुरुआत की गई है जिसके माध्यम से वेट लिस्ट टिकटों के कन्फर्म होने की जानकारी मिलेगी। इससे वेटलिस्ट टिकटों के कन्फर्म हो जाने की जानकारी उपलब्ध कराने में देरी नहीं होगी। इससे पहले यह सुविधा नहीं थी।
- वेबपेज पर आरक्षित टिकटों की अन्य दिनों में उपलब्धता की जानकारी स्वत: आ जाएगी। कम्प्यूटर के बारे में कम जानकारी रखने वालों को भी बुकिंग प्रक्रिया आसानी से समझ में आ सकेगी।
- बुक की गई यात्रा का विवरण भुगतान वाले पेज पर स्वत: दिखेगा ताकि उपयोगकर्ता इसमें किसी तरह की गलती को तुरंत ठीक कर सके। पीआरएस केन्द्र जाकर भी गलती ठीक करा सकते हैं।
- वेबसाइट में साइबर सुरक्षा हेतु भी पर्याप्त व्यवस्था की गई है।

आईआरसीटीसी और सीआरआईएस (क्रिस) उन जोड़ीदार स्टेशनों के लिए वैकल्पिक मार्गों पर ट्रेनों को जोड़ने के लिए स्मार्ट बुकिंग सुविधा शुरू करने के लिए काम कर रहे हैं जिनमें सीधी ट्रेन सेवा नहीं हैं। उन्नत वेबसाइट और नए ऐप को जारी करते हुए रेल मंत्री ने कोरोना से उत्पन्न चुनौतियों से निपटने और रेलवे को भविष्य के लिए तैयार करने में रेल परिवार के योगदान की सराहना की। ■

ऊधमपुर-श्रीनगर-बारामुला राष्ट्रीय रेल लिंक परियोजना

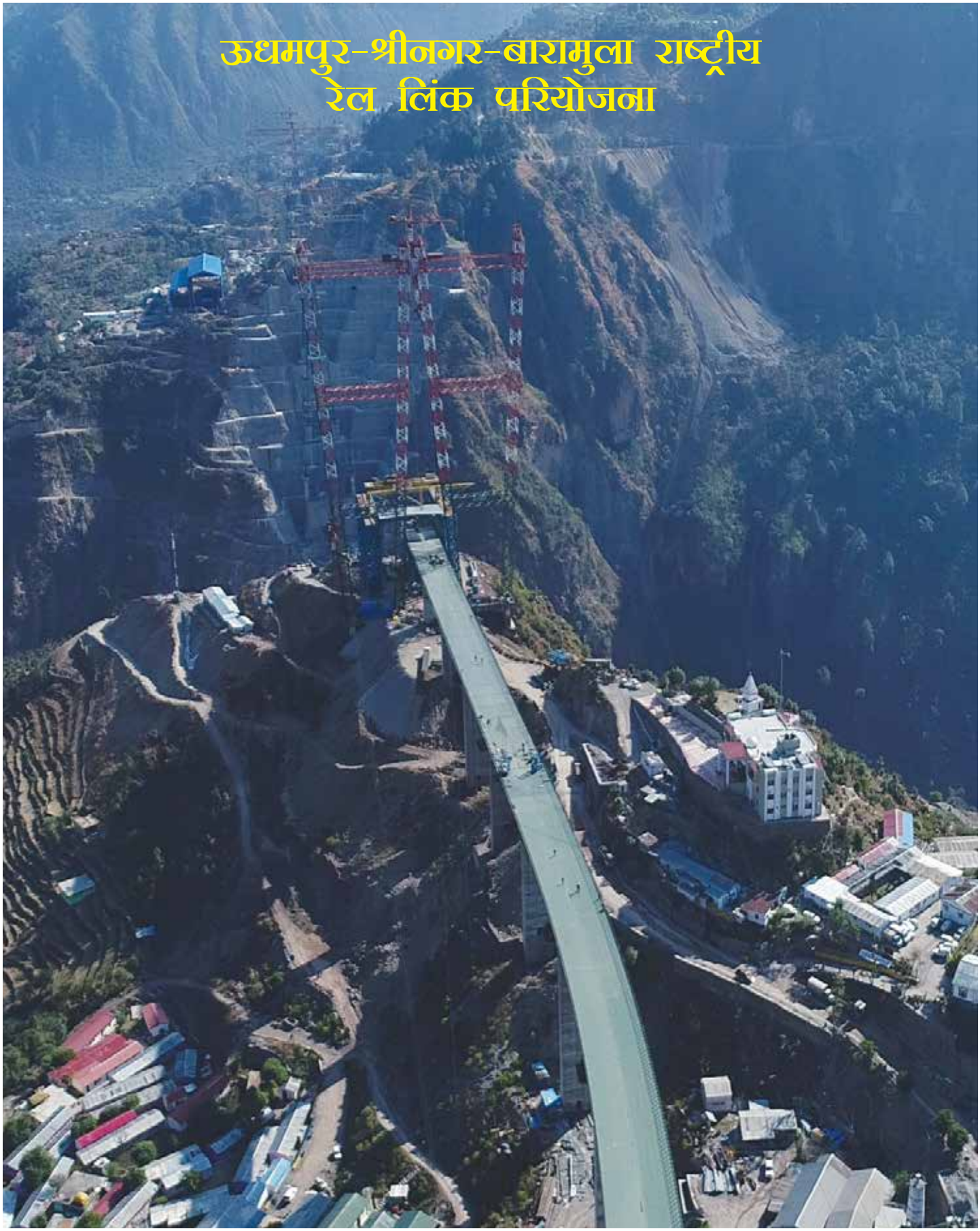

रेल मंत्री ने जम्मू-कश्मीर में रेलवे की राष्ट्रीय परियोजना के कार्य में प्रगति की समीक्षा की

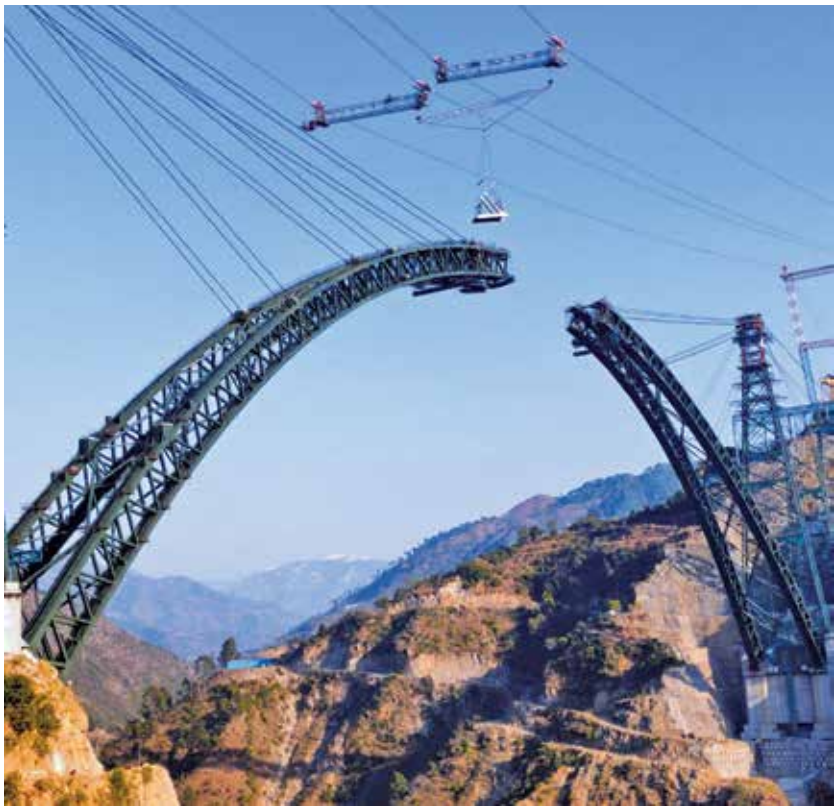

रेल, वाणिज्य एवं उद्योग और उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री श्री पीयूष गोयल ने जम्मू और कश्मीर में चल रही राष्ट्रीय परियोजना ऊधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल लिंक (यूएसबीआरएल) की प्रगति की समीक्षा की। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से आयोजित बैठक में अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड श्री विनोद कुमार यादव और उत्तर रेलवे के महाप्रबन्धक श्री आशुतोष गंगल भी उपस्थित थे। यूएसबीआरएल परियोजना के मुख्य प्रशासनिक/निर्माण अधिकारी श्री विजय शर्मा ने श्री गोयल को कटरा-बनिहाल के बीच परियोजना के अंतिम चरण में हो रहे काम की वर्तमान स्थिति से अवगत कराया।

रेल मंत्री ने परियोजना की प्रगति पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि जम्मू और कश्मीर के लोगों की आकांक्षाओं को इस परियोजना से पूरा करना होगा, जिससे इस क्षेत्र को वर्ष भर देश के बाकी हिस्सों से जुड़े रहने के लिए एक अच्छी परिवहन प्रणाली मिल सके। उन्होंने परियोजना पर काम कर रहे इंजीनियरों से मिशन मोड पर परियोजना के शेष हिस्से को तेज गति से पूरा करने का आह्वान किया। उन्होंने सामग्री खरीद और अनुमति लेने की प्रक्रियाओं को समय पर पूरा करने के निर्देश दिए, जिससे रेल लाइन के निर्माण में देरी न हो।

उत्तर रेलवे के महाप्रबन्धक ने जानकारी दी की रामबन और रियासी जिले, जहां परियोजना निर्माणाधीन है, वहां कोविड के चलते इलाके को रेड और ऑरेंज जोन के रूप में घोषित किया गया था, वहां कोविड-19 की मानक संचालन प्रक्रिया के साथ परियोजना का काम जारी रहा। कार्यस्थल पर कामगारों के लिए शिविर और आइसोलेशन केंद्र उपलब्ध कराए गए।

यूएसबीआरएल भारतीय रेल द्वारा कश्मीर क्षेत्र को हर मौसम में देश के बाकी हिस्सों से जोड़ने के उद्देश्य से हिमालय के माध्यम से ब्रॉड-गेज रेलवे लाइन के निर्माण के लिए एक राष्ट्रीय परियोजना है। यह परियोजना देश के सबसे उत्तरी उच्च पर्वतीय क्षेत्र में सभी मौसमों में आरामदायक, सुविधाजनक और लागत प्रभावी जन परिवहन प्रणाली के रूप में क्षेत्र के समग्र विकास के लिए उत्प्रेरक होगी।

परियोजना के पहले तीन चरणों का निर्माण पूरा हो चुका है और कश्मीर घाटी में बारामूला- बनिहाल और जम्मू-ऊधमपुर-कटरा के बीच ट्रेनों के परिचालन के लिए लाइन शुरू की जा चुकी है। 111 किलोमीटर के खंड कटरा-बनिहाल में, इसके भूविज्ञान और गहरे घाटियों से भरे व्यापक नदी तंत्र के कारण इसका कठिन और जोखिम से भरे हिस्से पर काम चल रहा है। इस खंड में कई अनूठे पुल और सुरंगें हैं। इस खंड में अधिकांश रेल ट्रैक सुरंगों में या पुलों पर बने हैं। इस दुर्गम क्षेत्र में एक प्रभावी भूतल परिवहन प्रणाली की अनुपस्थिति में, रेलवे को निर्माण स्थलों तक पहुंचने के लिए पहले 205 किलोमीटर का सड़क मार्ग बिछाना पड़ा था।

तीन एजेंसियां- इरकॉन, केआरसीएल और उत्तर रेलवे अपने व्यापक अनुभव के साथ इस परियोजना की रेल लाइनों के निर्माण कार्य में शामिल हैं। कई अंतरराष्ट्रीय एजेंसियां और प्रमुख भारतीय संस्थान जैसे भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रुड़की, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली, रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन और भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण इस परियोजना के लिये योजना और कार्यान्वयन में विशेषज्ञता प्रदान कर रहे हैं।

वर्तमान में विश्व के सबसे ऊंचे रेलवे पुल चेनाब ब्रिज के आर्क का 95 प्रतिशत कार्य पूरा हो गया है जबकि अंजी पुल पर केबल-स्टे रेल ब्रिज के निर्माण का काम तेजी से पूरा किया जा रहा है। कुल 97.64 किलोमीटर की मुख्य सुरंग में 81.21 किलोमीटर और 60.5 किलोमीटर में से 53.50 किलोमीटर बची सुरंग का काम पूरा हो चुका है। 12 बड़े और 10 छोटे पुल बनकर तैयार हो चुके हैं। शेष 12 बड़े पुलों और एक छोटे पुल का निर्माण वर्ष 2021-22 तक पूरा किया जाना है। ■

ऊधमपुर-श्रीनगर-बारामुला राष्ट्रीय रेल लिंक परियोजना की एक झलक

- **ऊधमपुर-श्रीनगर-बारामुला रेल लिंक परियोजना के 272 किलोमीटर में से 161 किलोमीटर का कार्य पूरा हो चुका है**
- चरणबद्ध रूप में शुरू किया गया

  - पहला चरण (पूरा कर लिया गया है)
    - ★ काजीगुण्ड-बारामुला - 118 किलोमीटर **(चालू हो गया है)**
    - ★ बनिहाल-काजीगुण्ड - 18 किलोमीटर **(चालू हो गया है)**
  - दूसरा चरण (पूरा कर लिया गया है)
    - ★ ऊधमपुर-कटड़ा- 25 किलोमीटर **(चालू हो गया है)**
  - तीसरा चरण **(प्रगति पर है)**
    - ★ **कटड़ा से बनिहाल 111 किलोमीटर**

प्रगति का विवरण

क्रम संख्या	गतिविधियां	स्कोप	30.11.2020 तक शुरू	01.12.20 को शेष
1ए	प्रमुख सुरंगें	97.64 किलोमीटर	81.21 किलोमीटर	16.43 किलोमीटर
1बी	एस्केप सुरंगें	66.40 किलोमीटर	53.51 किलोमीटर	12.89 किलोमीटर
2ए	बड़े पुल	26	11	15
बी	छोटे पुल	11	10	1
3	पहुँच मार्ग	205 किलोमीटर	205 किलोमीटर	कोई नहीं

मुख्य विशेषताएं

- ***देश की सबसे लम्बी (12.75 किलोमीटर) रेल सुरंग*** - (सुरंग टी-45 निर्माणाधीन)।
- देश की सबसे लम्बी (11.215 किलोमीटर) पीर पंजाल सुरंग - ***पहले ही पूरी होकर शुरू हो गई है।***
- कटड़ा-बनिहाल रेल सेक्शन के 111 किलोमीटर लम्बे रेल मार्ग का **97 किलोमीटर (87%) सुरंग मार्ग है।**
- **67 किलोमीटर** की एस्केप सुरंगे भी तैयार की जा रही हैं।
- अधिकतर स्टेशन या तो सुरंगों अथवा पुलों पर अथवा दोनों पर स्थित हैं।
- नियोजन और निर्माण के लिए दुनिया की **सबसे उन्नत और आधुनिक तकनीक का** इस्तेमाल किया जा रहा है।
- इस परियोजना के अंतर्गत **एफिल टॉवर से भी ऊँचा दुनिया का सबसे ऊँचा पुल, जिसकी ऊँचाई 359 मीटर है,** का निर्माण शामिल है।
- **इस परियोजना में भारतीय रेल का पहला केबल स्टेड पुल भी तैयार किया जा रहा है।**
- भारतीय रेल पर पहली बार कटड़ा-बनिहाल के बीच सुरंगों में कर्षण विद्युत आपूर्ति के लिए रिजिड ओवर हेड सिस्टम लगाया जाएगा।
- 205 किलोमीटर से अधिक के पहुँच मार्गों के नेटवर्क का निर्माण। अपने आप में कठिन और चुनौतीपूर्ण परियोजना।
- **पूरी हो जाने पर यह 21वीं सदी की बेहतरीन इंजीनियरिंग परियोजना होगी।**

सुरंग संख्या 49 : सबसे लंबी रेल सुरंग

- 12.75 किमी की सबसे लंबी सुरंग निर्माणाधीन है
- इसे न्यू ऑस्ट्रियन टनलिंग पद्धति द्वारा तैयार किया जा रहा है
- यह सुरंग सुम्बर स्टेशन यार्ड और अरपिंचला स्टेशन यार्ड के बीच स्थित है
- 12.75 किमी में से 10.5 किमी सुरंग खुदाई का कार्य पूरा हो चुका है

सुरंग संख्या 50 : समायोजित स्टेशन यार्ड

- इस चौड़े मुँह वाली सुरंग में अरपिंचला यार्ड के दो ट्रैक होंगे
- यह सुरंग 11.80 मीटर चौड़ी और 7.52 मीटर ऊँची होगी
- इस सुरंग का आकार घोड़े की नाल जैसा होगा

ऊधमपुर-बारामुला रेल लिंक परियोजना का अलाइनमेंट

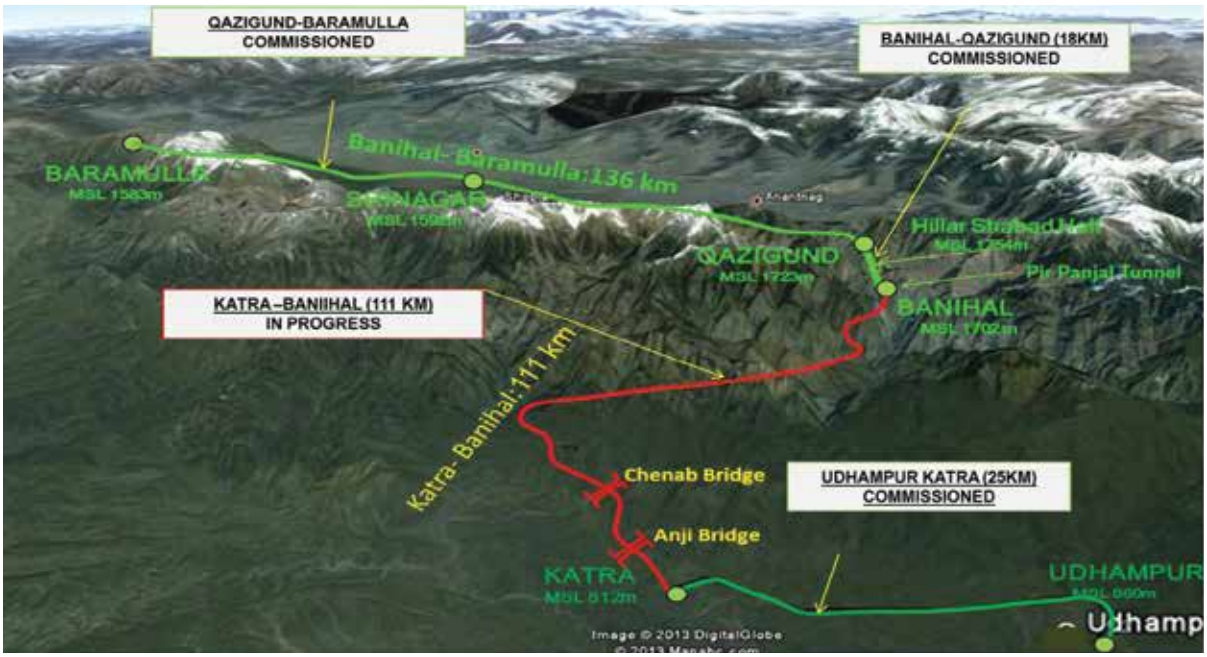

उधमपुर-श्रीनगर-बारामुला राष्ट्रीय रेल लिंक परियोजना की एक झलक

चेनाब पुल : दुनिया का सबसे ऊँचा रेल पुल

- नदी की तलहटी से 359 मीटर की ऊँचाई पर बनने वाला दुनिया का सबसे ऊँचा रेल पुल
- मेहराब की लम्बाई 467 मीटर है जोकि भारत में सबसे लम्बा मेहराब है
- पुल की कुल लम्बाई 1.315 किलोमीटर है
- 2.74 डिग्री के घुमाव के साथ एक छोर से पुश करके प्लेट गर्डरों को देश में पहली बार सफलतापूर्वक लांच किया गया है (वक्र रेखीय भाग की लम्बाई 268 मीटर है)

अंजी पुल : भारतीय रेल का पहला केबल स्टेड पुल

- चेनाब नदी की सहायक नदी पर अंजी खड्ड के ऊपर भारतीय रेल का पहला केबल स्टेड पुल निर्मित किया जा रहा है ।
- पुल के अंतर्गत 473.25 मीटर की लम्बाई वाला मुख्य पुल और 120 मीटर की लम्बाई वाला छोटा पुल तथा 94.25 मीटर की लम्बाई वाला सेंट्रल एम्बैंकमेंट शामिल है
- एक खम्बा वेल कैप के ऊपर 193 मीटर ऊँचा और नदी के तलहटी से 331 मीटर ऊँचा होगा
- मुख्य खम्बे के निर्माण का कार्य प्रगति पर है और इसका 115 मीटर का निर्माण पूरा हो गया है

पुल संख्या 39 : पुल पर बना रियासी स्टेशन यार्ड

- सबसे ऊँचा खम्बा अर्थात् पी-5 105 मीटर ऊँचा है
- स्पैन आरेंजमेंट:1X53.15+6X64.0+1X53.15 मीटर = 490.30 मीटर
- पुल में दो तरह के फाउंडेशन हैं अर्थात् हाईब्रिड पाइल फाउंडेशन ओर ओपन फाउंडेशन
- सुपर स्ट्रक्चर का प्रकार: कम्पोजिट कंटिनुएस प्लेट गर्डर
- सुपर स्ट्रक्चर की लांचिंग का कार्य प्रगति पर है और
- 127 मीटर की लांचिंग का कार्य पूरा हो चुका है।

रेलवे को पार्सल व्यवसाय की वृद्धि पर ध्यान देने की जरूरत है : रेल मंत्री

रेल मंत्री पीयूष गोयल ने रेलवे के पार्सल व्यवसाय की समीक्षा हेतु एक बैठक की, जिसमें बोर्ड के सदस्यों के अलावा रेलवे बोर्ड और क्रिस के अधिकारी उपस्थित थे।

पिछले कुछ महीनों के दौरान भारतीय रेल द्वारा पार्सल सेवाओं की ओर अधिक व्यापार आकर्षित करने के लिए कई पहल की हैं। उनमें से कुछ शामिल हैं :

- कृषि-उत्पाद आवागमन हेतु किसान रेल ट्रेनों का संचालन
- उन क्षेत्रों में, जहां पार्सल वैन और पार्सल ट्रेनें खाली लौटती हैं, उसके लिए छूट प्रदान करना
- एक ट्रेन में 24 पार्सल वैनों में लोडिंग पर छूट
- सभी गुड्स शेडों को खोलना
- पार्सल यातायात के लिए निजी माल भाड़ा टर्मिनल और बगल की निजी रेल लाइन
- बांग्लादेश को निर्यात हेतु पार्सल ट्रेन की शुरुआत करना

इनके अतिरिक्त, भारतीय रेल विभिन्न पक्षों के लिए आसानी से पार्सल खेपों को संभालने के लिए डेडिकेटेड पार्सल टर्मिनल्स को विकसित करने की योजना बना रही है और संगोला (मध्य रेलवे), कचेगुडा (दक्षिण मध्य रेलवे), कोयम्बटूर (दक्षिणी रेलवे) और कांकरिया (पश्चिमी रेलवे) की पहचान पहले ही पायलट परियोजना के लिए की जा चुकी है।

रेल मंत्री ने कहा कि पार्सल सेवाओं को ग्राहकों के लिए अधिक सहज बनाने से छोटे व्यापारियों और कारोबारियों को इसका सीधा लाभ मिलेगा। उन्होंने जोर दिया कि रेलवे पार्सल

- रेलवे नवाचार के साथ पार्सल व्यवसाय में तीव्र वृद्धि की योजना बना रही है
- एलएचबी पार्सल वैनों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए तत्काल कदम उठाए जाने की और ई-भुगतान एवं डिजिटल भुगतान सुविधाओं को शुरू करने की जरूरत है
- उत्तर-पूर्वी क्षेत्र और पहाड़ी राज्यों से आवागमन की सुविधा और बंदरगाहों की ओर जाने वाले निर्यात संबंधी यातायात को आकर्षित करने पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है

व्यवसाय में तीव्र वृद्धि के लिए लक्ष्य निर्धारित करेगी और इस वांछित वृद्धि को प्राप्त करने के लिए अधिक प्रयासों और नवाचार विचारों की जरूरत है। रेल मंत्री ने निर्देश दिया कि एलएचबी पार्सल वैनों के उत्पादन में वृद्धि के लिए तत्काल कदम उठाए जाएं और ई-भुगतान एवं डिजिटल भुगतान सुविधाओं की शुरुआत की जाए। इसके अलावा उन्होंने उत्तर-पूर्वी क्षेत्र और पहाड़ी राज्यों से आवागमन की सुविधा और बंदरगाहों की ओर जाने वाले निर्यात संबंधी यातायात को आकर्षित करने के लिए पर्याप्त कदम उठाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि पार्सल स्पेशल ट्रेनों को तय समय पर जरूर चलाया जाना चाहिए, जिससे इन सेवाओं के उपयोग को लेकर ग्राहकों के भीतर विश्वास पैदा हो सके। ■

माल ढुलाई के ग्राहकों की सुविधा के लिए प्रीमियम इंडेंट की नीति पेश की गई

रेल मंत्रालय ने माल ढुलाई के ग्राहकों की सुविधा के लिए 11 दिसंबर, 2020 को प्रीमियम इंडेंट (विशेष मांग) की नीति पेश की है। इस नीति के तहत, अगर कोई ग्राहक प्रीमियम इंडेंट के लिए अनुरोध करता है, तो रेलवे बोर्ड के यातायात परिवहन निदेशालय की ओर से समय-समय पर जारी किए गए प्रिफ्रेंशियल ट्रैफिक ऑर्डर्स (प्राथमिकता आधारित यातायात आदेश) के तहत रैक आवंटन में दो दिन की प्राथमिकता मिलेगी। अभी यह सोमवार और शुक्रवार को मिल रही है। हालांकि, अन्य दिनों में इंडेंट की प्राथमिकता के सामान्य आदेश का पालन होगा।

नीति की प्रमुख विशेषताएं नीचे दी गई हैं-

- साइडिंग्स में ग्राहक रैक उपलब्ध कराने की तिथि की जानकारी दे सकते हैं और यह भी बता सकते हैं कि अगर तय तिथि के बाद सामान्य भाड़े पर रैक की आपूर्ति होती है तो माल की लदाई करेंगे या नहीं।
- ग्राहक को सामान्य भाड़े पर 5 प्रतिशत प्रीमियम का भुगतान करना होगा, जो पहले जमा किया जाएगा। अगर तय तिथि की जगह रैक को बाद में दिया गया तो पहले से जमा प्रीमियम को सामान्य भाड़े में से घटा दिया जाएगा।
- माल गोदामों (शेड) में भी ग्राहकों को प्रीमियम इंडेंट लगाने की छूट होगी।
- एक बार प्रीमियम इंडेंट लगाने के बाद उसे वापस नहीं लिया जा सकता है; इंडेंट वापस लेने पर पहले से जमा प्रीमियम जब्त हो जाएगा।
- यह प्रीमियम इंडेंट नीति प्रतिबंधित स्थलों और कोटा द्वारा विनियमित स्थलों पर लागू नहीं होगी।
- यह एक वैकल्पिक योजना है। ■

भारतीय रेल में मनाया गया महापरिनिर्वाण दिवस

भारत के संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस पर समग्र भारतीय रेल द्वारा उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। रेलवे बोर्ड में आयोजित कार्यक्रम में श्री पीयूष गोयल, रेल मंत्री, श्री विनोद कुमार यादव, अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं अन्य सभी रेलवे बोर्ड के सदस्यों एवं अधिकारियों ने श्रद्धासुमन अर्पित किए। भारतीय रेल पर सभी क्षेत्रीय रेलों, मंडलों, उत्पादन इकाइयों तथा अन्य कार्यालयों में भी डॉ. अंबेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस पर कर्मचारियों तथा अधिकारियों द्वारा श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए उनके कार्यों को याद किया गया।

भारतीय रेल ने दिसम्बर माह में भी माल ढुलाई के उच्च स्तर को बनाए रखा

भारतीय रेल ने आय और माल लदान के मामले में दिसम्बर, 2020 के दौरान भी माल ढुलाई के उच्च स्तर को बनाये रखा है।

मिशन मोड में, भारतीय रेल द्वारा दिसंबर 2020 में की गई माल ढुलाई, पिछले वर्ष की समान अवधि के माल लदान और आय को पार कर गयी।

दिसम्बर, 2020 के महीने में, भारतीय रेल द्वारा किया गया माल-लदान 118.13 मिलियन टन रहा, जो पिछले वर्ष की सामान अवधि में हुए लदान (108.84 मिलियन टन) की तुलना में 8.54 प्रतिशत अधिक है।

इस अवधि में भारतीय रेल ने माल लदान से 11788.11 करोड़ रुपये की आय अर्जित की, जो पिछले साल की आय (11030.37 करोड़ रुपये) की तुलना में 757.74 करोड़ रुपये (6.87 प्रतिशत) अधिक है।

दिसंबर 2020 के महीने में, भारतीय रेल द्वारा कुल 118.13 मिलियन टन माल लदान किया गया, जिसमें 50.67 मिलियन टन कोयला, 15.31 मिलियन टन लौह अयस्क, 6.13 मिलियन टन खाद्यान्न, 5.23 मिलियन टन उर्वरक, 4.3 मिलियन टन खनिज तेल और 7.46 मिलियन टन सीमेंट शामिल थे (धातु अवशिष्ट को छोड़कर)।

उल्लेखनीय है कि रेल द्वारा माल ढुलाई को आकर्षक बनाने के लिए भारतीय रेल कई रियायतें/ छूट दे रही है।

ध्यान देने योग्य है कि माल ढुलाई परिवहन में सुधार को संस्थागत रूप दिया जाएगा और इसे आगामी शून्य आधारित टाइम टेबल में शामिल किया जाएगा।

भारतीय रेल द्वारा कोविड-19 का उपयोग, सभी प्रकार की दक्षता और प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए किया गया है। ■

भारतीय रेल
वर्ष– 2020
उपलब्धियों की झांकी

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आत्मनिर्भर भारत का
हो रहा निर्माण

प्रधानमंत्री गरीब कल्याण रोजगार अभियान : 14 लाख से अधिक मानव दिवस के रोजगार का सृजन

राष्ट्र की जीवन रेखा- कोविड-19 के दौरान

श्रमिक दिवस (1 मई 2020) से **श्रमिक स्पेशल ट्रेनों** का संचालन आरम्भ

4,621	श्रमिक स्पेशल ट्रेनें चलाई गईं
63.1 लाख	प्रवासी श्रमिक ले जाये गए
1.85 करोड़	खाने के पैकेट का वितरण
2.21 करोड़	पानी के बोतल की निशुल्क आपूर्ति

5,601 ट्रेन कोच, कोविड केयर केन्द्र में परिवर्तित

17 समर्पित चिकित्सालयों में **5,000** बेड आरक्षित

33 पृथक चिकित्सालय ब्लाक भी कोविड केयर हेतु आरक्षित

कोविड के उपरांत यात्रा के लिए महत्वपूर्ण डिजाईन सुधार के साथ दुनिया के पहले **कोविड-सुरक्षित** कोच का अनावरण किया

आपदा को अवसर में बदलती रेलवे

कोविड-19 के दौरान सद्भावना बढ़ाती रेलवे

आवश्यक सामग्रियों जैसे कि खाद्यान्न, कोयला, पेट्रोलियम, खाद, लौह अयस्क एवं अन्य की आपूर्ति

टाइम टेबल्ड पार्सल ट्रेनें आरम्भ - 1 अप्रैल से 30 सितम्बर 2020 तक **8.3 लाख** टन सामग्री की ढुलाई

खाद्यान्नो की रिकॉर्ड लोडिंग

(1 अप्रैल से 30 अक्टूबर 2020)

3.9 करोड़ टन
2020

2.1 करोड़ टन
2019

कनेक्टिविटी का इंजन

694 विशेष ट्रेनें, **436** पूजा विशेष ट्रेनें, **1,410** मुंबई उपनगरीय सेवा, **200** कोलकाता मेट्रो एवं **28** सवारी ट्रेनें शुरू की गयीं

मेक इन इंडिया के क्षेत्र में उपलब्धियां

5.5 लाख पीपीई किट (कवर ऑल)

1.4 लाख लीटर सैनिटाइजर

20 लाख पुन: उपयोगी फेस कवर

इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास

350 बड़ी परियोजनाओं को पूरा कर सुरक्षा एवं गति में सुधार

रेल सुरक्षा

सुरक्षा के क्षेत्र में सर्वोत्तम प्रदर्शन :

अप्रैल 2019 से अभी तक किसी भी यात्री की मृत्यु नहीं

भारतीय रेल के इतिहास में पहली बार

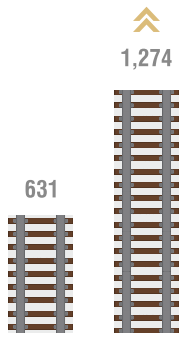

मानव युक्त क्रासिंग को समाप्त करने की दर में **102% की बढ़ोत्तरी**

पुलों के सुदृढ़ीकरण में **35% की बढ़ोत्तरी**

ट्रैक नवीनीकरण के एरियर्स में तेजी से कमी

रेल सुरक्षा के लिए कमांडो '**कोरस**' की शुरुआत

2019-20 में **132 स्टेशन** पर सीसीटीवी आधारित सर्विलांस प्रणाली का प्रावधान

अब तक कुल **627** स्टेशन पर सीसीटीवी प्रणाली लगायी जा चुकी है

इंफ्रास्ट्रक्चर- एक बेहतर कल के लिए

2014-20 में पूंजीगत व्यय ₹6,45,600 करोड़, 60 वर्षों 1951 से 2014 में हुए संचयी निवेश (₹4,95,958 करोड़) को पार कर गया

1,353 किमी लम्बी, 32 परियोजनाएं पूर्ण

गोल्डन क्वाड्रीलेटरल / गोल्डन डायगनल के मार्गों पर पारंपरिक 1x25 kV से 2x25 kV कर्षण की ओर अग्रसर

बीना-कटनी-विश्रामपुर खंड और डीएफसी में पहले से ही कार्यशील

नई दिल्ली – मुंबई और **नई दिल्ली – हावड़ा** को 2024 तक पूरा कर लिया जायेगा

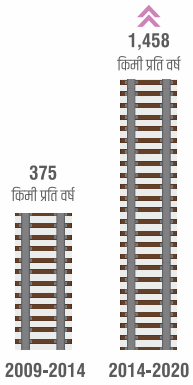

दोहरीकरण कमीशनिंग में
चार गुना बढ़ोत्तरी

पूर्वोत्तर : सातो राज्यों से कनेक्टिविटी

त्रिपुरा में 112 किमी लंबी
अगरतला – सबरुम रेल लाइन पूर्ण

लामडिंग से होजाई 45 किमी लंबी
दोहरीकरण परियोजना पूर्ण

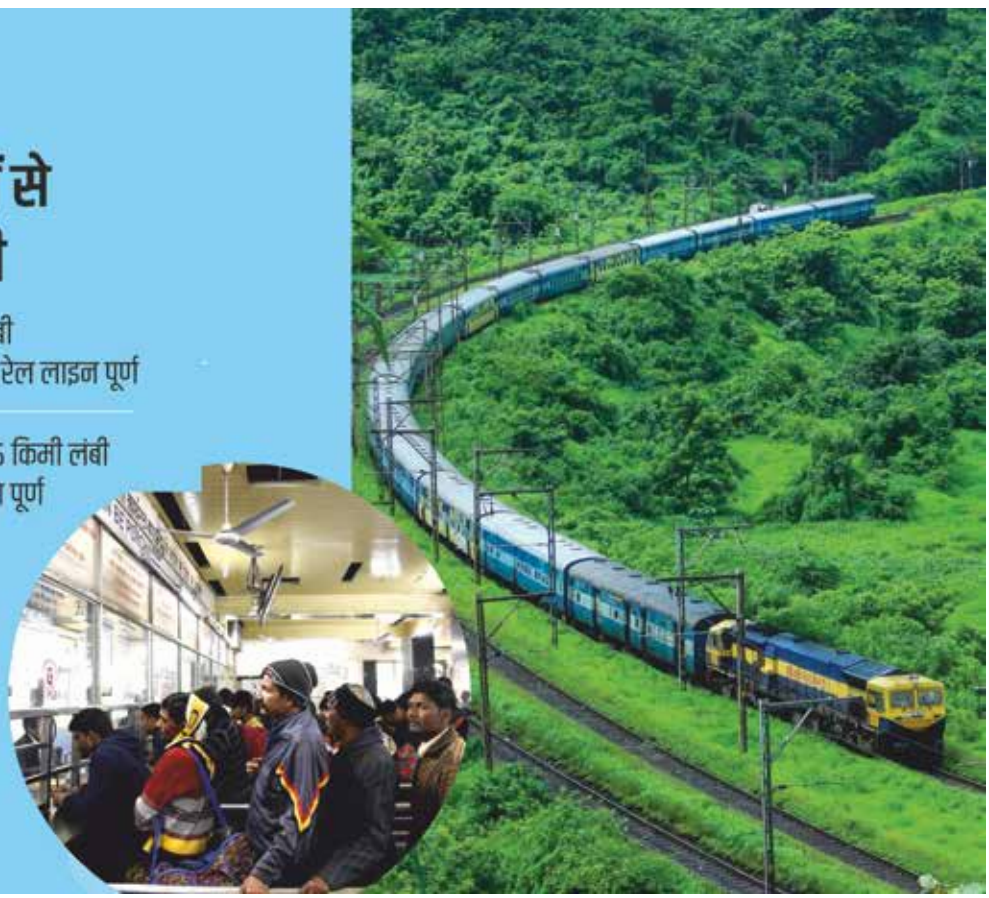

आत्मनिर्भर भारत

नये भारत की ताकत,
आत्मनिर्भर भारत

प्रोक्योरमेंट पॉलिसी में बदलाव : इलेक्ट्रिक लोकोमोटिव के **95% से ज्यादा कलपुर्जे** स्वदेशी स्रोत से लिए जायेंगे

रेल व्हील फैक्ट्री (आरडब्ल्यूएफ) में **ऐक्सल क्षमता** में बढ़ोत्तरी, जिससे आयात पर निर्भरता कम होगी

वन्दे भारत ट्रेन के **44 रेकों** के प्रोक्योरमेंट की शुरुआत

मेक इन इंडिया कंपोनेंट्स को बढ़ाया गया

निर्यात में तेजी
बनारस रेल इंजन कारखाना, वाराणसी ने **श्रीलंका रेलवे को 7 डीजल रेल इंजन** निर्यात किए

रोलिंग स्टॉक के उत्पादन में बढ़ोत्तरी

605
2018-2019

784
2019-2020

इलेक्ट्रिक लोकोमोटिव के उत्पादन में **30% की बढ़ोत्तरी**

4,429
2018-2019

6,277
2019-2020

एलएचबी कोचों के उत्पादन में **42% की बढोत्तरी**

स्वच्छ रेल स्वच्छ भारत

100%
कोच बायो-टॉयलेट युक्त

953 स्टेशनों पर इंटीग्रेटेड मेकेनाइज्ड क्लीनिंग की सुविधा उपलब्ध

ग्रीन रेलवे

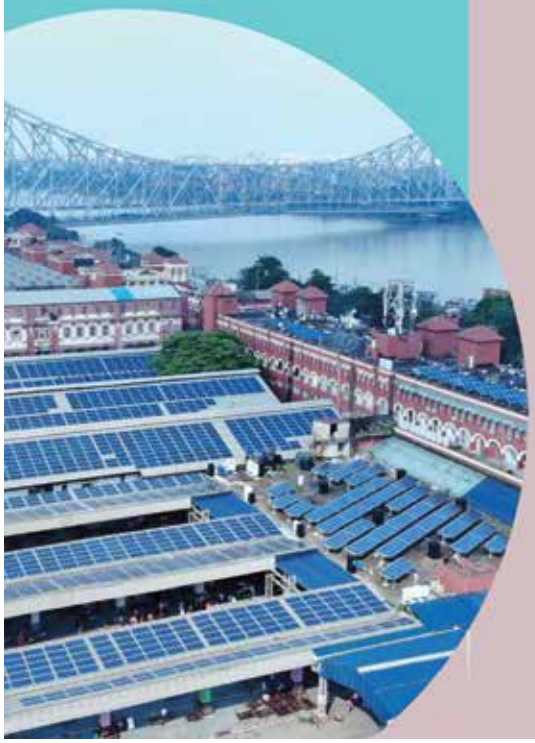

इलेक्ट्रिफिकेशन कार्य में **4.5 गुना** की बढ़ोत्तरी

12,000 हॉर्सपावर के **43** मेड इन इंडिया इलेक्ट्रिक लोको का विनिर्माण

960 बड़े रेल भवनों के छतों पर लगाये गए **103 मेगावाट** के सोलर पॉवर प्लांट प्रारम्भ

103.4 मेगावाट विंड पॉवर प्लांट प्रारम्भ

स्किलिंग भारत

राष्ट्रीय रेल एवं परिवहन संस्थान-
डीम्ड यूनिवर्सिटी एवं
राष्ट्रीय महत्व का संस्थान

2018 से क्लासेस प्रारम्भ

20 राज्यों एवं केन्द्र शासित क्षेत्रों से **200** विद्यार्थी

2 प्रोग्राम
(3 वर्षीय - बी.एससी. एवं बी.बी.ए.)

डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (डीएफसी) के कार्य में तेजी

पश्चिमी डीएफसी में **306 किमी लम्बी रेवाड़ी – मदार खंड** का कार्य पूर्ण

पूर्वी डीएफसी में **194 किमी लम्बी खुर्जा – भदान खंड** का कार्य पूर्ण

डीएफसी के लाभ :

माल का आसान, तीव्रगामी एवं निर्बाध आवागमन

कारखानों एवं कृषि क्षेत्रों से बंदरगाहों की कनेक्टिविटी से आर्थिक विकास एवं रोजगार सृजन

माल-परिवहन में तेजी

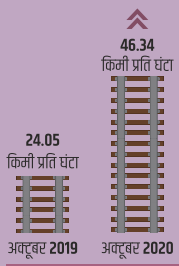

मालगाड़ियों की रफ़्तार लगभग दोगुनी

टाइम टेबल में उच्च गति मानक अंकित

टाइम टेबल में मालगाड़ियों के संचालन एवं रखरखाव कार्य के लिए अलग - अलग कॉरिडोर सम्मिलित

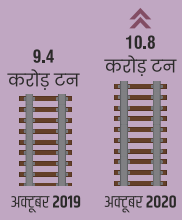

माल ढुलाई में 15.4% की वृद्धि

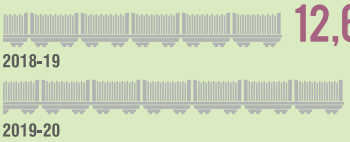

नए वैगनों के इंडक्शन में **22% की वृद्धि**

सभी निजी साइडिंग को निजी फ्रेट टर्मिनल बनाने की अनुमति

बांग्लादेश को निर्यात के लिए नई संशोधित माल (एनएमजी) रेक के माध्यम से ऑटोमोबाइल ट्रांसपोर्ट आरम्भ

गुड्स शेड्स को निजी निवेश के माध्यम से विकसित करने हेतु पॉलिसी जारी

यूट्यूब वीडियो

माल ढुलाई में अग्रसर

मालभाड़ा दरों का उपयुक्तिकरण

15% बिजी सीजन सरचार्ज समाप्त

टू पॉइंट कॉम्बिनेशन एवं मिनी रेक पर लगने वाला 5% सप्लीमेंट्री चार्ज समाप्त

इंडस्ट्रियल सॉल्ट के रेट क्लास को घटाया

ई – पेमेंट सुविधा आरम्भ

माल लदान से जुड़े 1,268 ग्राहक ई-पेमेंट सुविधा का लाभ ले रहे हैं

अनुमोदित रियायतें

लम्बी दूरी: कोयला, लौह अयस्क एवं फिनिश्ड स्टील पर 15 से 20%

छोटी दूरी: सभी कार्गो (कोयला एवं लौह अयस्क छोड़कर) पर 10 से 50%

कन्टेनर यातायात: भरे हुए पर 5% तथा खाली पर 25%

फ्लाई ऐश : 40%

किसान रेल से कृषि क्षेत्र में खुशहाली

बजट 2020 – पीपीपी के माध्यम से दूध, मांस एवं मछली सहित पेरिशेबल आइटम्स की राष्ट्रीय स्तर पर निर्बाध रूप से तापमान नियंत्रित आपूर्ति श्रृंखला हेतु **'किसान रेल'** का आरम्भ

अगस्त 2020 में प्रथम सेवा – पायलट प्रोजेक्ट के रूप में महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश एवं बिहार को जोड़ते हुए - **देवलाली से दानापुर** - के मध्य चलायी गयी

अब मांग पर मुजफ्फरपुर तक बढ़ाया गया

दो **किसान रेल** और शुरू की गयीं

किसान रेल में अधिसूचित सब्जियों एवं फलों के परिवहन पर **50%** की छूट

प्रोटीन कन्टेनर विशेष ट्रेन (दादरी से जेएनपीटी/मुन्द्रा/पिपवाव) प्रारम्भ – 144 फेरे (अप्रैल - जुलाई 2020)

यात्रियों की मुस्कान के लिए निरन्तर प्रयास

विस्टाडोम कोच : पर्वतीय पर्यटन स्थलों के यात्रा अनुभवों को यादगार बनाने हेतु पारदर्शी एवं आकर्षक चित्रों से युक्त 30 विस्टाडोम कोच उपयोग में लाये जा रहे हैं

दिल्ली - लखनऊ एवं मुंबई - अहमदाबाद रेल मार्गों पर आधुनिक यात्री सुविधाओं से युक्त **दो तेजस ट्रेनें** चलायी गयी

नई दिल्ली से कटड़ा के मध्य आधुनिक यात्री सुविधाओं से परिपूर्ण दूसरी **वन्दे भारत एक्सप्रेस** को नियमित सेवा में शामिल किया गया

134 नई ट्रेनों की शुरुआत की, **118** ट्रेनों की सेवाओं को बढ़ाया गया और **22** ट्रेन सेवाओं की आवृत्ति में वृद्धि हुई

अगस्त और सितंबर में गणपति उत्सव, **जेईई / एनईईटी परीक्षा** और **एनडीए और नौसेना अकादमी परीक्षा** के लिए मांगों के अनुसार, राज्य सरकारों के समन्वय से विशेष ट्रेनें संचालित

कुछ खास क्षेत्रों में मांग को पूरा करने के लिए रणनीति के तहत क्लोन ट्रेनों का संचालन आरम्भ

अधिक वेटलिस्ट वाले अत्यधिक संरक्षित ट्रेनों के क्लोन के रूप **20** जोड़ी विशेष ट्रेनों का आरम्भ

प्रगति का प्लेटफॉर्म

5,814 स्टेशनो पर तेज वाई-फाई की निशुल्क सुविधा (वर्ष 2019-20 में 4,411 स्टेशनों पर)

वर्ष 2019-20 में **835 रेलवे स्टेशनों** पर एयरपोर्ट मानक के स्तर की उन्नत प्रकाश व्यवस्था

सुगम्य टिकटिंग व्यवस्था

आई.आर.सी.टी.सी. – एस.बी.आई. रुपे कार्ड 28 जुलाई 2020 को जारी किया जिससे बारम्बार यात्रा करने वाले रेल यात्रियों को बचत होगी, ट्रान्जेक्शन फीस पर छूट एवं आनन्दमय शॉपिंग का अनुभव मिलेगा

अयोध्या रेलवे स्टेशन का उन्नयन एवं आधुनिकीकरण

नया स्टेशन भवन, दो आधुनिक फुट ओवर ब्रिज, प्लेटफार्म सुधार एवं सरकुलेटिंग एरिया का विकास कार्य ₹105 करोड़ की लागत से किया जाना है, यह परियोजना 2020-21 में पूर्ण होगी

परिचालन में पब्लिक-प्राइवेट-पार्टनरशिप

पीपीपी प्रणाली के अनुरूप 109 रेल मार्गों पर 151 आधुनिक ट्रेनें (रेक)

उन्नत तकनीक

यात्रा समय में कमी; यात्रियों को बेहतर यात्रा अनुभव

रेल क्षेत्र में निजी निवेश
~ ₹30,000 करोड़ अनुमानित

विकास की रेल

बिहार में रेलवे कनेक्टिविटी को बेहतर बनाने के लिए **कोसी रेल मेगा ब्रिज** का उद्घाटन

बिहार में ₹2,720 करोड़ की 12 परियोजनाओं का उद्घाटन किया गया, जिसमे नई रेल लाइन, इलेक्ट्रिक लोको शेड, गेज परिवर्तन एवं विद्युतीकरण शामिल हैं

पटना – नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस ने रेलवे के **"मिशन रफ़्तार"** के तहत पहली बार पटना से नई दिल्ली के बीच **130 किलोमीटर प्रति घंटे** की रफ़्तार से चल कर एक रिकॉर्ड बनाया

तीव्र रेल गतिमान रेल

कार्यशीलता के आधार पर रेलवे बोर्ड का **पुनर्गठन**

रेलवे बोर्ड में अब **मुख्य कार्यकारी अधिकारी सह अध्यक्ष रेलवे बोर्ड**

विभागीय आधार पर 8 सदस्यों के स्थान पर कार्यशीलता के आधार पर **4 सदस्य**

एकल सेवा का अनुमोदन
वर्तमान में 8 सेवा के स्थान पर भारतीय रेल प्रबंधन सेवा (भा.रे.प्र.से.)

1.4 लाख रिक्त पदों की ओपन मार्केट से भर्ती के लिए **2.56 करोड़** अभ्यर्थियों का कंप्यूटर आधारित टेस्ट कराया गया

12 लाख रेल कर्मचारियों के लाभ हेतु ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेंट सेवाओं का शुभारम्भ किया गया

पारदर्शिता एवं जवाबदेही

रेल दृष्टि:
पोर्टल के माध्यम से आमजन को रेलवे के प्रमुख कार्यों की जानकारी

आईआरईपीएस एवं जीईएम का एकीकरण

इंडियन रेलवे इलेक्ट्रॉनिक प्रोक्योरमेंट सिस्टम (आईआरईपीएस) का गवर्नमेंट ई - मार्केट प्लेस (जीईएम) के साथ एकीकरण शीघ्र पूरा होगा

दोनों की प्रमुख विशेषताएं यथावत रहेंगी

प्रोक्योरमेंट में पारदर्शिता एवं डिजिटलीकरण के नए युग का उदय

वृहद् वेंडर आधार एवं आपूर्ति इकोसिस्टम का विकास

इंडियन रेलवे प्रोक्योरमेंट **(₹70,000 करोड़)** का जीईएम में ट्रांजिशन

ई – रिवर्स नीलामी ₹5 करोड़ से अधिक मूल्य के सामान के क्रय हेतु टेंडरिंग प्रक्रिया में अब डिफ़ॉल्ट मोड

मुम्बई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल परियोजना : उपलब्धियां-2020

भूमि अधिग्रहण

- गुजरात और दादरा और नगर हवेली में, 92% और महाराष्ट्र में निजी भूमि के भूमि अधिग्रहण की 22% प्रगति हुई है।
- एमएएचएसआर प्रोजेक्ट के लिए कुल 70% भूमि का अधिग्रहण / हस्तांतरण किया गया है।

वैधानिक मंजूरी

- गुजरात और महाराष्ट्र राज्य में आवश्यक वन्यजीव, वानिकी और तटीय विनियमन क्षेत्र की मंजूरी प्राप्त कर ली गई है।

आय बहाली योजना

- लगभग 240 पीएपी (परियोजना प्रभावित व्यक्ति / लैंड लूजर) ने आय बहाली कार्यक्रम (आईआरपी) के तहत कौशल वृद्धि प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूरा किया है।
- कौशल वृद्धि प्रशिक्षण पूरा करने के बाद 100 उम्मीदवारों को विभिन्न निजी क्षेत्रों में रखा गया है या वे स्वरोजगार कर रहे हैं।

पर्यावरण–वृक्ष प्रत्यारोपण

- पर्यावरण के संरक्षण के लिए वृक्ष की कटाई के स्थान पर वृक्ष के प्रत्यारोपण को लिया गया है। परियोजना स्थलों पर 6628 पेड़ लगाए गए और लगभग 73,000 पौधे रोपे गए।

अनुबंध

- 508 किलोमीटर में से 325 किलोमीटर (64%) के सिविल कॉन्ट्रैक्ट दे दिए गए हैं।
- ⋆ 24,985 करोड़ की लागत से गुजरात राज्य में 4 स्टेशनों और डिपो समेत वापी और वडोदरा के बीच 237 किलोमीटर लंबे वायाडक्ट के निर्माण के लिए देश के सबसे बड़े बुनियादी ढाँचे का अनुबंध (पैकेज C-4) 26 नवम्बर, 2020 को हस्ताक्षरित किया गया था।
- ⋆ गुजरात के वडोदरा और अहमदाबाद (पैकेज C-6) के बीच, एमएएचएसआर के लिए आनंद / नडियाद में एलिवेटेड एचएसआर स्टेशन के निर्माण सहित, 88 किमी (लगभग) के डिजाइन और निर्माण का दूसरा सिविल कॉन्ट्रैक्ट 18 नवम्बर 2020 को हस्ताक्षरित किया गया था।
- साबरमती हब बिल्डिंग के लिए कॉन्ट्रैक्ट दे दिया गया है और कार्य स्थल पर निर्माण चल रहा है।

एचएसआर प्रशिक्षण संस्थान

- कंक्रीट स्लैब (2 ट्रैक, प्रत्येक 50 मीटर लंबा, पैकेज टीआई -2) के साथ सेंपल ट्रैक का काम अप्रैल 2019 में पूरा हो गया है।
- छात्रावास भवन का निर्माण कार्य 168 कमरों (334 बेड, पैकेज टीआई-3) के साथ मार्च 2020 में पूरा हो चुका है।
- वर्ष के दौरान विभिन्न विषयों पर 280 कर्मचारियों को 529 कार्य दिवस प्रशिक्षण दिया गया।

ओवरहेड यूटिलिटीज का स्थानांतरण

- 1651 ओवरहेड इलेक्ट्रिकल (ओएचई) लाइनों में से 1116 को एचएसआर सरेखण का उल्लंघन मानते हुए स्थानांतरित कर दिया गया है।

नए एचएसआर कॉरिडोर के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट

- एनएचएसआरसीएल को सात नए हाई स्पीड रेल कॉरिडोरों के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार करने का काम सौंपा गया है। दिल्ली-वाराणसी एचएसआर (865 किमी के लिए); दिल्ली-अहमदाबाद एचएसआर (886 किमी के लिए); मुंबई-नागपुर एचएसआर (753 किमी); मुंबई-हैदराबाद एचएसआर (711 किमी के लिए); चेन्नई-मैसूर एचएसआर (435 किमी के लिए); दिल्ली-अमृतसर एचएसआर (459 किमी के लिए); और वाराणसी-हावड़ा एचएसआर (760 किमी)।
- दिल्ली-वाराणसी कॉरिडोर के लिए डीपीआर रिपोर्ट (वर्जन 1) सरकार को सौंप दी गई है। ■

'सुशासन दिवस' पर मराठवाड़ा रेल कोच फैक्ट्री द्वारा प्रथम कोच शेल के निर्माण की घोषणा

- इस अत्याधुनिक रेल फैक्टरी की स्थापना और कमीशन रेल विकास निगम लिमिटेड (आरवीएनएल) द्वारा भारतीय रेल के लिए स्वचालित रेलगाड़ियों के विनिर्माण के लिए किया गया
- भारतीय रेल निरंतर 'मेक इन इंडिया' मिशन में योगदान दे रही है

कोविड-19 की चुनौतियों के बावजूद, भारतीय रेल की पीएसयू, रेल विकास निगम लिमिटेड (आरवीएनएल) ने प्रथम कोच शेल के निर्माण के साथ 25 दिसम्बर, 2020 को 'सुशासन दिवस' पर महाराष्ट्र के लातूर में मराठवाड़ा रेल कोच फैक्टरी को कमीशन किया। इस फैक्टरी को घोषणा से लगभग दो वर्ष में ही कमीशन कर दिया गया है।

यह फैक्टरी एक आधुनिक औद्योगिक परितंत्र की शुरुआत के द्वारा महाराष्ट्र के इस आकांक्षी क्षेत्र के समग्र विकास में उल्लेखनीय रूप से योगदान देगी। इस फैक्टरी की रूपरेखा सालाना 250 एमईएमयू/ईएमयू/एलएचबी/ट्रेनसेट टाइप एडवांस्ड कोच के विनिर्माण की आरंभिक क्षमता के साथ बनाई गई है। तथापि, इसकी क्षमता उल्लेखनीय रूप से बढ़ाई जा सकती है क्योंकि ले-आउट प्लान में पर्याप्त रिक्त स्थान चिन्हित किया गया है। इस परियोजना की लागत 120 करोड़ रुपये की भूमि लागत के अतिरिक्त लगभग 500 करोड़ रुपये है। इस फैक्टरी की स्थापना 350 एकड़ भूमि में की गई है, जिसमें 52,000 वर्ग मीटर प्री-इंजीनियर्ड बिल्डिंग शेड्स, तीन लाइन यार्ड, 33 केवी आपूर्ति के साथ बिजली सबस्टेशन, कैंटीन, सुरक्षा एवं प्रशासनिक खंड और 24 एकड़ में एक आवासीय कॉलोनी शामिल है। फैक्टरी से इलेक्ट्रॉनिक रूप से एक नए इंटरलॉक्ड हारांगुल रेलवे स्टेशन तक कोचों की आवाजाही के लिए 5 किलोमीटर लंबी रेल कनेक्टिविटी भी उपलब्ध कराई गई है। इस स्टेशन का पहले केवल एक हॉल्ट स्टेशन के रूप में ही उपयोग किया जाता था। फैक्टरी को अत्याधुनिक मशीनरी एवं संयंत्र, मैटेरियल हैंडलिंग प्रणालियों तथा विभिन्न यूटीलिटीज से सुसज्जित किया गया है।

टिकाऊ विकास के लिए परियोजना में विभिन्न हरित पहलों का अनुपालन किया गया है, जिनमें 800 किलोवॉट शेड रूफ माउंटेड सोलर पावर प्लांट, सीवेज एवं अपशिष्ट जल उपचार एवं रि-साइक्लिंग संयंत्र, वर्षा जल संग्रहण, 10,000 वृक्षों का रोपण, एलइडी लाइटिंग, प्राकृतिक दिन लाइटिंग तथा शेड्स में वेंटिलेशन शामिल हैं। प्रशासनिक खंड का निर्माण हरित भवन अवधारणाओं के साथ किया गया है। जैसे ही 28 अगस्त, 2018 को परियोजना स्वीकृत की गई, आरवीएनएल ने इसके फास्ट ट्रैक टर्न-की निष्पादन के लिए 30 अगस्त, 2018 को एक संयुक्त अनुबंध प्रदान कर दिया एवं स्थल पर कार्य 12 अक्टूबर, 2018 को आरंभ हो गया। ऐसी उम्मीद की जाती है कि फैक्टरी जल्द ही पूरी तरह से सुसज्जित रेल इकाइयों का निर्माण करेगी। ■

आइसीएफ द्वारा निर्मित नए डिजाइन वाले विस्टाडोम टूरिस्ट कोच का सफल गति परीक्षण

180 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से पटरी पर चलने वाले विस्टाडोम कोच का परीक्षण पूरा

यात्रियों को विश्व स्तरीय आधुनिक यात्रा अनुभव दिलाने के उद्देश्य से भारतीय रेल ने सवारी डिब्बा कारखाना, चेन्नै (आईसीएफ) द्वारा नए डिजाइन किए गए विस्टाडोम पर्यटक कोच के गति परीक्षणों को सफलतापूर्वक पूरा किया। कोच ने 180 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से पटरी पर चलने वाले विस्टाडोम कोच का परीक्षण पूरा कर लिया है। इस नए कोच का स्कवीज परीक्षण आईसीएफ में दिसंबर में ही पूरा कर लिया गया था। विस्टाडोम पर्यटक कोच में बाहरी दृश्यों को देखने के लिए बेहतर व्यवस्था की गई है। इन डिब्बों की छतें शीशे की बनाई गई हैं। हर डिब्बें में 44 सीटें हैं, जो ट्रेन के चलने की दिशा की ओर 180 डिग्री तक घूम सकती हैं। इन डिब्बों में वाई-फाई आधारित यात्री सूचना प्रणाली भी उपलब्ध कराई गई है।

पिछले कुछ वर्षों के दौरान भारतीय रेल ने आत्मनिर्भर भारत मिशन में योगदान देने के लिए व्यापक कदम उठाए हैं। इसकी वजह से विशेष रूप से इंजन, कोच, ट्रैक और सिग्नलिंग प्रणाली की गुणवत्ता के सभी मोर्चों पर असाधारण परिणाम दिखाई दे रहे हैं। ये सभी देश के लोगों को गुणवत्तायुक्त यात्री सुविधाओं से लैस रेल यात्रा के अनुभव के मामले में बड़े बदलाव लाने के लिए एक लंबा रास्ता तय करेगें। ■

दिल्ली–वाराणसी हाई स्पीड रेल कॉरिडोर के भू–सर्वेक्षण के लिए हवाई एलआईडीएआर सर्वेक्षण तकनीक अपनाई गई

नेशनल हाई स्पीड रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड प्रस्तावित दिल्ली–वाराणसी हाई स्पीड रेल कॉरिडोर के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने के उद्देश्य से लाइट डिटेक्शन और रेंजिंग सर्वेक्षण (एलआईडीएआर) तकनीक का उपयोग करने जा रहा है। इसमें हेलीकॉप्टर में रखे लेसर उपकरण के माध्यम से जमीन का सर्वेक्षण किया जाएगा।

अलायनमेंट या जमीन का सर्वेक्षण किसी भी रेखीय अवसंरचना परियोजना का महत्त्वपूर्ण अंग होता है। सर्वेक्षण से अलायनमेंट के आसपास के क्षेत्र का सटीक विवरण प्राप्त होता है। यह तकनीक शुद्ध आंकड़े जुटाने के लिए लेसर डाटा, जीपीएस डाटा, उड़ान मानदंडों और वास्तविक फोटो का संयुक्त रूप से उपयोग करती है। सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों और जानकारी के आधार पर ऊर्ध्व और क्षैतिज अलायनमेंट की डिजाइन, संरचनाएं, स्टेशनों और डिपो की स्थिति, कॉरिडोर के लिए जमीन की आवश्यकता, परियोजना से प्रभावित भूखंडों/संरचनाओं, अधिकृत रास्ता आदि का निर्णय लिया जाता है।

भारत में पहली बार किसी रेलवे परियोजना के लिए एलआईडीएआर सर्वेक्षण तकनीक को मूल रूप से इसकी उच्च शुद्धता के कारण मुम्बई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल कॉरिडोर में अपनाया गया। हवाई एलआईडीएआर का उपयोग कर मुम्बई- अहमदाबाद हाई स्पीड रेल कॉरिडोर के लिए जमीन का सर्वेक्षण केवल 12 सप्ताह में पूरा कर लिया गया जबकि परम्परागत सर्वेक्षण पद्धति से इसमें 10-12 महीने का समय लगता।

डीवीएचएसआर परियोजना के वृहद् आकार और विस्तृत परियोजना रिपोर्ट देने की समय-सीमा के पालन के लिए हवाई एलआईडीएआर तकनीक से जमीन का सर्वेक्षण शुरू कर दिया गया है। जमीन पर संदर्भ बिंदु चिन्हांकित किए जा चुके हैं और हेलीकॉप्टर पर स्थापित उपकरण के माध्यम से डाटा एकत्र करने का काम 13 दिसम्बर 2020 (मौसम की परिस्थितियों पर निर्भर) से चरणबद्ध ढंग से शुरू हो जाएगा। रक्षा मंत्रालय से हेलीकॉप्टर की उड़ान के लिए जरूरी अनुमतियां प्राप्त हो गई हैं

और वायुयान तथा उपकरण का निरीक्षण चल रहा है। प्रस्तावित दिल्ली-वाराणसी एचएसआर अलायनमेंट के भौगोलिक क्षेत्र में सघन बसावट वाले नगरीय और ग्रामीण क्षेत्र, राजमार्ग, सड़कें, घाट, नदियां, हरित क्षेत्र शामिल हैं, जिसके कारण यह कार्य और अधिक चुनौतीपूर्ण है।

रेल मंत्रालय ने दिल्ली-वाराणसी एचएसआर कॉरिडोर की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट बनाने की जिम्मेदारी एनएचएसआरसीएल को सौंपी है। कॉरिडोर की अनुमानित लम्बाई 800 किमी है। अलायनमेंट (सरेखण) और स्टेशनों के संबंध में सरकार से परामर्श कर निर्णय लिया जाएगा। ■

रेल, पर्यटन व साहित्य को साथ संजोए

रेल मंत्रालय द्वारा विगत 60 सालों से भी अधिक समय से प्रकाशित मासिक पत्रिकाओं

भारतीय रेल
(हिन्दी)

की सदस्यता अब
ऑनलाइन
भी उपलब्ध

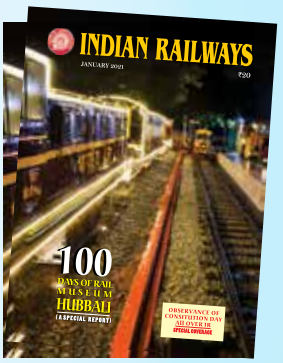

Indian Railways
(English)

विज़िट करें

www.irctctourism.com/IRBRmag/#/home

शर्तें एवं दरें लागू

'राष्ट्रीय रेल योजना' का मसौदा तैयार

क्षमता संबंधी कमियों को दूर करने और देश के माल ढुलाई (फ्रेट) इकोसिस्टम में अपनी औसत हिस्सेदारी को बढ़ाने के प्रयास के तहत, भारतीय रेल ने 'राष्ट्रीय रेल योजना' का मसौदा पेश किया है। 'राष्ट्रीय रेल योजना' रेलवे की भविष्य की सभी अवसंरचनात्मक, व्यावसायिक और वित्तीय योजना के लिए एक साझा मंच होगी। इस योजना के मसौदे को अब विभिन्न मंत्रालयों के पास उनके विचार जानने के लिए भेजा जा रहा है। रेलवे ने इस योजना को जनवरी 2021 तक अंतिम रूप देने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

इस योजना का उद्देश्य है :

- इस योजना का उद्देश्य वर्ष 2030 तक ऐसी क्षमता का निर्माण करना है, जो मांग से अधिक रहे तथा वर्ष 2050 तक की मांग में वृद्धि संबंधी जरूरतों को पूरा करे। इसका लक्ष्य कार्बन उत्सर्जन को कम करते हुए और इस प्रक्रिया को जारी रखते हुए राष्ट्रीय प्रतिबद्धता के एक अंग के रूप में वर्ष 2030 तक माल ढुलाई में रेलवे की औसत हिस्सेदारी को वर्तमान के 27% से बढ़ाकर 45% करना है।
- माल ढुलाई और यात्री क्षेत्रों में वास्तविक मांग का आकलन करने के लिए पूरे देश में सर्वेक्षण टीमों द्वारा पूरे साल के दौरान सौ से अधिक प्रतिनिधि स्थानों पर सर्वेक्षण किया गया।
- माल ढुलाई और यात्री, दोनों क्षेत्रों में 2030 तक वार्षिक आधार पर और वर्ष 2050 तक दशकीय आधार पर यातायात में वृद्धि का पूर्वानुमान करना।
- वर्ष 2030 तक माल ढुलाई में रेलवे की हिस्सेदारी को 45% तक बढ़ाने के लिए परिचालन क्षमता और वाणिज्यिक नीति पहलों पर आधारित रणनीति तैयार करना।
- मालगाड़ियों की औसत गति को वर्तमान के 22 किमी प्रतिघंटा से बढ़ाकर 50 किमी प्रतिघंटा करके माल ढुलाई के समय में कमी लाना।
- रेल परिवहन की कुल लागत को लगभग 30% कम करना और उससे अर्जित लाभों को ग्राहकों को हस्तांतरित करना।
- रेल मार्ग के मानचित्र के परिप्रेक्ष्य में मांग में वृद्धि का आकलन कर भविष्य में नेटवर्क की क्षमता में वृद्धि करना।
- उपरोक्त के आधार पर उन अवसंरचनात्मक अड़चनों को पहचानना, जो भविष्य में मांग में वृद्धि के साथ उत्पन्न होंगी।
- इन अड़चनों को समय रहते दूर करने के लिए ट्रैक कार्य, सिग्नलिंग और रोलिंग स्टॉक में उपयुक्त तकनीक के साथ परियोजनाओं का चयन करना।

- 'राष्ट्रीय रेल योजना' के एक अंग के रूप में वर्ष 2024 तक कुछ महत्त्वपूर्ण परियोजनाओं, जैसे 100% विद्युतीकरण, भीड़भाड़ वाले मार्गों की मल्टी ट्रैकिंग, दिल्ली-हावड़ा और दिल्ली-मुंबई मार्गों पर गति को 160 किमी प्रतिघंटा तक बढ़ाना, अन्य सभी स्वर्णिम चतुर्भुज-स्वर्णिम विकर्ण (जीक्यू / जीडी) मार्गों पर गति का 130 किमी प्रति घंटा तक उन्नयन और सभी जीक्यू / जीडी मार्गों पर सभी स्तर के क्रॉसिंग्स को समाप्त करना आदि के त्वरित कार्यान्वयन के लिए 'विजन 2024' शुरू किया गया है।
- 2024 के बाद, भविष्य की परियोजनाओं के लिए ट्रैक्स और सिग्नलिंग क्षेत्रों की पहचान की गई है और इसके कार्यान्वयन हेतु निश्चित समयसीमा भी निर्धारित की गई है
- निर्धारित समयसीमा के साथ 'ईस्ट-कोस्ट', 'ईस्ट-वेस्ट' और 'नॉर्थ-साउथ' नाम के तीन समर्पित फ्रेट कॉरिडोर्स की पहचान की गई है। पीईटीएस सर्वेक्षण पहले से ही चल रहा है।
- कई नए हाई स्पीड रेल कॉरिडोर्स की भी पहचान की गई है। दिल्ली-वाराणसी हाई स्पीड रेल हेतु सर्वेक्षण जारी है।
- यात्री यातायात के लिए रोलिंग स्टॉक की जरूरत के साथ-साथ माल ढुलाई के लिए मालडिब्बों की जरूरत का आकलन करना।
- 100% विद्युतीकरण (हरित ऊर्जा) और उसके आगे वर्ष 2050 तक यातायात में बढ़ोत्तरी के दोहरे उद्देश्यों को पूरा करने के लिए लोकोमोटिव की जरूरतों का भी आकलन करना।
- आवश्यक पूंजी के कुल निवेश का सावधिक विवरण के साथ आकलन करना।
- पीपीपी सहित वित्त पोषण के नए प्रारूपों की पहचान करना।
- 'राष्ट्रीय रेल योजना' के सफल कार्यान्वयन के लिए भारतीय रेल निजी क्षेत्र, सार्वजनिक उपक्रमों, राज्य सरकारों और मूल उपकरण विनिर्माताओं/उद्योगों के साथ काम करने की संभावना की तलाश करेगी।
- परिचालन और रोलिंग स्टॉक के स्वामित्व, माल और यात्री टर्मिनलों के विकास, ट्रैक संबंधी मूलभूत के विकास / संचालन जैसे क्षेत्रों में निजी क्षेत्र की निरंतर भागीदारी।

व्यावहारिक रूप से, 'राष्ट्रीय रेल योजना' हेतु वर्ष 2030 तक पूंजी निवेश में प्रारंभिक वृद्धि की परिकल्पना की गई है।

2030 के बाद अर्जित राजस्व अधिशेष, भविष्य के पूंजी निवेश के वित्त पोषण और पहले से निवेश की गई पूंजी के ऋण अनुपात का बोझ भी उठाने के लिए पर्याप्त होगा। रेल परियोजनाओं को राजकोष से वित्त पोषण की जरूरत नहीं होगी। ■

भारतीय रेल

1960 से रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका

अगस्त, 1960

पत्रिका की

www.irct

जनवरी JANUARY

सोम/Mon	मंगल/Tue	बुध/Wed	गुरु/Thu	शुक्र/Fri	शनि/Sat	रवि/Sun
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

26 गणतंत्र दिवस/Republic Day
01 नववर्ष दिवस/New Year's Day
13 लोहड़ी/Lohri
14 मकर संक्रांति / पोंगल/Makar Sankranti/Pongal
20 श्री गुरु गोविन्द सिंह जन्मदिवस/Shri Guru Gobind Singh's Birthday

फरवरी FEBRUARY

सोम/Mon	मंगल/Tue	बुध/Wed	गुरु/Thu	शुक्र/Fri	शनि/Sat	रवि/Sun
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28

16 बसंत पंचमी / श्री पंचमी/Basant Panchami/Sri Panchami
19 शिवाजी जयन्ती/Shivaji Jayanti
26 हजरत अली जयन्ती /Hazrat Ali's Birthday
27 श्री गुरु रविदास जन्मदिवस/Shri Guru Ravidas's Birthday

मार्च MARCH

सोम/Mon	मंगल/Tue	बुध/Wed	गुरु/Thu	शुक्र/Fri	शनि/Sat	रवि/Sun
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

29 होली/Holi
28 होलिका दहन / दोलयात्रा
Holika Dahan/Dolyatra
08 स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती/
Swami Dayananda Saraswati Jayanti
11 महाशिवरात्रि/Maha Shivaratri

अप्रैल APRIL

सोम/Mon	मंगल/Tue	बुध/Wed	गुरु/Thu	शुक्र/Fri	शनि/Sat	रवि/Sun
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

02 गुड फ्राइडे/Good Friday
21 राम नवमी/Ram Navami
25 महावीर जयंती/Mahavir Jayanti
04 ईस्टर रविवार/Easter Sunday
13 वैशाखी / विशु/ चैत्र शुकलड़ी / गुडी पडवा / उगाड़ी / चेती चांद
Vaisakhi/Vishu/Chaitra Shukladi/Gudi Padva/Ugadi/Cheti Chand
14 मैसादी / तमील नव वर्ष / Mesadi/Tamil New Year
15 वैशाखदी (बंगाल) / बहाग बिहु (असम)
Vaisakhadi (Bengal)/Bahag Bihu (Assam)

मई MAY

सोम/Mon	मंगल/Tue	बुध/Wed	गुरु/Thu	शुक्र/Fri	शनि/Sat	रवि/Sun
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

14 ईद–उल–फितर/Id-ul-Fitr
26 बुद्ध पूर्णिमा/Budha Purnima
07 जमात–उल–विदा/Jamat-ul-Vida
09 श्री गुरु रवीन्द्रनाथ जयंती/Shri Guru Rabindranath's Birthday

जून JUNE

सोम/Mon	मंगल/Tue	बुध/Wed	गुरु/Thu	शुक्र/Fri	शनि/Sat	रवि/Sun
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

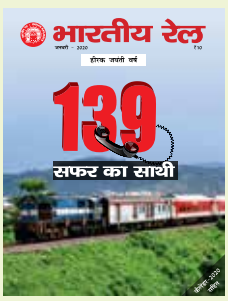

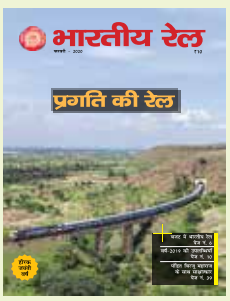

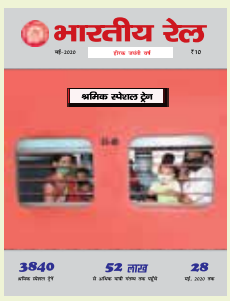

■ शनिवार / रविवार / राजपत्रित अवकाश ■ प्रतिबन्धित अवकाश

website: www.inc

ी सदस्यता अब ऑनलाइन भी उपलब्ध

ctourism.com/IRBRmag/#/home/hn

2021

जुलाई / JULY

सोम/Mon	मंगल/Tue	बुध/Wed	गुरु/Thu	शुक्र/Fri	शनि/Sat	रवि/Sun
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

21 ईद–उल–जुहा (बकरीद)/Id-ul-Zuha (Bakrid)

12 रथ यात्रा/Rath Yatra

अगस्त / AUGUST

सोम/Mon	मंगल/Tue	बुध/Wed	गुरु/Thu	शुक्र/Fri	शनि/Sat	रवि/Sun
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

15 स्वतंत्रता दिवस/Independence Day
19 मुहर्रम/Muharram
30 जन्माष्टमी/Janmashtami

16 पार्सी नव वर्ष / नौरज / Parsi New Year Day/Nauraj
21 ओनाम / थीरु ओनाम दिवस / Oham or Thiru Onam Day
22 रक्षा बंधन / Raksha Bandhan
30 जन्माष्टमी (स्मर्त) / Janmashtami (Smart)

सितम्बर / SEPTEMBER

सोम/Mon	मंगल/Tue	बुध/Wed	गुरु/Thu	शुक्र/Fri	शनि/Sat	रवि/Sun
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

10 विनायक चतुर्थी / गणेश चतुर्थी / Vinayak Chaturthi/Ganesh Chaturthi

अक्टूबर / OCTOBER

सोम/Mon	मंगल/Tue	बुध/Wed	गुरु/Thu	शुक्र/Fri	शनि/Sat	रवि/Sun
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

02 महात्मा गाँधी जन्मदिवस/Mahatma Gandhi's Birthday
15 दशहरा/Dussehra
19 मिलाद–उन–नबी व ईद–ए–मिलाद (पैगम्बर मोहम्मद साहब का जन्मदिवस)/ Milad-un-Nabi or Id-e-Milad (Birthday of Prophet Mohammad)

12 दशहरा (महा सप्तमी)/Dussehra (Maha Saptami) (Addl.)
13 दशहरा (महा अष्टमी)/(महा नवमी)/ Dussehra (Maha Ashtami)/(Maha Navmi) (Addl.)
14 विजय दशमी (बंगाल, केरल)/Vijay Dashmi (Bengal, Kerala)
20 महर्षि वाल्मीकि जन्मदिवस/Maharishi Valmiki's Birthday
24 करक चतुर्थी (करवा चौथ) / Karak Chaturthi (Karwa Chouth)

नवम्बर / NOVEMBER

सोम/Mon	मंगल/Tue	बुध/Wed	गुरु/Thu	शुक्र/Fri	शनि/Sat	रवि/Sun
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

04 दीवाली / दीपावली/Diwali (Deepavali)
19 श्री गुरु नानक देव जन्मदिवस/Shri Guru Nanak Dev's Birthday
03 नरक चतुर्दशी/Naraka Chaturdasi
05 गोवर्धन पूजा/Govardhan Puja

06 भाई–दूज/Bhai Duj
10 प्रतिहार षष्ठी व सूर्य षष्ठी (छठ पूजा)/ Pratihar Shashthi or Surya Shashthi (Chhat Puja)
24 श्री गुरु तेग बहादुर शहीदी दिवस/ Shri Guru Tegh Bahadur's Martyrdom Day

दिसम्बर / DECEMBER

सोम/Mon	मंगल/Tue	बुध/Wed	गुरु/Thu	शुक्र/Fri	शनि/Sat	रवि/Sun
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

25 क्रिसमस दिवस/Christmas Day

24 क्रिसमस पूर्व संध्या/Christmas Eve

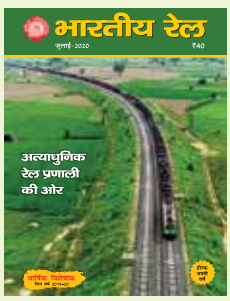

dianrailways.gov.in

Email : editorbhartiyarail@gmail.com

भारती
पत्रिका की ऑनलाइन सदस्य

STEP 1

ऑनलाइन सदस्यता हेतु **www.irctc.co.in** पर जाएं।

इस पेज के **विज्ञापन** (Promotions) पर जाएं।

आप सीधे www.irctctourism.com/ IRBRmag/#/home/hn पर भी जा सकते हैं।

❸ **'भारतीय रेल पत्रिका'** पर क्लिक करें।

STEP 3

❶ इस बॉक्स में यदि आप के पास आईआरसीटीसी का लॉग-इन, पासवर्ड है तो उसका उपयोग करें।

❷ लॉग-इन आईडी नहीं है तो गेस्ट लॉग-इन पर क्लिक करें।

❸ उसमें अपना ई-मेल तथा मोबाइल नंबर दर्ज करें।

❹ सबमिट बटन दबाएँ।

STEP 5

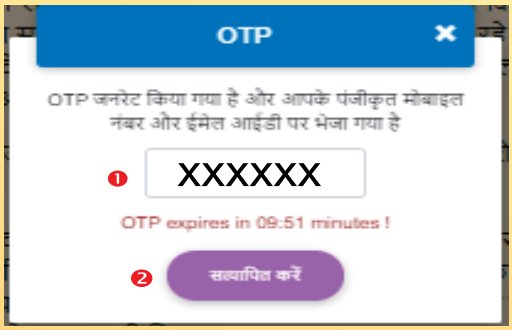

❶ आपके पंजीकृत मोबाइल एवं ई-मेल पर आए ओटीपी को बॉक्स में दर्ज करें एवं

❷ सत्यापित करें

STEP 6

❶ पेमेंट मोड (कार्ड, नेट बैंकिंग, यूपीआई, वॉलेट, इंटरनेशनल कार्ड तथा आईपे) एवं

❷ पेमेंट गेट-वे का ऑप्शन पसंद करें

❸ मेक पेमेंट का बटन दबाएं

ीय रेल
ता प्राप्त करने की सरल प्रक्रिया

STEP 2

❶ यदि आप रेलकर्मी हैं तो 'हां' पर या रेलकर्मी नहीं हैं तो 'नहीं' पर क्लिक करें।

❷ यदी 'हां' तो बॉक्स में अपना आरयूआईडी/ आईडी/पीपीओ नंबर तथा एक आधिकारिक आईडी की स्कैन कॉपी अपलोड करें।

❸ 'भारतीय रेल' पत्रिका के लिए 'हिंदी' को और 'इंडियन रेलवेज' पत्रिका के लिए 'अंग्रेजी' में क्लिक करें।

❹ एक, दो या तीन यानि जितने साल की सदस्यता चाहते हैं, उस बिन्दु पर क्लिक करें।

❺ नियम व शर्तों पर क्लिक करें तथा उसे ध्यान से पढ़ लें। यदि सहमत हों तो बॉक्स में टिक मार्क करें।

STEP 4

❶ अपना पूरा पता पिन कोड के साथ दर्ज करें

❷ सबमिट बटन दबाएँ।

STEP 7

❶ पेमेंट मोड की डीटेल भरें

❷ पेमेंट एमाउंट की जानकारी देखें।

❸ संतुष्ट होने पर ही 'पे' बटन को दबाएं।

➲ बैंक ओटीपी की प्रक्रिया पूर्ण होने पर पेमेंट सक्सेस फुल का मैसेज स्क्रीन पर दिखाई देगा।

कृपया ध्यान दें

- पेमेंट के समय नियमानुसार ट्रांजेक्शन शुल्क लगते हैं, कृपया पेमेंट करते समय देख लें।
- पेमेंट की प्रक्रिया पूर्ण होने पर आपको सदस्यता संबंधित जानकारी का एस.एम.एस. तथा मेल प्राप्त होगा।
- पेमेंट प्राप्त होते ही निर्धारित माह से आपको पत्रिका प्राप्त होनी शुरू हो जाएगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें - 011- 47845378, 47845380 ईमेल: irbrhelp@gmail.com

भारतीय रेल द्वारा रेलवे भर्ती परीक्षा का आयोजन

भारतीय रेल अपने 21 रेलवे भर्ती बोर्ड (आरआरबी) के माध्यम से तीन चरणों में मेगा भर्ती अभियान का आयोजन कर रही है, जो 15 दिसंबर, 2020 से शुरू हुआ। लगभग 1.4 लाख रिक्त पदों को भरने के लिए आयोजित किए जाने वाले इस भर्ती अभियान में 2.44 करोड़ से अधिक उम्मीदवार देश के विभिन्न शहरों में परीक्षा में शामिल हो रहे हैं।

सीईएन 03/2019 (पृथक् और मंत्रिस्तरीय श्रेणियां) के लिए परीक्षा का पहला चरण 15 दिसंबर, 2020 से शुरू होकर 18 दिसंबर तक चला। इसके बाद सीईएन 01/2019 (एनटीपीसी श्रेणियां) की परीक्षा 28 दिसम्बर, 2020 से शुरू होकर संभवत: मार्च, 2021 तक चलां। सीईएन नंबर आरआरसी-01/2019 (स्तर-1) के लिए तीसरी भर्ती परीक्षा संभवत: अप्रैल, 2020 से जून, 2021 के अंत तक आयोजित की जाएगी।

प्रथम चरण उम्मीदवारों को ई-मेल और एसएमएस के माध्यम से व्यक्तिगत तौर पर और आरआरबी की आधिकारिक वेबसाइटों पर उपलब्ध कराए गए लिंक के जरिए परीक्षा केंद्र का शहर, तिथि और परीक्षा की पाली के बारे में सूचित किया गया। ई-कॉल पत्र को डाउनलोड करने के लिए लिंक को सभी आरआरबी की आधिकारिक वेबसाइटों पर परीक्षा की तारीख से 4 दिन पहले लाइव कर दिया गया था। भर्ती के अगले चरणों के बारे में जानकारी नियत समय पर जारी कर दी गई थी।

आरआरबी ने कोविड-19 महामारी को ध्यान में रखते हुए बड़े पैमाने पर परीक्षा आयोजित करने के लिए व्यापक तैयारी की है और इसके लिए सरकार द्वारा जारी एसओपी का पालन किया जा रहा है। सामाजिक दूरी बनाए रखना, मास्क व सैनिटाइजर का अनिवार्य उपयोग, पालियों की संख्या में कटौती करके प्रतिदिन केवल दो पालियों में परीक्षा आयोजित करना आदि सुनिश्चित किया गया है। आरआरबी द्वारा यह सुनिश्चित करने के प्रयास किए जा रहे हैं कि जहां तक संभव हो उम्मीदवारों को उनके गृह राज्य में समायोजित किया जाए ताकि वे रात भर यात्रा करके अपने परीक्षा केंद्रों तक पहुंच सकें। महिला और पीडब्ल्यूडी उम्मीदवारों को उनके गृह राज्यों में समायोजित किया गया है। हालांकि, उम्मीदवारों के क्षेत्रवार विषम वितरण पर विचार किया जाए, तो अंतर-राज्य आवागमन अपरिहार्य होंगे। रेलवे जहां भी आवश्यक है और संभव है, उम्मीदवारों की यात्रा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विशेष परीक्षा ट्रेनों का परिचालन भी किया गया था। संबंधित राज्य सरकारों के मुख्य सचिवों से यह भी अनुरोध किया गया है कि आरआरबी को स्थानीय प्रशासन का सहयोग प्राप्त हो, ताकि सामाजिक दूरी बनाए रखना सुनिश्चित हो सके और सुरक्षित तरीके से सीबीटी का संचालन किया जा सके।

- पृथक और मंत्रिस्तरीय श्रेणियों (सीईएन 03/2019) के लिए कंप्यूटर आधारित टेस्ट (सीबीटी) का पहला चरण 15 दिसंबर, 2020 से 18 दिसंबर, 2020 तक किया गया।
- गैर तकनीकी लोकप्रिय श्रेणियों (एनटीपीसी - सीईएन 01/2019) के लिए सीबीटी का दूसरा चरण 28 दिसंबर, 2020 से मार्च, 2021 तक आयोजित किया जाएगा।
- स्तर-1 पदों (सीईएन आरआरसी 01/2019) के लिए सीबीटी का तीसरा चरण संभवत: अप्रैल, 2020 से जून, 2021 के अंत तक आयोजित किया जाएगा

थर्मो गन का उपयोग करके प्रवेश द्वार पर तापमान के लिए उम्मीदवारों की जाँच की जाएगी। निर्धारित सीमा से अधिक तापमान वाले उम्मीदवारों को परीक्षा स्थल के अंदर जाने की अनुमति नहीं दी जा रही है। ऐसे उम्मीदवारों के पुनर्निर्धारण से सम्बंधित सूचना उनके पंजीकृत ई-मेल और मोबाइल नंबर पर भी भेजी जाएगी। ऐसे उम्मीदवारों की फिर से निर्धारित परीक्षा की सटीक तारीख बाद में सूचित की है। उम्मीदवार को अपने मास्क का उपयोग करना है। उम्मीदवार को प्रवेश द्वार पर निर्धारित प्रारूप में कोविड-19 स्व-घोषणा प्रस्तुत करना होगा और ऐसा नहीं करने पर उसे परीक्षा स्थल में प्रवेश नहीं दिया जाएगा। मुख्य द्वार से परीक्षा-लैब तक कोविड-19 प्रोटोकॉल के अनुसार भीड़ प्रबंधन की उचित व्यवस्था की गई है। प्रत्येक पाली के बाद और दूसरी पाली शुरू होने से पहले परीक्षा केंद्र को कीटाणुरहित (सैनीटाइज) किया जाता है।

कोविड-19 के दौरान सीबीटी में शामिल उम्मीदवारों और अन्य कार्मिकों के स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए, सभी प्रासंगिक प्रोटोकॉल / दिशानिर्देशों का कड़ाई से पालन किया जाता है। कोविड-19 के संबंध में केंद्र और संबंधित राज्य सरकारों द्वारा जारी किए गए नवीनतम निर्देशों, दिशानिर्देशों और आदेशों का अनुपालन भी सुनिश्चित किया जाएगा। ■

रेल मंत्रालय
(रेलवे बोर्ड)

भारतीय रेल में नौकरी दिलाने का वादा करने वाले धोखेबाज़ों से सतर्क और सावधान रहें।

भारतीय रेल को कई शिकायतें मिल रही हैं, जिसमें नौकरी के इच्छुक उम्मीदवारों और आम जनता को भारतीय रेल में नौकरी दिलवाने के झूठे वादे, प्रभाव, धन और अनुचित साधनों के साथ या फर्जी नियुक्ति पत्रों के साथ धोखा दिया गया है। ज़्यादातर मामलों में, धोखेबाजों ने रेलवे बोर्ड/रेलवे भर्ती एजेंसीज़ [रेलवे भर्ती बोर्ड (आरआरबी)/रेलवे भर्ती सैल्स (आरआरसी)]/ज़ोनल रेलवे कार्यालयों में परिचितों का दावा करके पीड़ितों को धोखा दिया है। इसके अलावा, साइबर अपराधियों द्वारा फर्जी वेबसाइटें भी बनाई जा रही हैं ताकि इच्छुक उम्मीदवारों को उनके आवेदन शुल्क का धोखा दिया जा सके। पुलिस जांच में ऐसे मामले भी सामने आए हैं जहां पीड़ितों को रेलवे अस्पतालों या रेलवे कार्यालयों में ले जाया गया।

नौकरी के अभिलाषी कृपया ध्यान दें

- रेलवे भर्ती एजेंसीज़ [रेलवे भर्ती बोर्ड (आरआरबी)/रेलवे भर्ती सैल्स (आरआरसी)] में भर्ती प्रक्रिया पूरी तरह से कम्प्यूटरीकृत है और चयन पूरी तरह से उम्मीदवारों की योग्यता के आधार पर किया जाता है।
- रेलवे भर्ती एजेंसीज़ [रेलवे भर्ती बोर्ड (आरआरबी)/रेलवे भर्ती सैल्स (आरआरसी)] कभी भी किसी एजेंट या चालू कोचिंग सेंटर को नियुक्त नहीं करते हैं।
- केवल आरआरबी /आरआरसी की आधिकारिक वेबसाइटों और राष्ट्रीय समाचार पत्रों / रोज़गार समाचार में प्रकाशित विज्ञापन ही प्रामाणिक हैं और उन पर ही भरोसा किया जाना चाहिए।
- उम्मीदवारों को वेबसाइटों की स्पेलिंग की सूक्ष्मता से जांच करने की सलाह दी जाती है क्योंकि धोखेबाज़, उम्मीदवारों को धोखा देने के लिए समान प्रकार के वेब पेज / वेबसाइटों का उपयोग करते हैं।

सूचना देने और संदेह के मार्गदर्शन और स्पष्टीकरण के लिए कृपया फोन संख्या **182** पर संपर्क करें

यदि किसी दुकान अथवा स्थान पर प्रदर्शित कोई विज्ञापन जाली है या वास्तविक तो पहचान कैसे करें:

- रेलवे भर्ती एजेंसीज़ [रेलवे भर्ती बोर्ड (आरआरबी)/रेलवे भर्ती सैल्स (आरआरसी)] की आधिकारिक वेबसाइट का अवलोकन करें।
- ''रोज़गार समाचार'' समाचार पत्र में विज्ञापन देखें।

भारतीय रेल में नौकरी दिलाने में आपकी मदद करने का दावा करने वाले या पैसे के एवज में रेलवे में नौकरी देने का दावा करने वाले या रेलवे में नौकरी दिलाने हेतु यदि कोई आपसे मोबाइल फोन या ई–मेल के जरिये संपर्क करता है तो क्या करें:

(i) सूचना देने और संदेह के मार्गदर्शन और स्पष्टीकरण के लिए कृपया **फोन संख्या 182** पर संपर्क करें।

(ii) संबंधित आरआरबी /आरआरसी को सूचित करें और ऐसे किसी भी व्यक्ति या विज्ञापनों के बारे में आरआरबी /आरआरसी को ई–मेल भेजें (संबंधित आरआरबी का ईमेल पता उनकी सम्बद्ध वेबसाइटों से देखा जा सकता है)

(iii) आप नज़दीकी पुलिस स्टेशन में शिकायत भी दर्ज करा सकते हैं।

आपकी सतर्कता, जागरूकता और समय पर की गई कार्यवाही न केवल आपको और आपके पैसे को बचाने के लिए ही उपयोगी होगी, बल्कि अन्य लोगों को भी धोखेबाज़ों से बचाने में सहायक बनेगी। आप सभी पारदर्शी रेलवे चयन प्रक्रिया हेतु इस अभियान का हिस्सा बने।

हमें फॉलो करें: /RailMinIndia

भारतीय रेल में बिजली लाइन वाली सबसे लंबी रेल सुरंग की रोचक जानकारी

श्री विमलेश चन्द्र

रेल सुरंगें हमेशा से रोमांचक जटिलताओं से भरी रही हैं। भारतीय रेल की सुरंगों के निर्माण में भी अनेक जटिल तकनीकों का उपयोग किया जाता रहा है। भारतीय रेल के इतिहास में बनने वाली सर्वप्रथम सबसे लम्बी रेल सुरंग पारसिक सुरंग थी। इसे तत्कालीन ग्रेट इंडियन पेनिनसुला रेलवे ने बनवाया था। यह रेल सुरंग, मध्य रेल के कालवा और मुम्ब्रा स्टेशन के बीच स्थित है तथा ठाणे और दिवा सेक्शन में आती है। इसको बनाने का निर्णय वर्ष 1906 में लिया गया था। निर्माण कार्य वर्ष 1913 में शुरू हुआ था तथा वर्ष 1916 में पूरा हुआ था। इस सुरंग की लम्बाई 1,031 मीटर है। यह सुरंग एशिया में बनी तत्कालीन पुरानी तथा लंबी रेल सुरंगों में से एक है। तत्कालीन ग्रेट इंडियन पेनिनसुला रेलवे (मध्य रेल) के भोर घाट और थुल घाट का बिद्युतीकरण का कार्य वर्ष 1929-30 में 1,500 वोल्ट डीसी सप्लाई से किया गया था। काफी दिनों के बाद भारत की एक नई और सबसे लम्बी रेल सुरंग बनाई गई थी, जिसका नाम मंकीहिल सुरंग है। यह 2,156 मीटर लम्बी है। इसे 5 जुलाई, 1982 को खोला गया था। वर्ष 1998 में कोंकण रेलवे के चालू होने के पहले तक इस मंकीहिल सुरंग को सबसे लम्बी सुरंग होने का दर्जा मिला रहा। इसके बाद बड़ी लाइन की सबसे लंबी रेल सुरंग का दर्जा, कोंकण रेलवे में करबुड़े सुरंग को मिला। यह 6,506 मीटर लंबी है।

भारतीय रेल में किसी एक खंड में बड़ी लाइन के किसी बड़े सेक्शन में सबसे ज्यादा रेल सुरंग कोंकण रेलवे में ही है। इसके 760 किमी लंबे रेल खंड में कुल 92 सुरंगें हैं। वर्तमान समय में भारतीय रेल में सबसे लंबी रेल सुरंग पीरपंजाल रेल सुरंग है। यह 11.215 किमी लंबी है। यह रेलवे सुरंग जम्मू-ऊधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल खंड में स्थित है। कुछ और लंबी सुरंगों में पूर्वोत्तर सीमा रेलवे में बोराई सुरंग (3.235 किमी), मध्य रेल में पनवेल और कर्जत के बीच चौक सुरंग (2.83 किमी), दक्षिण पूर्व रेलवे में सारंदा सुरंग (2.0 किमी) लंबी सुरंगों में शामिल हैं। तत्कालीन मीटर गेज की रेल लाइनों में पूर्वोत्तर सीमा रेलवे की मीटर गेज रेल खंड में सबसे ज्यादा रेलवे सुरंगे बनी थीं, जिनकी लंबाई भी काफी थी, किन्तु वर्ष 2016 में इन सबका गेज परिवर्तन हो चुका है। उस समय मीटर गेज लाइन की सबसे लंबी रेल सुरंग, त्रिपुरा राज्य में खोवाई जिले में लुम्बडिंग मण्डल में लुम्बडिंग-अगरतल्ला मीटर गेज रेल खंड में तेलियामुरा स्टेशन के पास खोवाई सुरंग थी, जो 2,472 मीटर लंबी थी। यह सुरंग वर्ष 2008 में बनी थी। वर्तमान समय में भारतीय रेल में मीटर गेज के किसी एक रेल खंड में सबसे

रापुरु रेल सुरंग

ज्यादा रेल सुरंगें नीलगिरि पर्वतीय रेलवे में स्थित हैं। इसके 45.88 किमी लंबे खंड में कुल 16 सुरंगें हैं, जिनमें सबसे लंबी रेल सुरंग लगभग 100 मीटर लंबी है। भारतीय रेल में किसी एक खंड में सबसे ज्यादा रेल सुरंगें नैरोगेज रेल खंड कालका-शिमला रेल मार्ग में हैं। इसके 95.6 किमी रेलमार्ग में कुल 102 सुरंगें हैं। वर्तमान समय में भारत में नैरोगेज रेल लाइन की सबसे लंबी रेल सुरंग, कालका-शिमला रेलवे में बड़ोग सुरंग है, जो 1,114 मीटर लंबी है।

भारतीय रेल में बिजली लाइन वाली सबसे लम्बी रेल सुरंग : रापुरु रेल सुरंग

भारतीय रेल में बिद्युतीकरण की शुरुआत सबसे पहले तत्कालीन जीआईपी रेलवे द्वारा 3 फरवरी, 1925 को हुई थी। इसलिए रेल सुरंग में बिद्युतीकरण की शुरुआत भी इस रेलवे के थाल घाट और भोर घाट में हुई थी। एक तरह से बिद्युतीकरण वाली सबसे लंबी रेल सुरंग यहीं पर थी। तत्कालीन बिजली वाली लंबी रेल सुरंगें भोर घाट और थुल घाट में हैं। वर्ष 1982 में बनी मंकी हिल सुरंग के रिकॉर्ड को अब जाकर 25 जून, 2019 को रापुरु सुरंग ने तोड़ा है। दक्षिण मध्य रेलवे में आंध्र प्रदेश के ओबुलवारीपल्ली और कृष्णापट्टनम पोर्ट को जोड़ने के लिए 25 जून, 2019 को रापुरु सुरंग को बनाकर चालू किया गया था। इसकी लंबाई 6.642 किमी है। इसकी ऊंचाई (रेल स्तर से छत तक) 6.5 मीटर है और संपर्क तार की न्यूनतम ऊंचाई 5.2 मीटर पर बनाए रखी गई है। यह सुरंग चेरलापल्ली और रापुरु स्टेशन के बीच बनी है। यह बिजली वाली रेल लाइन है, जो अभी केवल मालगाड़ी का रेल मार्ग है। इसके निर्माण में 43 माह का समय लगा था तथा इसे बनाने में कुल 437 करोड़ रुपये की लागत आई थी। यह रेल सुरंग माल ढुलाई के आवागमन के लिए कृष्णापत्तनम बंदरगाह को देश के आंतरिक क्षेत्र के बीच रेल संपर्क प्रदान करती है। इससे गुंटकल डिवीजन से कृष्णापट्टनम तक आने वाली ट्रेनों के लिए 72 किमी की दूरी कम हो जाती है। एक तरह से यह चेन्नई-हावड़ा और चेन्नई-मुंबई रेल मार्गों पर सबसे छोटा रास्ता भी प्रदान करती है। इस सुरंग के निर्माण के लिए न्यू ऑस्ट्रेलियन टनलिंग मेथड का इस्तेमाल किया गया था। इस सुरंग के अंदर 10 मीटर के अंतराल पर एलइडी लाइटिंग दी गई है। इसको बिजली सप्लाई के लिए दो ट्रैक्शन पॉवर सप्लाई सब-स्टेशन चेरलोपल्ली के पास और रैपुरु के पास बनाए गए हैं। वेंकटचलम-ओबुलवरिपल्ली विद्युतीकृत रेलवे लाइन के मार्ग में कुल 9 रेलवे स्टेशन, 146 रेल पुल, 60 सड़क भूमिगत पुल और दो सुरंगें हैं। इसमें कोई समपार फाटक भी नहीं है। यह बैलास्ट लेस रेल ट्रैक है। इसकी बिजली लाइन की मरम्मत करने के लिए रापुरु में ही अनुरक्षण डिपो बनाया गया है। इसके ओएचई वायर को टाइट रखने के लिए दक्षिण कोरिया की तकनीक अपनाई गई है। हाल-फिलहाल में इस सबसे लंबी विद्युतीकृत सुरंग के रिकार्ड के टूटने की कोई संभावना नहीं है। कोंकण रेलवे की करबुड़े सुरंग, जिसका बिद्युतीकरण हो रहा है, यह इससे कम लंबी है। इससे लंबी तीन सुरंग हैं। एक त्रिवेन्द्रम के पास बन रही है, जिसकी लंबाई 9 किमी होगी, जबकि दूसरी जम्मू-ऊधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल खंड में बन रही है, जिसकी लंबाई 8 किमी होगी। वर्तमान में 11.215 किमी सबसे लंबी पीर पंजाल सुरंग है ही, लेकिन पीरपंजाल सुरंग के बिद्युतीकरण में अभी काफी देरी है। इस तरह से यह रोचक रिकार्ड अभी बहुत दिनों तक रापुरु रेल सुरंग के नाम बना रहेगा। विश्व की सबसे लंबी रेल सुरंग 57 किमी लंबी है, जो विद्युतीकृत है। ■

सहायक मंडल यांत्रिक इंजीनियर
अहमदाबाद

करवुडे रेलवे सुरंग

नैरोगेज की सबसे लंबी बड़ोग रेल सुरंग

भारतीय रेल ने 'अस्पताल प्रबंधन सूचना प्रणाली' परीक्षण परियोजना' शुरू की

भारतीय रेल ने अपने कर्मचारियों की भलाई के लिए प्राथमिकता के तौर पर एक और बड़ी आईटी पहल शुरू की है। रेलवे बोर्ड के रेलवे स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक डॉ. बी. पी. नंदा ने 11 दिसम्बर, 2020 को वर्चुअल माध्यम से इस परियोजना की शुरुआत की। इस अवसर पर दक्षिण मध्य रेलवे के महाप्रबन्धक, श्री गजानन माल्या, भारतीय रेलटेल कॉरपोरेशन के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक श्री पुनीत चावला और पीसीएमडी के डॉ. प्रसन्न कुमार तथा एससीआर के अधिकारी भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर अपने संबोधन में डॉ. बी.पी.नंदा ने कहा कि सूचना प्रौद्योगिकी की सहायता से कर्मचारियों को सर्वोत्तम स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएं प्रदान करने का सपना सच हो गया है। एचएमआईएस भारतीय रेल द्वारा तैयार स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों में एक बड़ा बदलाव लाएगा। नई प्रणाली स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार लाएगी और पारदर्शी तरीके से संसाधनों के उपयोग में सहायता करेगी। यह अस्पतालों में मरीजों के प्रतीक्षा समय को कम-से-कम करेगी और हर समय डॉक्टरों की टीम को मेडिकल रिकॉर्ड उपलब्ध कराएगी। डॉ. नंदा ने भारतीय रेल में विशिष्ट चिकित्सा पहचान (यूएमआईडी) का शुभारंभ करने और आईटी की नई पहल एचएमआईएस में अग्रणी योगदान के लिए दक्षिण मध्य रेलवे के प्रयासों की सराहना की।

एससीआर के महाप्रबन्धक श्री गजानन माल्या ने कहा कि एससीआर के लिए एचएमआईएस परियोजना का हिस्सा होना गर्व का क्षण है। रेलवे के कर्मचारियों और उनके लाभार्थियों के लाभ के लिए भारतीय रेल एक और आईटी एप्लिकेशन लॉन्च कर रही है। एससीआर ने रेलवे में ई-ऑफिस, ई-ड्रॉइंग अप्रूवल सिस्टम, यूएमआईडी इत्यादि जैसी कई आईटी पहलों का बीड़ा उठाया है। उन्होंने कहा कि एचएमआईएस के कार्यान्वयन से काफी आंकड़े (जैसे इलेक्ट्रॉनिक मेडिकल रिकॉर्ड) एकत्र हो सकेंगे और न केवल उपचारात्मक प्रक्रियाओं में, बल्कि निवारक चिकित्सा प्रणालियों में भी चिकित्सा बिरादरी को मदद मिलेगी। उम्मीद है कि यह दवा प्रबंधन को बेहतर बनाएगा और बेहतर संसाधन प्रबंधन करेगा।

रेलटेल कॉर्पोरेशन के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक, श्री पुनीत चावला ने कहा कि एचएमआईएस के कार्यान्वयन से सभी हितधारकों को हेड क्वार्टर से संबद्ध अस्पतालों और सहायक केन्द्रों के एकीकरण का लाभ होगा। इस परियोजना में 20 से अधिक मॉड्यूल होने की संभावना है और इससे चिकित्सा बिरादरी और अस्पताल के लाभार्थियों को अत्यधिक लाभ होगा।

रेलवे में एचएमआईएस के बारे में

एचएमआईएस को भारतीय रेल ने रेलटेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड के साथ समन्वय में विकसित किया है। एचएमआईएस का उद्देश्य अस्पताल प्रशासन गतिविधियों के लिए एकल खिड़की सुविधा प्रदान करना है, जैसे कि नैदानिक, निदान, फार्मेसी, परीक्षा, औद्योगिक स्वास्थ्य आदि। परिकल्पित समाधान के प्राथमिक उद्देश्य निम्न हैं:

- प्रभावी रूप से सभी स्वास्थ्य सुविधाओं और उसके संसाधनों का प्रबंधन करना
- प्रशासनिक चैनल में अस्पतालों के प्रदर्शन पर नजर रखना
- अपने लाभार्थियों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं मुहैया कराना
- मरीज के प्रतीक्षा समय में सुधार करना
- सभी रोगियों का ईएमआर (इलेक्ट्रॉनिक मेडिकल रिकॉर्ड) बनाना और उसे कायम रखना।

वर्तमान में, एचएमआईएस के 3 मॉड्यूल - पंजीकरण, ओपीडी डॉक्टर डेस्क और फॉर्मेसी - लागू किए गए हैं। ये तीनों मॉड्यूल्स केन्द्रीय अस्पताल, लालगुडा में परीक्षण के आधार पर लागू होने जा रहे हैं और एससीआर पर सभी स्वास्थ्य इकाइयों में धीरे-धीरे लागू किए जाएंगे। पंजीकरण मॉड्यूल रोगी को कोई भी दिक्कत दिए बिना सहज तरीके से उसके स्वत: सत्यापन के साथ यूएमआईडी का एकीकरण करता है। ओपीडी डेस्क मॉड्यूल रोगी परीक्षा और निदान विवरण की सभी प्रक्रियाओं को कवर करता है जो इलेक्ट्रॉनिक मेडिकल रिकॉर्ड बनाने में मदद करेगा। फॉर्मेसी मॉड्यूल डॉक्टर द्वारा निर्धारित दवाओं को आसानी से वितरित करता है और इन्वेंट्री प्रबंधन का अनुकूलन करता है। ■

एलएचबी कोच उत्पादन में नए कीर्तिमान स्थापित करता आरसीएफ

रेल कोच फैक्टरी, कपूरथला (आरसीएफ) रेल डिब्बों के उत्पादन में नए कीर्तिमान स्थापित कर रही है। आरसीएफ ने इस वित्तीय वर्ष में अब तक केवल 190 कार्य दिनों में ही रिकार्ड 932 एलएचबी डिब्बों का निर्माण किया है जबकि पिछले वित्तीय वर्ष में आरसीएफ ने कुल 293 कार्य दिवसों में 928 एलएचबी डिब्बों का निर्माण किया था। पिछले वित्तीय वर्ष की 11 दिसंबर तक आरसीएफ ने 573 एलएचबी डिब्बों सहित 926 कोच बनाए थे जबकि इसी अवधि में आरसीएफ ने 359 अतिरिक्त एलएचबी डिब्बों का निर्माण किया है।

यह ध्यान रहे कि इस वित्तीय वर्ष में पहले 22 दिन लॉक डाउन के कारण फैक्ट्री बंद रही थी और 23 अप्रैल से मात्र 50 प्रतिशत स्टॉफ से काम शुरू हुआ था जबकि देश की विभिन्न बड़ी औद्योगिक इकाइयों में निर्माण कार्य बंद था। 18 मई से आरसीएफ से बाहर रहने वाले स्टॉफ को काम पर बुलाया गया जबकि 3 जून से शेष कर्मचारियों ने अपनी ड्यूटी ज्वाइन की।

इस वित्तीय वर्ष में अब तक आरसीएफ ने 263 अधिक क्षमता और गति वाले पार्सल वैन कोच, 196 एसी टू और थ्री टियर स्लीपर कोच बनाए हैं।

- **पिछले वित्तीय वर्ष के एलएचबी डिब्बों कुल उत्पादन को दिसंबर में ही किया पार**

यह भी ध्यान देने योग्य है कि नवम्बर महीनें में आरसीएफ ने प्रतिदिन 5.9 कोचों का रिकार्ड उत्पादन कर एक और मील का पत्थर स्थापित किया था। इस वर्ष जुलाई और सितंबर महीनों में उच्चतम मासिक एलएचबी कोच उत्पादन देने के बाद अक्तूबर 2020 में 5.88 कोचों का एवरेज प्रतिदिन रिकार्ड उत्पादन प्राप्त किया था। नवम्बर महीने में आरसीएफ ने सिर्फ 21 वर्किंग दिनों में 124 डिब्बों का निर्माण कर 5.9 की औसत प्रतिदिन उत्पादन दर प्राप्त की, जोकि आरसीएफ के इतिहास में सबसे ज्यादा है।

नवम्बर महीने में ही आरसीएफ ने और भी कई उपलब्धियाँ प्राप्त कीं। 6 नवम्बर को आरसीएफ ने 24 टन के भार की ढुलाई क्षमता और 130 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से जाने वाला हल्का और अधिक उपयोगी पार्सल कोच मार्क-II तैयार कर रवाना किया था। इसके अलावा 18 नवम्बर को देश का पहला हाई स्पीड डबल डेकर कोच तैयार करके रवाना किया, जिसमें 120 आरामदायक सीटें लगाई गई हैं तथा 160 किमी प्रति घंटे की स्पीड से चलने में सक्षम है।

आरसीएफ की उत्पादकता का लगातार विकास पथ पर बढ़ना देश के आर्थिक विकास में एक महत्त्वपूर्ण योगदान साबित हो रहा है। कोविड संकट के बीच, जहां दुनिया औद्योगिक विकास में तेज गिरावट का सामना कर रही है, वहीं आरसीएफ ने अपने कोच उत्पादन में काफी वृद्धि की है।

सरकार की 'मेक इन इंडिया' पहल के तहत यह वृद्धि, आरसीएफ को नई ऊंचाइयां प्रदान कर रही है। इस वित्तीय वर्ष में आरसीएफ उन एलएचबी डिब्बों का निर्माण कर रहा है जिनका उत्पादन पारम्परिक डिब्बों के उत्पादन की तुलना में अधिक है, लेकिन आरसीएफ ने लगातार अपने उत्पादन में वृद्धि को बनाए रखा है। ■

एमसीएफ द्वारा प्रथम तेजस रेक का विनिर्माण

आधुनिक रेल डिब्बा कारखाने ने अपने उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि कर एक नए चरण में प्रवेश किया है। दिनांक 27 नवम्बर, 2020 को एमसीएफ द्वारा विनिर्मित प्रथम 18 कोचों के शयनयान स्मार्ट तेजस रेक को महाप्रबन्धक श्री विनय मोहन श्रीवास्तव ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

वित्तीय वर्ष 2020-21 के उत्पादन कार्यक्रम में रेलवे बोर्ड ने एमसीएफ को तेजस रेक के स्लीपर वेरिएंट के निर्माण का कार्य दिया है। एमसीएफ द्वारा निर्मित तेजस कोचों में LWFAC (23 नं.), LWACCW (56 नं.), LWACCN (132 नं.), LWCBAC (13 नं.) एवं LWLRRM (23 नं.) होंगे। प्रस्तावित रेक संरचना में 18 कोच होंगे जिसमें प्रथम श्रेणी एसी-01 कोच, एसी बफेट कार-01 कोच, पावर कार-02 कोच, एसी 3 टियर स्लीपर-10 कोच और एसी 2 टियर-04 कोच। समय की कमी को ध्यान में रखते हुए तेजस कोचों का निर्माण दो संस्करणों में करने की योजना बनाई गई है।

तेजस कोच के पहले संस्करण को तेजस 1.0 के रूप में नामित किया गया है, जिसमें ईपी असिस्ट ब्रेक, डस्ट सील गैंग-वे और सेमी परमानेंट कपलर को छोड़कर लगभग सभी उन्नत सुविधाएं होंगी। ये सभी सुविधाएं तेजस के दूसरे संस्करण तेजस 2.0 में दी जाएंगी। ये कोच यात्रियों को आराम एवं सुरक्षा प्रदान करने वाली सभी नवीनतम सुविधाओं से सुसज्जित होंगे। इन कोचों का रख-रखाव करने वाले कर्मचारियों के लिए ऑन बोर्ड निगरानी की व्यवस्था है और यह उच्च गति प्रदान करने वाले कोच होंगे।

तेजस कोच की अन्य सुविधाएँ

- **स्वाचालित प्लग डोर** - सभी मुख्य प्रवेश द्वार केन्द्रीयकृत व गार्ड द्वारा नियंत्रित होंगे तथा जब तक सभी दरवाजे बंद नहीं होंगे, ट्रेन शुरू नहीं होगी।
- **बायो-वैक्यूम टॉयलेट सिस्टम** - इस सिस्टम के द्वारा टॉयलेट में बेहतर फ्लशिंग की व्यवस्था की गई है, जिससे टॉयलेट अधिक स्वच्छ रहेगा और पानी की बचत होगी।
- **बेहतर टॉयलेट यूनिट** - शौचालय को टच-लेस फिटिंग, मार्बल फिनिश के साथ एंटी ग्राफिटी कोटिंग, जेल कोटेड शेल्फ, नई डिजाइन के डस्टबिन, डोर लैच एक्टिवेटेड लाइट एवं इंगेजमेंट डिस्पले का प्रयोग किया गया है।
- **एसी 3 टियर/एसी 2 टियर कोचों में कोरूगेटेड साइडवाल** - इससे कोच देखने में अधिक खूबसूरत लगेगा।
- **एअर सस्पेंशन बोगी** - बेहतर सवारी के लिए 120 KN का एअर सस्पेंशन, सेकेंडरी सस्पेंशन में दिया जाएगा।
- **बाहरी एवं आंतरिक संरचना** - यात्रियों के सुखद अनुभूति के लिए इन कोचों के बाहरी एवं आतंरिक संरचना में पीवीसी फिल्म प्रदान की गई है।
- **स्मार्ट फीचर्स** - ये कोच स्मार्ट फीचर्स के साथ सुसज्जित होंगे, जिन्हें एक केन्द्रीयकृत प्रसंस्करण इकाई द्वारा संचालित किया जा सकेगा, जिन्हें यात्री सूचना कोच कंप्यूटिंग यूनिट (PICCU) का नाम दिया गया है। जिनमें मूल रूप से निम्नलिखित आइटम शामिल हैं-
  - यात्री घोषणा/यात्री सूचना प्रणाली (PA/PIS)
  - डिजिटल गंतव्य बोर्ड
  - वाई-फाई इंफोटेन्मेंट सिस्टम
  - सीसीटीवी
  - चिकित्सा और सुरक्षा आपातकाल के लिए आपातकालीन टॉक बैक
  - बियरिंग, व्हील एवं WSP के लिए ऑन बोर्ड कंडीशन मॉनिटरिंग सिस्टम
  - HVAC - हवा की गुणवत्ता मापने के लिए
  - स्विच बोर्ड कैबिनेट मॉनिटरिंग सिस्टम
  - टॉयलेट ऑक्यूपेंसी सेंसर
  - उर्जा मीटर, हवा की निकासी के लिए पंखा एवं पानी

का स्तर दिखाने वाले उपकरण लगे हैं।

- **फायर अलार्म, फायर डिटेक्शन एवं सप्रेशन सिस्टम** - सभी कोच में ऑटोमैटिक फायर अलार्म और फायर डिटेक्शन सिस्टम लगाया गया है। इसके अतिरिक्त पावर कार अग्नि शमन प्रणाली से भी सुसज्जित होगी। इस सिस्टम में स्मोक सेंसर्स भी लगे होंगे, जो हवा में धुएं की मौजूदगी का पता लगाते हैं, साथ ही, टॉयलेट्स में हीट एक्टिवेटेड सेंसर्स भी दिए गए हैं, जो फायर सिस्टम को सक्रिय करते हैं और ऑडियो-विजुअल अलार्म प्रदान करते हैं। इस सिस्टम की केन्द्रीयकृत निगरानी भी की जा सकेगी और आग लगने की स्थिति में यह सिस्टम स्वचालित रूप से कार्य करने लगेगा। पावर कार का फायर सप्रेशन सिस्टम वॉटर मिस्ट स्प्रे तकनीक पर आधारित है।
- **बेहतर आंतरिक साज-सज्जा** - इन कोचों की सीटें और बर्थ पीयू फोम की बनी होगी ज्यादा आरामदेह होंगी। खिड़कियों पर पर्दे की बजाय रोलर ब्लाइंड लगे होंगे।
- **पुश-पुल व्यवस्था** - संस्करण-01 और 02 दोनों में प्रदान की गई है।
- **साइलेंट पॉवर कार** - यह संस्करण-02 में प्रदान की जाएगी।
- **डस्ट सील गैंग-वे** - यह संस्करण-02 में प्रदान की जाएगी। बेहतर सौंदर्य और यात्रियों की सुरक्षा के अलावा यह ध्वनि के स्तर, गंदगी, रेत और पानी के प्रवेश को कम करता है।
- **सेमी परमानेंट कपलर**- यह संस्करण-02 में प्रदान की जाएगी।
- **ईपी असिस्टेड ब्रेक सिस्टम** - यह संस्करण-02 में प्रदान की जाएगी। इस ब्रेक सिस्टम में स्टील ब्रेक डिस्क, सिन्जेड पैड और इलेक्ट्रो-न्यूमेटिक प्रावधान होंगे, जो 200 किलोमीटर/घंटा तक की गति क्षमता प्रदान करने के अलावा आपाताकलीन ब्रेकिंग दूरी को भी कम करते हैं। ■

सर्वोत्तम उत्पादन इकाई की शील्ड एमसीएफ को

एमसीएफ अपने विकास की श्रृखला में लगातार आगे बढ़ रहा है। इस विकास और बढ़ते कोचों के विनिर्माण की गति का मूल्यांकन करके रेल मंत्रालय द्वारा लगातार दूसरी बार वर्ष 2019-20 के लिए एमसीएफ को सर्वोत्तम उत्पादन इकाई के रूप में चयनित किया गया है। एमसीएफ को वर्ष 2019-20 के लिए संयुक्त रूप से पर्यावरण एवं स्वच्छता शील्ड प्रदान की गई है। ■

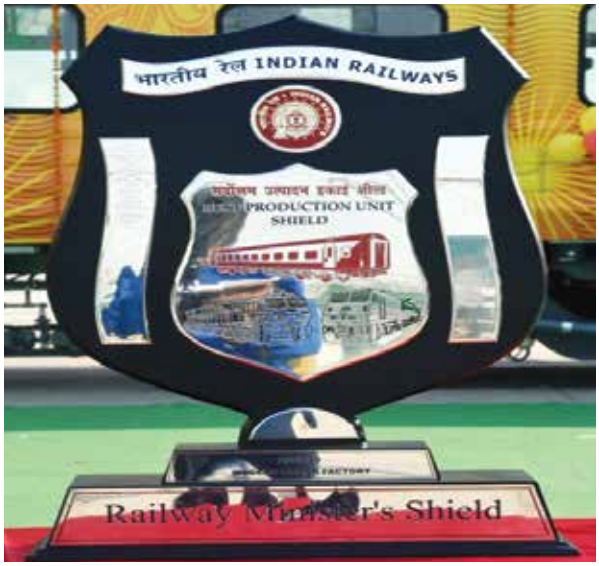

आप सब का
भारतीय रेल
के साथ अटूट रिश्ता है
भारतीय रेल के साथ आप अपने संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, गीत लेख आदि हिन्दी में हमें भेज सकते हैं। पसंद आने पर रचनाओं को हम रेल मंत्रालय की आधिकारिक मासिक पत्रिका
'भारतीय रेल'
में प्रकाशित करेंगे
ई-मेल : editorbhartiyarailrb@gmail.com
पसंद किए गए लेख की जानकारी ई-मेल से दी जाएगी। प्रकाशित रचनाओं के लिए रेल मंत्रालय द्वारा निर्धारित मानदेय भी दिया जाएगा
शर्तें लागू

टेक्नोलॉजी का उपयोग कर मध्य रेल ने दी कोविड को फाइट

मध्य रेल बहादुरी से कोविड का मुकाबला कर अपने कोरोना वारियर्स की मदद से महामारी का सामना करने में बेहद सफल रहा है। इसने नवीनतम तकनीक के प्रभावी उपयोग के साथ संकट का मुकाबला करने का बेहतरीन उदाहरण दिया है। यह देखते हुए कि कोरोना वायरस हवा और स्पर्श के माध्यम से फैलता है, मध्य रेल की टीम काफी श्रमसाध्य प्रयासों के बाद, रोबोट और रोबोटिक उपकरणों का उपयोग करने के समाधान के साथ आयी और यात्रियों के साथ काम करने में फ्रंटलाइन कर्मचारियों की मदद की और एक सुरक्षित और कुशल तरीके से कोविड मामलों के उपचार किए।

पैसेंजर स्क्रीनिंग

अपनी यात्रा शुरू करने और कोविड मुक्त और सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करने के लिए स्टेशनों पर पहुंचने वाले यात्रियों की स्क्रीनिंग के लिए मध्य रेल ने 'फेरी आई' और 'द रोबोट कैप्टन अर्जुन' इन हाउस तैयार किए। ये दोनों रोबोट डिवाइस थर्मल आधारित स्क्रीनिंग सिस्टम हैं जो शरीर के तापमान को पढ़ने और रिकॉर्ड करने के लिए हीट सेंसर का उपयोग करते हैं। 'फेरी आई' एक स्थापित कैमरा है जहां यात्री स्क्रीन से गुजरते हैं, जबकि 'कैप्टन अर्जुन' एक चलता-फिरता उपकरण है। इसमें यात्री को खुद को स्कैन करना पड़ता है। इसके अलावा 'कैप्टन अर्जुन' के पास ऑडियो-विजुअल सुविधा, सेंसर-आधारित सैनिटाइजर और मास्क डिस्पेंसर हैं और फर्श को भी साफ करने के लिए पहियों से लैस है।

सेफ टिकटिंग और चेकिंग

एक सुरक्षित टिकटिंग प्रक्रिया हेतु मध्य रेल ने ऑटोमेटेड टिकटिंग मैनेजिंग एक्सेस (ATMA) का उपयोग किया। पीआरसी जारी किए गए और यूटीएस ने सुरक्षित तरीके से अनारक्षित टिकट जारी करने के लिए टिकट चेकिंग कर्मियों की मदद करने के लिए ओसीआर और क्यूआर कोड स्कैनिंग सुविधा के साथ चेकइन मास्टर नामक एक मोबाइल ऐप भी लॉन्च किया है। इसके अलावा इस ऐप का उपयोग टिकट चेकिंग स्टाफ की उपस्थिति और वास्तविक समय की निगरानी के लिए भी किया जा रहा है। पोर्टेबल एम्प्लीफायर और माइक्रोफोन के साथ एक पोर्टेबल नेकबैंड पब्लिक एड्रेस सिस्टम ने यात्रियों को महत्त्वपूर्ण निर्देश देने, यात्रियों को रेग्यूलेट करने, सोशल डिस्टेंसिंग आदि के साथ संचार करने के लिए फ्रंटलाइन स्टाफ कर्मचारियों को सक्षम किया है।

जीरो कांटैक्ट यात्री और सामान

सामान और अन्य प्रकार के संपर्क के माध्यम से संक्रमण को रोकने के लिए मध्य रेल ने सीएसएमटी, दादर, एलटीटी

पोर्टेबल पीए के साथ टीसी

नागपुर में एटीएम

रोबोट

और नागपुर जैसे प्रमुख स्टेशनों पर स्वचालित लगेज रैपिंग और स्क्रीनिंग की सुविधा शुरू की है। इसके अलावा, CSR के तहत सीएसएमटी में यात्रियों की सुविधा के लिए एक फुट ऑपरेटेड हैंड वाश वेंडिंग मशीन को तरल हैंडवॉश और पानी के साथ शून्य संपर्क के साथ स्थापित किया गया है।

पैसेंजर एवं स्टाफ हेल्थ

यात्रा से पहले और बाद में अपने स्वास्थ्य मापदंडों की निगरानी के लिए यात्रियों की सुविधा के लिए, उपनगरीय स्टेशनों जैसे एलटीटी, ठाणे, कल्याण में हेल्थ एटीएम कियॉस्क स्थापित किए गए हैं और अन्य स्टेशनों पर भी इसे स्थापित करने की प्रक्रिया चल रही है। ये कियोस्क बुनियादी प्रयोगशाला परीक्षण और आपातकालीन सुविधाओं से लैस हैं और यहां चिकित्सा परिचर तैनात किए गए हैं। यहां यात्रियों को नाममात्र के शुल्क पर 16 से 18 प्रकार के स्वास्थ्य परीक्षण मिल सकते हैं, जिनमें रक्तचाप, रक्त शर्करा, बॉडी मास इंडेक्स (बीएमआई) आदि शामिल हैं। कोविड महामारी से निपटने के लिए मध्य रेल ने रेलवे अस्पतालों में मरीजों के इलाज और सेवा के लिए रोबोट उपकरणों का प्रभावी उपयोग किया है। सोलापुर में रेलवे अस्पताल सोलापुर मंडल के मैकेनिकल विभाग द्वारा आरओ (बॉट), परेल वर्कशॉप द्वारा निर्मित 'मेडिबॉट जीवक' और ईएमयू कार शेड द्वारा निर्मित 'रक्षक' कुर्ला रोबोटिक स्वास्थ्य सहायकों के सर्वोत्तम उदाहरण हैं। ये रोगियों के साथ बातचीत करने के लिए चिकित्सा पेशेवरों की मदद करने के लिए, मरीजों और दूर से दवाइयों की जांच के लिए डिस्पेंसरी, थर्मामीटर और पल्स ऑक्सीमीटर को डिस्पेंस करते हैं। ये रोबोट और रोबोटिक उपकरण के साथ-साथ मध्य रेल के अन्य फ्रंटलाइन स्टाफ, चिकित्सा कर्मी और अन्य कोरोना योद्धा कोविड का मुकाबला करने और यात्रियों तथा सामग्रियों को सुरक्षित परिवहन प्रदान करने में सबसे आगे रहे हैं। ■

मध्य रेल द्वारा उपनगरीय प्रणाली पर महिला यात्रियों की सुरक्षा हेतु 'स्मार्ट सहेली' का शुभारंभ

मध्य रेल के महाप्रबन्धक श्री संजीव मित्तल ने 22 दिसम्बर, 2020 रेलवे सुरक्षा बल के 'स्मार्ट सहेली' कार्यक्रम का ऑनलाइन शुभारंभ किया। श्री अतुल पाठक, प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त आरपीएफ मध्य रेल, श्री शलभ गोयल, मंडल रेल प्रबन्धक, मुंबई मंडल, मध्य रेल और अन्य अधिकारी भी इस अवसर पर उपस्थित थे। इस कार्यक्रम को शुरू करने का मुख्य उद्देश्य मध्य रेल के मुंबई मंडल पर सभी 1,774 उपनगरीय सेवाओं को कवर करने और महिलाओं के खिलाफ शून्य अपराध के लक्ष्य को प्राप्त करने और महिला यात्रियों के बीच विश्वास पैदा करने के लिए समग्र सुरक्षा प्रदान करना है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य महिला यात्रियों की शिकायतों के लिए एक मजबूत और तेजी से निवारण तंत्र बनाना है। यह महिला यात्रियों के साथ दो-तरफा संचार भी स्थापित करता है और उनकी सुरक्षा और सुरक्षा के संबंध में उनमें आत्मविश्वास विकसित करता है।

यह किस प्रकार कार्य करता है

सर्विस सहेली - 'सर्विस सहेली' बनाने के लिए प्रत्येक लोकल सेवा से 4 नियमित महिला यात्रियों को स्वयंसेवकों के रूप में पंजीकृत किया गया है।

सेक्टर सहेली ग्रुप - सभी 1,774 स्थानीय सेवाओं को कवर करने के लिए 59 सेक्टर सहेली समूह होंगे। प्रत्येक सेक्टर सहेली समूह का गठन 31 'सेवा सहेली', एक महिला एसआईपीएफ / एएसआईपीएफ/हेड कांस्टेबल को फोर्स मेंटर, एक महिला कांस्टेबल को सहायक बल मेंटर और एक यात्री मेंटर (अधिमानत: एनजीओ / रेलवे उपयोगकर्ता समिति के प्रतिनिधि) के रूप में किया जाना है। इसमें कुल सदस्य 127 होंगे।

स्टेशन सहेली ग्रुप - 21 प्रमुख स्टेशनों की पहचान उपनगरीय खंड पर की गई। इन स्टेशनों पर चौबीसों घंटे निगरानी रखी जा रही है। प्रत्येक स्टेशन में 'स्टेशन सहेली समूह' होगा जिसमें उस

स्टेशन की 15 नियमित महिला यात्री और 2 आरपीएफ स्टेशन के कर्मचारी शामिल होंगे।

ट्रेन सहेली ग्रुप - सभी महिला विशेष ट्रेनों पर 'ट्रेन सहेली समूह' का गठन किया है। वर्तमान में 4 ऐसे 'ट्रेन सहेली ग्रुप' बनाए गए हैं। इन लोकल ट्रेनों और 25 आरपीएफ कर्मचारियों पर 25 नियमित यात्रियों सहित प्रत्येक समूह है। इन सभी गाड़ियों को 3 आरपीएफ लेडी स्टाफ द्वारा एस्कॉर्ट किया जाएगा।

मंडल स्तर पर प्रतिक्रिया और निगरानी टीम - इस टीम में सभी बल संरक्षक, यात्री मेंटर, स्टेशन सहेली प्रभारी, सेवा सहेली प्रभारी, आरपीएफ विभाग के निरीक्षक शामिल हैं। वे 'स्मार्ट-सहेली-आरएंडएम टीम' नामक एक व्हाट्सएप ग्रुप बनाएंगे।

ये सभी समूह नियमित रूप से महिला यात्रियों और सेवा सहेलियों के साथ बातचीत करते हैं। महिला सुरक्षा को प्रभावित करने वाली गतिविधियों/मामलों का निरीक्षण करते हैं, सुरक्षा में सुधार के तरीके और उपाय सुझाए गए हैं। यात्रियों के बीच 182 आरपीएफ हेल्पलाइन की सुविधा का प्रचार किया जा रहा है। आरएण्डएम टीम महिला यात्रियों की शिकायतों का समय पर और त्वरित प्रतिक्रिया सुनिश्चित करेगी। ■

मध्य रेल द्वारा ऑटोमोबाइल कैरियर का विकास

मध्य रेल परेल कार्यशाला ने 45 दिनों में ऑटोमोबाइल ले जाने के लिए एक प्रोटोटाइप कोच विकसित किया है। इसने नए संशोधित माल कोच (एनएमजीएच) को ऑटोमोबाइल लोडिंग के लिए सुधारित फॉल प्लेट के साथ विकसित किया है। वाहनों की उचित सुरक्षा हेतु चैनल्स चेन, पूरी तरह से वेल्डेड चेकर प्लेट फ्लोर, वेंटिलेशन हेतु लॉवर्स और प्राकृतिक पाइप लाइट रोशनी है। यह कोच की गति क्षमता को 110 किमी प्रति घंटा तक कर देगा। आरडीएसओ अब इसका ऑस्किलेशन ट्रायल करेगा।

ऑटोमोबाइल भेजने के लिए रेलवे सुरक्षित और सस्ता परिवहन साधन बन गया है। मानकों में सुधार करने के लिए हाल ही में रेलवे और निर्माताओं के बीच बातचीत हुई थी। निर्माताओं द्वारा एंड ओपनिंग, डोर डिजाइन, फॉल प्लेट और कोच के फर्श के डिजाइन और लोडिंग और अनलोडिंग के मार्गदर्शन के लिए सुझावों को मध्य रेल द्वारा आरडीएसओ को न्यू मॉडिफाइड गुड्स (एनएमजी) कोच में सुधार के लिए भेजा गया था। ऑटोमोबाइल निर्माताओं ने कोच के बेहतर डिजाइन पर संतोष व्यक्त किया। श्री डी.के. सिंह, मध्य रेल के प्रधान मुख्य परिचालन प्रबन्धक ने

कहा कि एनएमजीएच ऑटोमोबाइल कैरियर की गति क्षमता ऑटोमोबाइल के त्वरित और सुरक्षित परिवहन में एक गेम चेंजर होगी। श्री ए.के. गुप्ता, प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर, मध्य रेल के मार्गदर्शन में मुख्य कार्यशाला प्रबन्धक श्री विवेक आचार्य के नेतृत्व में परेल कार्यशाला ने कोच बनाया है। ■

मध्य रेल के 17 स्टेशनों पर आईपी आधारित वीडियो निगरानी प्रणाली प्रारंभ

मध्य रेल के महाप्रबन्धक श्री संजीव मित्तल ने दिनांक 22 दिसम्बर, 2020 को छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस, मुंबई से वेबिनार के माध्यम से मध्य रेल के 17 स्टेशनों पर आईपी आधारित वीडियो निगरानी प्रणाली (वीएसएस) का शुभारंभ किया। श्री अतुल पाठक, प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त, मध्य रेल, श्री ए.के. श्रीवास्तव, प्रधान मुख्य सिग्नल और दूरसंचार इंजीनियर, मध्य रेल, श्री वी.के. अग्रवाल, क्षेत्रीय महाप्रबन्धक, रेलटेल, प्रधान मुख्य विभागाध्यक्ष और सभी मंडल रेल प्रबन्धक भी वेबिनार के माध्यम से उपस्थित थे।

श्री पुनीत चावला, सीएमडी / रेलटेल ने कहा, ''रेलटेल ने पहले ही देश के 239 स्टेशनों पर वीएसएस उपलब्ध कराने का काम पूरा कर लिया है। यह प्रणाली रेलवे परिसर की सुरक्षा को बढ़ाने में मदद करेगी जो अन्यथा एक चुनौतीपूर्ण काम है।''

मध्य रेल पर रेलटेल ने 17 स्टेशनों पर इंटरनेट प्रोटोकॉल (आईपी) आधारित वीएसएस स्थापित की है। ये स्टेशन हैं लोनावला, अमरावती, बुरहानपुर, शेगाँव, खंडवा, बल्लारशाह, चंद्रपुर, वर्धा, बैतूल, कोल्हापुर, अहमदनगर, लातूर, दौंड, कलबुरगि, कोपरगाँव, कुर्डुवाड़ी और साईंनगर शिरडी।

भारतीय रेल स्टेशनों पर परिवहन के प्रमुख केंद्रों पर आईपी आधारित वीएसएस स्थापित करने की प्रक्रिया में है, यानी वेटिंग हॉल, आरक्षण काउंटर, पार्किंग क्षेत्र आदि। रेलवे बोर्ड ने निर्भया फंड के तहत 983 स्टेशनों को कवर करने वाले वीडियो निगरानी प्रणाली के प्रावधान को मंजूरी दी है। रेलटेल को वीडियो एनालिटिक्स और चेहरे की पहचान प्रणाली के साथ

आईपी बेस्ड वीएसएस प्रदान करने का काम सौंपा गया है। स्पष्ट छवि के लिए, चार प्रकार के फुल एचडी कैमरे - डोम प्रकार (इनडोर क्षेत्रों के लिए), बुलेट प्रकार (प्लेटफॉर्मों हेतु), पैन टिल्ट जूम प्रकार (पार्किंग हेतु) और अल्ट्रा एचडी-4K कैमरे (महत्त्वपूर्ण स्थानों के लिए) प्रदान किए जा रहे हैं। स्टेशन पर प्रत्येक एचडी कैमरा लगभग 1टीबी डेटा और 4K कैमरा प्रति माह 4 टीबी डेटा की खपत करता है। सीसीटीवी कैमरों से वीडियो फीड की रिकॉर्डिंग 30 दिन तक संग्रहीत की जाएगी। सभी सीसीटीवी कैमरों को रेलटेल एमपीएलएस बैकबोन पर ऑप्टिकल फाइबर केबल के माध्यम से नेटवर्क किया गया है और वीडियो फीड को सीएसएमटी स्टेशन पर एक केंद्रीकृत सुरक्षा नियंत्रण कक्ष में लाया गया है, जहां आरपीएफ कर्मियों द्वारा मल्टी एलसीडी मॉनिटर पर 24x7 देखा जा सकता है। ■

उत्तर रेलवे : महाप्रबन्धक द्वारा वाराणसी छावनी रेलवे स्टेशन का निरीक्षण

श्री आशुतोष गंगल, महाप्रबन्धक उत्तर रेलवे ने अपने लखनऊ मंडल के दो दिवसीय निरीक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत वाराणसी छावनी रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबन्धक लखनऊ, श्री संजय त्रिपाठी सहित मुख्यालय तथा मंडल के अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। महाप्रबन्धक ने उच्चस्तरीय यात्री सुविधाओं पर विशेष बल दिया।

महाप्रबन्धक ने निरीक्षण के दौरान स्टेशन पर पधारे राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), श्री रविन्द्र जायसवाल, मंत्री स्टाम्प एवं कोर्ट फीस रजिस्ट्रेशन, उत्तर प्रदेश शासन एवं डी.एम. वाराणसी से भेंट करके उनसे रेल संबंधी अनेक विषयों पर चर्चा की। इस अवसर पर रेल सहायक (कुलियों) ने भी महाप्रबन्धक से भेंट कर उन्हें अपनी समस्याओं से अवगत कराया। महाप्रबन्धक द्वारा इनके यथाशीघ्र निराकरण का आश्वासन दिया गया। ■

वाराणसी स्टेशन पर परियोजनाओं की जानकारी लेते हुए महाप्रबन्धक

कुम्भ मेले तथा बिजनेस डेवलपमेंट यूनिट्स की बैठक हेतु वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग का आयोजन

श्री आशुतोष गंगल, महाप्रबन्धक, उत्तर रेलवे ने उत्तर रेलवे प्रधान कार्यालय, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग द्वारा कुम्भ मेले- 2021 हेतु व्यवस्थाएं तथा बिजनेस डेवलपमेंट यूनिट्स की मीटिंग का आयोजन किया, जिसमें सभी विभागों के विभागाध्यक्ष तथा सभी मंडलों के मंडल रेल प्रबन्धकों ने भी सहभागिता की।

हरिद्वार में होने वाले कुम्भ मेले हेतु सभी अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि वे कार्य योजना के अनुसार इस पर जुट जाएं। कुम्भ के दौरान विशेष रेलगाड़ियों के संचालन, स्टाफ की तैनाती, स्वच्छता तथा सुरक्षा जैसे बिंदुओं पर चर्चा की गई।

श्री गंगल ने कहा कि कोरोना के मद्देनजर भीड़-भाड़ प्रबन्धन के भी उपाय किए जाएं। वहीं बीडीयू के विषय में उन्होंने कहा कि हमें व्यापक स्तर पर सम्पर्क स्थापित कर और नए माल भाड़ा यातायात को प्राप्त करने के प्रयास करने होंगे। ■

उत्तर रेलवे ने डॉ. भीमराव अंबेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस पर श्रद्धासुमन अर्पित किए

भारत के संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकरजी के महापरिनिर्वाण दिवस पर उत्तर रेलवे के कर्मियों ने उत्तर रेलवे प्रधान कार्यालय, बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली में डॉ. अंबेडकर को श्रद्धासुमन अर्पित किए।

इस अवसर पर उत्तर रेलवे के अपर महाप्रबन्धक, श्री नवीन गुलाटी ने डॉ भीमराव अंबेडकर को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आजादी के बाद देश को प्रगतिशील बनाने के लिए एक मजबूत व बेहतरीन संविधान की आवश्यकता थी। ऐसे संविधान निर्माण में डॉ. भीमराव अंबेडकर ने व्यापक योगदान किया। उनका योगदान अमूल्य है। ■

पूर्वोत्तर सीमा रेलवे ने मालवाही ट्रेनों के रिकार्ड 1,102 रेकों को अनलोड किया

पूर्वोत्तर सीमा रेलवे ने लॉकडाउन अवधि के आरम्भ यानी 25 मार्च से 30 नवम्बर, 2020 तक 6,847 अदद से भी अधिक अंतर्गामी मालवाही ट्रेनों का परिवहन किया। इनमें से 1,102 मालवाही ट्रेनों की अनलोडिंग सिर्फ नवम्बर महीने में की गई, जोकि पिछले वर्ष के अनुरूप इस महीने के दौरान की गई मालवाही ट्रेनों की अनलोडिंग से 35.21 प्रतिशत अधिक है। नवम्बर, 2019 के दौरान पूर्वोत्तर सीमा रेलवे में 815 फ्रेट रेक अनलोड किए गए।

स्थानीय आर्थिक कार्यकलापों को जारी रखने के लिए एफसीआई चावल, चीनी, खाद्य तेल, पीओएल, चारा, कोयला, स्टोन चिप्स, लौह/इस्पात, जिप्सम, मक्का, दाल, ऑटो, कंटेनर इत्यादि जैसे सामानों का नियमित रूप से परिवहन किया गया।

नवम्बर के दौरान, असम में मालगाड़ियों के 570 रेक अनलोड किए गए, जिनमें से 301 रेक आवश्यक सामग्रियों के थे। पिछले महीने के दौरान 27 रेक नागालैंड में, 61 रेक त्रिपुरा में, 3 रेक मणिपुर में, 1 रेक मिजोरम में तथा 5 रेक अरुणाचल प्रदेश में अनलोड किए गए। इन क्षेत्रों के लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के क्षेत्राधिकार के अंदर पिछले महीने के दौरान पश्चिम बंगाल में 243 फ्रेट रेकों तथा बिहार में 187 फ्रेट रेकों को अनलोड किया गया।

पिछले महीने के दौरान असम में अनाज की 85 रेक, सीमेंट की 93 रेक, ऑटोमोबाइल की 43 रेक, चीनी की 24 रेक, विद्युत केंद्र के लिए कोयला की 27 रेक, उर्वरक की 22 रेक, खाद्य तेल की 14 रेक तथा पेट्रोलियम उत्पादों की 50 रेक, त्रिपुरा में खाद्य सामग्रियों की 15 रेक, स्टोन की 36 रेक, चीनी की 1 रेक, ऑटोमोबाइल की 2 रेक तथा उर्वरक की 1 रेक, अरुणाचल प्रदेश में एफसीआई सामग्रियों की 1 रेक तथा पेट्रोलियम उत्पादों की 4 रेक, मणिपुर में एफसीआई सामग्रियों की 1 रेक, सीमेंट की 2 रेक, मिजोरम में एफसीआई की 1 रेक, नागालैंड में एफसीआई सामग्रियों की 8 रेक, पेट्रोलियम उत्पादों की 7 रेक तथा सीमेंट की 5 रेक अनलोड की गई। पूसी रेलवे के अंतर्गत आने वाले बिहार के हिस्से में सीमेंट की 60 रेक, खाद्य सामग्रियों की 35 रेक, उर्वरक की 35 रेक, नमक की 16 रेक तथा चीनी की 9 रेक, स्टोन की 18 रेक, लौह/इस्पात की 12 रेक अनलोड की गई। पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के उत्तर बंगाल हिस्से में खाद्य सामग्रियों की 43 रेक, सीमेंट की 75 रेक, उर्वरक की 41 रेक, नमक की 2 रेक, चीनी की 7 रेक तथा पेट्रोलियम उत्पादों की 26 रेक अनलोड की गई।

बेहतर रखरखाव तथा सभी स्तरों पर निगरानी से उन्नत टर्मिनल सुविधा तथा आवागमन में सुधार के कारण अनलोडिंग में वृद्धि हुई तथा वापस आने के समय में कमी आई। इस रेलवे में मालवाही ट्रेनों की औसत गति में भी दोगुनी वृद्धि हुई है।

भारतीय रेल ने कोविड-19 महामारी की चुनौतीपूर्ण समय के दौरान सभी आवश्यक सामग्रियों, जीवनरक्षक औषधियों तथा चिकित्सकीय उपकरणों के परिवहन के लिए निरंतर सेवाएं प्रदान करने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्पष्ट है कि पूसी रेलवे द्वारा अनाजों, पीओएल तथा अन्य आवश्यक तथा विविध सामग्रियों के व्यापक परिवहन के कारण लॉकडाउन अवधि तथा उसके उपरांत की अवधि के दौरान पूसी रेल के सेवा क्षेत्र में इस तरह की सामग्रियों की कोई कमी नहीं देखी गई। ■

महिला यात्रियों की सुरक्षा हेतु 'मेरी सहेली'

पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के रेलवे सुरक्षा बल ने ट्रेनों में यात्रा करने वाली महिला यात्रियों को बेहतर सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से 'मेरी सहेली' नामक एक व्यापक जागरूकता अभियान की शुरुआत की है। यात्रा के दौरान महिला यात्रियों की सुरक्षा बढ़ाने के लिए 20 अक्टूबर, 2020 से ट्रेन सं. 05955 डिब्रूगढ़-दिल्ली स्पेशल में 'मेरी सहेली' की शुरुआत की गई है।

मंडलों में एक निरीक्षक के नेतृत्व में महिला कॉस्टेबल की एक टीम गठित की गई। टीम ने डिब्रूगढ़ रेलवे स्टेशन पर महिला यात्रियों से चर्चा की एवं यात्रा के दौरान अपनाई जाने वाली सभी प्रकार की सतर्कता के संबंध में जानकारी दी। रेसुब से तुरंत सहायता पाने संबंधित तथा आपातकालीन परिस्थिति में रेसुब की हेल्प लाइन नं. 182 के बारे में उन्हें सूचित किया गया। तिनसुकिया मंडल के सुरक्षा नियंत्रण का मोबाइल नंबर

महिला यात्रियों के साथ साझा किया गया। महिला यात्रियों को अपने कोचों में किसी भी तरह की सुरक्षा से संबंधित समस्या होने पर कॉल करने के लिए कहा गया। ■

पूर्वोत्तर सीमा रेलवे में भारतरत्न डॉ. बी. आर. अंबेडकर का महापरिनिर्वाण दिवस मनाया गया

पूर्वोत्तर सीमा रेलवे मुख्यालय परिसर में 7 दिसम्बर, 2020 को भारतरत्न, डॉ. भीमराव अंबेडकर के 64 वें महापरिनिर्वाण दिवस का पालन किया गया। महाप्रबन्धक श्री अंशुल गुप्ता तथा अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों ने भारतरत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर को श्रद्धा सुमन अर्पित किए। इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री अंशुल गुप्ता ने हमारे संविधान के गठन, समाज के सभी वर्गों के लिए न्याय तथा समान अधिकार प्रदान करने तथा समाज के निम्न वर्ग के विकास के प्रति डॉ. भीमराव अंबेडकर के योगदान का भी उल्लेख किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में अधिकारीगण तथा कर्मचारीगण उपस्थित थे। इसी तरह के कार्यक्रम पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के सभी पांच मंडलों में भी आयोजित किए गए।

महाप्रबन्धक (निर्माण), पूसी रेल के कार्यालय में भी यह दिवस मनाया गया, जहां पर श्री एच. के. यादव, सीएओ/

कॉन-1, पूर्वोत्तर सीमा रेलवे, निर्माण ने निर्माण संस्थान के अन्य अधिकारियों की मौजूदगी में महान नेता को दीप प्रज्ज्वलित कर श्रद्धांजलि तथा श्रद्धा सुमन अर्पित किए। ■

सर्दी में ट्रेन परिचालन की सुरक्षा बढ़ाने के लिए पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के प्रयास

सर्दी के मौसम के आते ही रेल परिसंपत्तियों का रखरखाव बढ़ाने की आवश्यकता होती है ताकि विफलताओं को टाला जा सके और सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित की जा सके। इस दिशा में पूर्वोत्तर सीमा रेलवे ने कई कदम उठाए हैं। सर्दी के मौसम के दौरान रेलवे ट्रैक रात्रि के वक्त सिकुड़ जाता है और दिन के समय फैलता है। इस तरह के अचानक तापमान में बदलाव से प्राय: रेल ट्रैक में दरार पड़ जाती है, जिसके चलते सुरक्षा खतरे में पड़ जाती है।

पूर्वोत्तर सीमा रेल की समूचे ट्रैक की हर जगह दिन-रात सघन पेट्रोलिंग की जाती है ताकि ट्रैक में दरार की संभावना का पता लगाया जा सके। इसके अतिरिक्त रेल ज्वाइंटों और वेल्डों की नियमित रूप से निगरानी की जा रही है। लॉंग वेल्ड रेलों वाले सेक्शनों की डिस्ट्रेसिंग की जा रही है। एसईजे ज्वाइंटों की नियमित निगरानी की जा रही है और अल्ट्रासोनिक फ्लॉ डिटेक्शन (यूएसएफडी) उपकरण का भी दोष या दरारों को खोजने में उपयोग किया जा रहा है, जो खाली आंख से आमतौर पर दिखाई नहीं देती हैं। ■

न्यू तिनसुकिया जंक्शन में स्वचालित सीढ़ी का उद्घाटन

केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग राज्यमंत्री, रामेश्वर तेली ने गत 20 नवम्बर को न्यू तिनसुकिया जंक्शन के प्लेटफॉर्म नं.1 पर स्वचालित सीढ़ी (एस्केलेटर) का उद्घाटन किया। इससे बुजुर्ग और दिव्यांग यात्रियों के लिए आने-जाने की बेहतर सुविधा उपलब्ध होगी। इस समारोह में मंडल रेल प्रबन्धक श्री विजय कुमार मिश्रा भी उपस्थित थे। ■

पूर्वोत्तर रेलवे में वीडियो सर्विलांस सिस्टम का प्रारंभ

पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबन्धक श्री विनय कुमार त्रिपाठी ने 12 नवम्बर, 2020 को गोरखपुर में नवस्थापित वीडियो सर्विलांस सिस्टम (वी.एस.एस.) कंट्रोल रूम का उद्घाटन किया।

महाप्रबन्धक ने वी.एस.एस. को और अधिक कारगर बनाने के लिए इसमें फेस रिकग्नीशन सिस्टम विकसित करने तथा खराब कैमरों का अलार्म/एलर्ट सुविधा भी विकसित करने का सुझाव दिया। उल्लेखनीय है कि रेल यात्रियों एवं सम्पत्ति की सुरक्षा हेतु वी.एस.एस. का रेलवे स्टेशनों पर प्रावधान रेलटेल द्वारा समस्त भारतीय रेल के 6,124 स्टेशनों/स्थलों पर किया जा रहा है। प्रथम चरण में भारतीय रेल पर 300 से अधिक वी.एस.एस. स्थापित किए गए हैं। पूर्वोत्तर रेलवे पर प्रथम चरण में वी.एस.एस. की शुरुआत लखनऊ मण्डल के बस्ती, गोण्डा एवं खलीलाबाद, इज्जतनगर मण्डल के काठगोदाम एवं रुद्रपुर सिटी तथा वाराणसी मण्डल के बलिया, मऊ, बेल्थरा रोड, आजमगढ़, देवरिया सदर, छपरा एवं सीवान समेत 12 स्टेशनों पर की गई है।

पूर्वोत्तर रेलवे के सभी स्टेशनों पर इसका विस्तार किया जाएगा। पूर्वोत्तर रेलवे के महत्त्वपूर्ण स्टेशनों, जैसे कि गोरखपुर, लखनऊ जं. पर पहले से ही सीसीटीवी कैमरे लगे हैं। वी.एस.एस. में आई. पी. आधारित कैमरा लगा है। इस प्रणाली के माध्यम से तीन स्तरों मुख्यालय, मण्डल एवं स्टेशनों पर मॉनिटरिंग की सुविधा है। ■

आरडीएसओ, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान स्वदेशी प्रौद्योगिकी के विकास की ओर

देश में स्वदेशी प्रौद्योगिकी विकास और ज्ञान निर्माण पर ध्यान केंद्रित करने के साथ-साथ 'आत्मनिर्भर भारत' और 'मेक इन इंडिया' पहल की कल्पना की गई है। आरडीएसओ ने सभी आईआईटी के साथ बातचीत शुरू की है। इसका उद्देश्य भारतीय रेल अनुप्रयोगों के लिए स्वदेशी अत्याधुनिक प्रणाली विकसित करने और ज्ञान विकसित करने के लिए इन प्रमुख संस्थानों के साथ उपलब्ध मुख्य दक्षताओं और तकनीकी ज्ञान का लाभ उठाना है। इस संबंध में, आरडीएसओ में 27 अक्टूबर से 10 नवम्बर, 2020 के बीच आईआईटी/मुंबई, खड़गपुर, कानपुर, चेन्नई, रुड़की और वाराणसी के संकाय सदस्यों और शोधकर्ताओं के साथ ऑनलाइन तकनीकी बातचीत की एक श्रृंखला आयोजित की गई। 25 से अधिक रेलवे अनुसंधान परियोजनाओं में ऊर्जा दक्षता, संपत्ति की विश्वसनीयता, परिचालन क्षमता और यात्री यात्रा के अनुभव को बेहतर बनाने की क्षमता पर चर्चा की गई। आईआईटी संकाय व शोधकर्ता, आरडीएसओ के साथ संयुक्त समन्वय में अब इन पहचान की गई परियोजनाओं में आरएंडडी को शुरू करने के तरीके विकसित कर रहे हैं। आरडीएसओ नियमित आधार पर विभिन्न परियोजनओं की प्रगति की निगरानी करेगा और समय-सीमा पर विशेष ध्यान केंद्रित करेगा। ■

आरडीएसओ में संविधान दिवस का आयोजन

आरडीएसओ में 'संविधान दिवस' का आयोजन 26 नवम्बर, 2020 को किया गया। इस अवसर पर आरडीएसओ के महानिदेशक श्री वीरेंद्र कुमार द्वारा कोविड-19 की नियमावली को ध्यान में रखते हुए संविधान की प्रस्तावना का पाठ किया। इस अवसर पर श्री रमेश पिंजानी, अपर महानिदेशक एवं अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे। आरडीएसओ के विभिन्न निदेशालयों एवं सभी फील्ड इकाइयों में उनके नियंत्रक अधिकारियों द्वारा संविधान की प्रस्तावना का पाठ किया गया। इस अवसर पर संविधान एवं उसके मौलिक कर्तव्यों पर एक वेबिनार का भी आयोजन किया गया, जिसमे श्री अखिलेश उपाध्याय, लॉ ऑफिसर ने एक व्याख्यान प्रस्तुत किया। सोशल मीडिया के माध्यम से संविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक कर्तव्यों का प्रचार भी किया गया। ■

रेलकर्मियों ने संविधान दिवस की शपथ ली

दिनांक 26 नवम्बर, 1949 को संविधान सभा द्वारा भारतीय संविधान को स्वीकृत किया गया था जिसे 26 जनवरी, 1950 में लागू किया गया। इसी कड़ी में दिनांक 26 नवम्बर, 2020 को प्रधानमंत्रीजी श्री नरेंद्र मोदी द्वारा भारतीय रेल के अंतर्गत सभी रेलवे जोन के महाप्रबन्धकों सहित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से 'संविधान दिवस' की शपथ दिलाई गई।

इस अवसर पर दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, मुख्यालय, बिलासपुर में महाप्रबन्धक, श्री गौतम बनर्जी, श्री प्रमोद कुमार, अपर महाप्रबन्धक एवं सभी विभागाध्यक्ष, तीनों रेल मंडलों सहित समस्त विभाग के अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने भी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से 'संविधान दिवस' की शपथ ली। ■

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे : रेलवे सुरक्षा बल को बाल तस्करी रोकथाम हेतु प्रशिक्षण दिया गया

मानव-तस्करी की रोकथाम के लिए रेलवे बोर्ड के दिशा-निर्देशानुसार, रेलवे सुरक्षा बल दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे बिलासपुर के द्वारा मुख्यालय स्तर पर तथा मण्डल स्तर पर टास्क टीम बनाकर सभी महत्त्वपूर्ण ट्रेनों की निगरानी की जा रही है। ड्यूटी के दौरान बल सदस्यों को ब्रीफिंग-डेब्रीफिंग की जा रही है। इस वर्ष 'कैलाश सत्यार्थी चिल्ड्रेन फाउंडेशन' द्वारा भी रेलवे सुरक्षा बल के 196 बल सदस्यों को बच्चों की तस्करी की रोकथाम हेतु ऑनलाइन प्रशिक्षण दिया गया है।

इसी तारतम्य में दिनांक 8 नवम्बर, 2020 को वैनगंगा एक्सप्रेस को रेलवे सुरक्षा बल पोस्ट कोरबा के ट्रेन एस्कॉर्ट पार्टी एक किन्नर को पकड़ा, जो लगभग एक साल के बच्चे को ओडिशा के ब्रजराजनगर से अपहरण कर कोरबा ले जा रहा था। बच्चे को किन्नर के चंगुल से छुड़ाकर चाइल्ड लाइन, कोरबा को आरपीएफ के द्वारा सौंपा गया और किन्नर को जीआरपी बिलासपुर को अग्रिम कानूनी कार्रवाई करने हेतु हैंड ओवर किया गया, जहाँ मामला दर्ज किया गया है। इस कार्य हेतु रेलवे सुरक्षा बल के सदस्यों प्रधान आरक्षक संजीव राय और आरक्षक डी.पी. रत्नायके चाइल्ड वेलफेयर कमिटी, कोरबा की अध्यक्ष श्रीमती मधु पांडे के द्वारा अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। ■

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे पर 'मेरी सहेली' नामक अभियान की रेल यात्रियों ने सराहना की

ट्रेन से यात्रा कर रही महिला यात्रियों की सुरक्षा के लिए पूरे देश में रेलवे सुरक्षा बल के द्वारा 'मेरी सहेली' नामक अभियान चलाया जा रहा है। रेलवे सुरक्षा बल दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे बिलासपुर के द्वारा भी जोन क्षेत्राधिकार से गुजरने वाली 09 ट्रेनों में पाइलट प्रोजेक्ट के रूप में 'मेरी सहेली' अभियान चलाया जा रहा है।

इस अभियान के अंतर्गत एक महिला नागपुर रेल मण्डल में दिनांक 01 नवम्बर को 02810 हावड़ा-मुंबई स्पेशल ट्रेन में एसी-II कोच में बिलासपुर से भुसावल तक सफर कर रही थी। उनका 4 माह का बच्चा भूख से परेशान होकर लगातार रो रहा था। इसी ट्रेन में मोतीबाग आरपीएफ पोस्ट की महिला आरक्षक यूनम सांगवान और मेवा सिंह दुर्ग से नागपुर तक गश्त पर थीं। उस महिला ने अपनी परेशानी जान कर बच्चे के लिए गरम दूध उपलब्ध करवाया गया। इसी प्रकार रेलवे सुरक्षा बल दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे द्वारा बिलासपुर रेल मंडल में 'मेरी सहेली' अभियान चलाया गया है। इस 'मेरी सहेली' अभियान में बिलासपुर से चलने वाली बिलासपुर- नई दिल्ली स्पेशल ट्रेन, एवं कोरबा-विशाखापटनम स्पेशल ट्रेन, हावड़ा-अहमदाबाद-हावड़ा स्पेशल ट्रेन, हावड़ा-मुंबई-हावड़ा स्पेशल ट्रेन, दुर्ग-छपरा-दुर्ग स्पेशल ट्रेन में 'मेरी सहेली' अभियान चलाया गया। ■

रेल संस्कृति निकेतन भवन का उद्घाटन

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे प्रशासन द्वारा रेलवे कर्मचारियों व उनके परिजनों की सांस्कृतिक गतिविधियों के आयोजन हेतु 'रेल संस्कृति निकेतन भवन' की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। बिलासपुर मंडल द्वारा इस भवन में उपलब्ध सुविधाओं को और बेहतर बनाने तथा सौंदर्यीकरण करने के उद्देश्य से इसे नवीनीकृत किया गया है।

मंडल रेल प्रशासन द्वारा अभिनव पहल करते हुए मंडल रेल प्रबन्धक श्री आलोक सहाय की उपस्थिति में दिनांक 27 नवम्बर 2020 को इंजीनियरिंग विभाग के सेवानिवृत कर्मचारी ट्रैक मेंटेनर श्री पी.के. भौमिक से रिबन कटवाकर इस भवन का विधिवत शुभारंभ कराया गया। इस अवसर पर अनेक अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे। ■

100 मिलियन टन माल ढुलाई का आंकड़ा पार

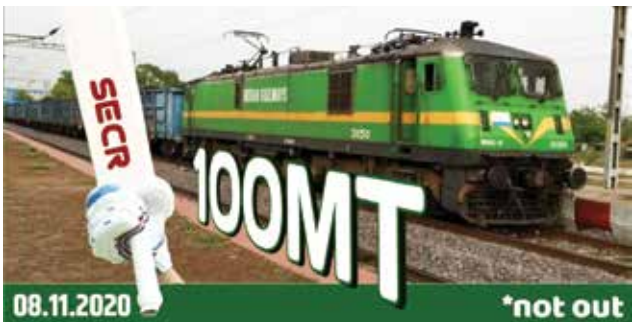

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे को चालू वित्त वर्ष में 172.83 मिलियन टन माल ढुलाई का लक्ष्य दिया गया है। कोरोना जैसी विषम परिस्थिति के बावजूद भी दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे ने लदान के प्रति अपनी प्रतिबद्धता कायम रखते हुए बेहतर कार्य किया। आपदा को अवसर में बदलते हुए न केवल रिकार्ड मेंटेनेंस कार्य हुए बल्कि अधोसंरचना कार्य भी तीव्र गति से किए गए। इस वित्तीय वर्ष 2020-21 के 01 अप्रैल से 08 नवम्बर तक दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे ने 100.45 मिलियन टन माल लदान किया है। यह विगत वित्तीय वर्ष 2019-20 की इसी अवधि से 2.2% से कहीं ज्यादा है। समय एवं परिस्थिति के मद्देनजर यह आंकड़ा बेहद महत्त्वपूर्ण एवं आशाजनक है। इस अवधि में औसत माल लदान प्रतिदिन 6,693 वैगन रहा है। महाप्रबन्धक, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे ने तीनों रेल मंडलों के अपने सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों को इसके लिए शुभकामनाएँ दीं एवं बेहतर कार्य के लिए प्रोत्साहित किया। ■

दक्षिण पूर्व रेलवे द्वारा संविधान दिवस का पालन

दक्षिण पूर्व रेलवे द्वारा दिनांक 26 नवम्बर, 2020 को भारत के संविधान को अपनाने की 71वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में अपने मुख्यालय, गार्डनरीच और साथ ही मंडल - आद्रा, खड़गपुर, चक्रधरपुर और रांची में 'संविधान दिवस' मनाया गया । 71वीं वर्षगांठ के उत्सव का मुख्य बिंदु 'मौलिक कर्तव्यों' पर है, जैसा कि भारत के संविधान में निहित है।

श्री संजय कुमार महांति, महाप्रबन्धक, दक्षिण पूर्व रेलवे ने मुख्यालय, गार्डनरीच में वर्चुअल मीडिया के माध्यम से कर्मचारियों और अधिकारियों के साथ संविधान की प्रस्तावना को पढ़ा। सभी अधिकारियों और कर्मचारियों सहित महाप्रबन्धक ने इस रेल मुख्यालय की पोर्टिको वॉल पर एकजुटता की निशानी के रूप में अपने हस्ताक्षर किए। साल भर चलने वाली गतिविधियों, जैसे रैली, सम्मेलन, सेमिनार, वाद-विवाद, क्विज प्रतियोगिता, वॉकथॉन, पोस्टर प्रतियोगिता, पोस्टर और लीफलेट्स का वितरण, देशभक्ति गीत आदि का आयोजन किया गया। ■

दक्षिण पूर्व रेलवे द्वारा महापरिनिर्वाण दिवस का आयोजन

भारत रत्न डॉ. बी.आर. अंबेडकर के 65वें महापरिनिर्वाण दिवस का पालन 7 दिसम्बर, 2020 को दक्षिण पूर्व रेलवे के मुख्यालय, गार्डनरीच में पूरी निष्ठा के साथ किया गया।

श्री संजय कुमार महांति, महाप्रबन्धक, दक्षिण पूर्व रेलवे ने भारत रत्न डॉ. बी. अंबेडकर की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की। इस अवसर पर श्री अनुपम शर्मा, अपर महाप्रबन्धक, श्रीमती जरीना फिरदौसी, प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी, दक्षिण पूर्व रेलवे के साथ-साथ एससी/एसटी एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने भी भारत रत्न डॉ. अंबेडकर को पुष्पांजलि अर्पित की। दक्षिण पूर्व रेलवे के मुख्यालय के विभागों के प्रमुखों के साथ-साथ वरिष्ठ अधिकारियों और कर्मचारियों ने वर्चुअल मीडिया के माध्यम से भारत के महान पुत्र डॉ. बी. अंबेडकर को श्रद्धांजलि दी। भारत रत्न डॉ. अंबेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस का पालन दक्षिण पूर्व रेलवे के आद्रा, खड़गपुर, चक्रधरपुर और रांची मंडलों के कार्यालयों में भी किया गया। ■

आधुनिक रेल डिब्बा कारखाने में संविधान दिवस का आयोजन

महाप्रबन्धक एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी द्वारा उद्देशिका का पठन

एमसीएफ शापिंग कॉम्पलेक्स में चित्र प्रदर्शनी का एक दृश्य

भारतीय संविधान की 71वीं वर्षगांठ के अवसर पर दिनांक 26 नवम्बर, 2020 को आधुनिक रेल डिब्बा कारखाने में संविधान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर एमसीएफ के महाप्रबन्धक श्री विनय मोहन श्रीवास्तव एवं अन्य उच्चाधिकारियों ने भारतीय संविधान की 'उद्देशिका' का पाठ किया साथ ही एमसीएफ के सभी अधिकारियों, पर्यवेक्षकों एवं कर्मचारियों ने अपने कार्यस्थल पर ही भारतीय संविधान की 'उद्देशिका' को पढ़ा। एमसीएफ, प्रशांति परिसर के शॉपिंग कॉम्प्लेक्स में भी भारतीय संविधान के निर्माण में महापुरुषों द्वारा दिये गए महत्त्वपूर्ण योगदान पर चित्र प्रदर्शनी लगाई गई। इस प्रदर्शनी में एमसीएफ के अधिकारियों, पर्यवेक्षकों एवं कर्मचारियों तथा उनके परिवार ने भाग लिया तथा संविधान की 'उद्देशिका' एवं 'मौलिक कर्त्तव्यों' और महापुरुषों के योगदान से रू-ब-रू हुए। भारतीय संविधान की 71वीं वर्षगांठ के अवसर पर एमसीएफ के सेमिनार हॉल में संवैधानिक मूल्यों और भारतीय संविधान के मूल सिद्धांतों पर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में एमसीएफ के पर्यवेक्षकों एवं कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में उत्साह के साथ भाग लिया। ■

भारतीय रेल

आपकी अपनी लोकप्रिय पत्रिका

अब राष्ट्रीय रेल संग्रहालय, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली में भी उपलब्ध है

आप यहां पर पत्रिका की सदस्यता एवं पत्रिका खरीद भी सकते हैं

रेलवे बोर्ड द्वारा दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के सिग्नल एवं दूरसंचार विभाग को उत्कृष्ट कार्यों हेतु प्रदान की गई वर्ष 2020 की शील्ड

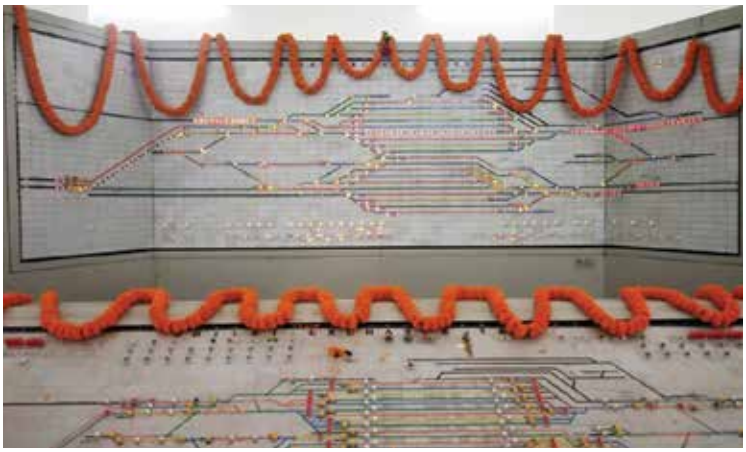

रेलवे बोर्ड द्वारा दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के सिग्नल एवं दूरसंचार विभाग को सम्मानित करते हुए वर्ष 2019-20 में किए गए उत्कृष्ट कार्यो एवं उपलब्धियों के लिए शील्ड प्रदान की गई। यह दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के लिए अत्यन्त गौरव का विषय है। वर्ष 2019-20 में इस विभाग ने कई महत्त्वपूर्ण कार्य किए हैं। बिलासपुर से दाधापारा, जयराम नगर-गतौरा और घुटकू तक ऑटोमेटिक सिग्नलिंग का कार्य किया गया। यह कार्य एमएसडीएसी जैसी अत्याधुनिक तकनीकी के साथ किया गया, जिससे सिग्नलिंग की विश्वनीयता तो बढ़ेगी ही, साथ ही ट्रैकों पर रेल परिचालन बेहतर हो सकेगा। साथ ही, बिलासपुर जैसे बड़े यार्डो में ट्रेनों का दबाव भी कम होगा। इस वर्ष 82.2 किमी दोहरी लाइन पर एवं 23.7 किमी इकहरी लाइन के साथ कुल 105.9 किमी ऑटो सिग्नलिंग का कार्य सफलतापूर्वक किया गया। यह कार्य एमएसडीएसी के स्टेंडबाई अरेंजमेंट के इनोवेटिव डिजाइन के साथ सम्पादित किया गया है जो न केवल संरक्षा के लिहाज से अव्वल है बल्कि विश्वसनीयता को भी शत-प्रतिशत के निकट ले जाता है।

इस वर्ष कुल 11 स्टेशनों में नई सिग्नलिंग व्यवस्था कमीशन की गई और 22 स्टेशनों पर सिग्नलिंग व्यवस्था में मॉडिफिकेशन का कार्य सफलतापूर्वक पूरा किया गया। नया इंटरलॉकिंग बेलपहाड़, ब्रजराजनगर, लजकुरा स्टेशनों में किया गया, जिससे बिलासपुर से ब्रजराजनगर तक तीसरी लाइन चालू हो पाई, साथ ही, यह ईब क्षेत्र के कोयला लदान की बढ़ोत्तरी में सहायक सिद्ध होगा। इस कार्य ने रेल परिचालन को भी सुचारू व समयबद्ध करने में भरपूर योगदान दिया है। गोंदिया जबलपुर सेक्शन में गेज परिवर्तन का कार्य तेजी से चल रहा है। इस वर्ष पादरीगंज, नगरवारा और लाम्टा स्टेशनों को चालू किया गया है। दुर्ग दल्लीराजहरा सेक्शन में रावघाट तक होने वाली नई लाइन की परियोजना को आगे बढ़ाते हुए केवटी स्टेशन की शुरुआत इस वर्ष की गई। अधिक-से-अधिक कोयला लदान करने के लिए एसइबीपीएल स्टेशन की स्थापना की गई तथा सिग्नलिंग व्यवस्था में मॉडिफिकेशन का कार्य खरसिया, गतौरा, जयरामनगर एवं हिमगीर आदि स्टेशनों में साइडिंग के लिए किया गया। रेल सड़क संरक्षा को ध्यान में रखते हुए इस वर्ष 19 नॉन इंटरलॉकड समपारों पर इलेक्ट्रिक लिफ्टिंग बैरियर के साथ इंटरलॉकिंग का कार्य किया गया। साथ ही, 13 मेकेनिकल टॉइप समपारों पर इलेक्ट्रिक लिफ्टिंग बैरियर की स्थापना की गई और 12 इंटरलॉक्ड गेट पर स्लाइडिंग बैरियर की व्यवस्था की गई, जिससे ट्रेनों का परिचालन समयबद्ध होगा।

यात्री सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए इस वर्ष 148 स्टेशनों पर हाईस्पीड वाई-फाई की सुविधाएं प्रदान की गईं। 12 स्टेशनों पर एट ए ग्लांस डिसप्ले बोर्ड की स्थापना की गई। उसलापुर स्टेशन पर कोच गाइडेंस डिसप्ले बोर्ड और ट्रेन इंडीकेशन बोर्ड जैसी सुविधाएं इस विभाग द्वारा प्रदान की गईं। सिग्नल एवं दूरसंचार विभाग में विगत वर्षों में सिग्नलिंग सर्किटों को और बेहतर एवं विश्वसनीय बनाने के लिए कई इनोवेशन किए गए, जिसके लिए विभाग को पुरस्कृत भी किया गया है। विभाग द्वारा विगत वर्ष 2019-20 में विभिन्न विषयों पर कुल 11 तकनीकी सेमिनारों एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया गया, जिससे अधिकारियों की तकनीकी कुशलता में वृद्धि हुई। इस विभाग ने अपनी सिग्नल विफलताओं में पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 23% की कमी दर्ज की है, साथ ही, टेलीकॉम सर्किटों की दक्षता 99.99% प्राप्त की है। इससे ट्रेनों के समयबद्ध परिचालन में सुधार आया, साथ ही रेलवे बोर्ड द्वारा दिए गए लक्ष्यों को समय से प्राप्त किया जा सका। इन उपलब्धियों को देखते हुए रेलवे बोर्ड के द्वारा सिग्नल एवं दूरसंचार विभाग, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे को उत्कृष्ट कार्यो के लिए वर्ष 2020 की शील्ड प्रदान की गई है। ■

बरगद

श्री जसविंदर शर्मा

गांव में हमारा पड़ोसी था, खुशिया। किसी बेकार की बात के लिए उसके पास वक्त नहीं था।

खुशिया से पहले उसके बाप का अच्छा जमा-जमाया धंधा था। उसका बाप तो खैर अपने छोटे बेटे के साथ रहने लगा। खुशिया घर में बड़ा था। शादी के बाद उसे अलग कर दिया गया। सिर से बरगद सरीखे बाप का साया क्या हटा, खुशिया तो एक बरस में ही चिंता के मारे अधेड़ हो गया। हर वक्त अपने काम को बढ़ाने की सोचता। किसी दूसरी बात के लिए उसके पास फुरसत नहीं थी।

खुशिया लोहार अपने फन में बहुत माहिर था। पूरे इलाके में उसके बनाए हलों, खुरपों व कुल्हाड़ियों के हत्थे मशहूर थे। दरातियों और गंडासियों पर खुशिया ऐसी तेज धार लगाता था कि काम करने वालों को सावधानी से ये औजार इस्तेमाल करने पड़ते वरना उंगली कटने में देर नहीं लगती थी।

लोग खुशिया से काम करवाने के लिए घंटों उसके बाड़े में बैठे रहते थे। खुशिया हर काम बड़ी तसल्ली और तन्मयता से करता था। बातों का भी बहुत धनी था वह। कम बोलता था, मगर नपी-तुली जुबान से जो भी कहता था, वह सटीक होती थी, वजन रखती थी व पत्थर पर लकीर होती।

गांव में लोहारों की वर्कशॉप्स तो और भी थीं, मगर कोई दूसरा खुशिया के मुकाबले में इतना दक्ष नहीं था। एक बात और थी। खुशिया के हाथ में गजब की सफाई और कारीगरी थी। जुबान का पक्का भी माना जाता। काम करवाने वालों को स्पष्ट बता देता था कि इतना वक्त लगेगा। वह किसी से कोई भेदभाव नहीं रखता था। जो पहले आता था, उसका काम पहले करता।

खुशिया के तीन बेटे थे। कई बार वह कहता - ये तीनों अगर मेरा धंधा सीख लें तो मैं दस सालों में पूरा गाँव खरीद लूं।

उसके जेठे बेटे को ये सारे गुण विरासत में मिले थे। बड़े बेटे किसना ने साथ के कस्बे से पैदल जा-जाकर इंटर किया और बापू का सारा काम भी लगन से सीखा। बेटे ने थोड़ा हाथ बंटाना शुरू किया तो खुशिया थोड़ा सुर्खरू हो गया। बिरादरी में थोड़ा उठने-बैठने लगा। इधर, दूसरे बेटे के जवान होने तक खुशिया के पास इतना पैसा जमा हो गया था कि वह थोड़ी जमीन खरीद ले।

गांव को कस्बे से जोड़ने वाली सड़क पक्की बन चुकी थी। नदी पर पुल बना तो टेम्पो-लॉरी भी चलने लगे। अब सहज में ही लोग कस्बे में चले जाते और अपनी जरूरत का सामान खरीद लाते। गांव के लोहारों की बनी चीजें अब उस मात्रा में नहीं बिकती थीं। कस्बे में खेती के उपकरणों के सस्ते विकल्प उपलब्ध थे। फिर कस्बे से ये सारी चीजें बनी-बनाई आसानी से हाथों-हाथ मिल जाती थीं।

खुशिया इस मामले में दूरदर्शी निकला। उसे पता था कि गांव की हालत में सुधार होगा तो उनका धंधा धीरे-धीरे सिमटता चला जाएगा। बढ़ते जा रहे कुनबे की दैनिक जरूरतें पूरी करने के लिए लोहे की एक भट्ठी-धौंकनी से काम चलने वाला नहीं था।

खुशिया के पहले बेटे की दो औलादें हो चुकी थीं। खुशिया के दूसरे बेटे ने दसवीं पास कर ली थी। वह लाख कहता रहा कि कहीं स्कूल में चपरासी या फौज में भर्ती हो जाए, मगर खुशिया की इस दलील में दम था कि अव्वल खेती, मध्यम व्यापार और अधम नौकरी। नौकरी को तो वह चाकरी ही मानता था। फौज को इसलिए भी अच्छा नहीं माना जाता था क्योंकि गांवों में अनेक रिटायर्ड फौजी अधेड़ उम्र में ही घर आकर बैठ गए थे।

खुशिया की एक ही वर्कशॉप पर चारों जनों के लायक काम नहीं था। खुशिया और उसके छोटे बेटे खेती में ज्यादा ध्यान देने लगे थे। मेहनती थे, इसलिए काम की कोई कमी नहीं थी। सुबह से लेकर शाम तक वे खेतों में मिट्टी के साथ लोहा लेते। सर्दियों की ठिठुरती रातों में गेहूं के खेतों में नहर का पानी लगाते। जेठ की तपती दोपहरी में मकई की गुड़ई करते। तब जाकर अच्छी फसल के हकदार बनते। उन्हें बटाई की जमीन पर ज्यादा जोर लगाना पड़ता था, क्योंकि आधी फसल तो जमीन का असली मालिक ही ले लेता था।

तीसरे बेटे की शादी करने के बाद तो खुशिया पर जिम्मेदारियों का बोझ बढ़ता जा रहा था। घर में बीस से अधिक जीव थे और दर्जन से ज्यादा ढोर-डंगर। खुशिया बरगद सरीखा उस विशाल कुनबे का मुखिया था। सुबह उठते ही बेटों की ड्यूटी लगा देता था कि आज किस-किसने क्या-क्या काम करना है।

कई बार घर में किसी मामले को लेकर तकरार हो जाती और खुशिया छोटे या बड़े बेटे या अपनी पत्नी शांति से लड़-झगड़ बैठता तो गुस्से के मारे खाली पेट ही सारा दिन खेतों में जमीन को इकहरा-दोहरा करता रहता। शांति उसकी रोटी लेकर खेत पर जाती। खुशिया उसे अच्छी तरह फटकार लगाता कि वह बच्चों की तरफदारी क्यों करती है। शांति चुपचाप सारी डांट सह लेती। उसे खुशिया के स्वभाव का पता था। खुशिया का पारा जितना भी ऊपर चढ़ता, शांति उसे मना ही लेती।

बच्चों के लिए खुशिया दिन-रात मेहनत से लगा रहता था। आस-पास बीसियों ऐसे लोग थे जो काम के मामले में उतने मेहनती और फिक्रमंद नहीं थे। यही कारण था कि जहां खुशिया खा-पीकर भी अच्छे पैसे बचा लेता था, आस-पड़ोस वाले बहुधा तंग हाल ही रहते थे।

खुशिया की संपत्ति बढ़ती जा रही थी। तीनों बेटों के साथ एक संयुक्त परिवार में खुशिया की आवाज और उसकी राय की बहुत कद्र थी। आस-पास जहाँ बच्चों

और माँ-बाप के बीच झगड़ों का कारण आर्थिक खींचतान थी तो वहीं खुशिया के बच्चों को कभी ऊँची आवाज में बोलते किसी ने नहीं देखा था। घर में सुख और समृद्धि थी। खुशिया की नीतियां व्यावहारिक थीं। अपनी सूझ-बूझ के दम पर वह ऐसे फैसले लेता था कि उसे कभी घाटा हो ही नहीं सकता था। कहते भी हैं, 'जहाँ सुमति तहाँ संपत्ति नाना।'

जहां खुशिया इतना समझदार और व्यवहारकुशल था, उसकी पत्नी शांति उतनी ही सीधी और बातों की कच्ची थी। खुशिया के रौब के मारे कोई बच्चा या बहू खुशिया की पत्नी शांति को कुछ कहने की हिम्मत नहीं कर सकता था, मगर एक दिन वह भी आया कि शांति की अपने भरे-पूरे परिवार में अनदेखी और बेकद्री होने लगी।

खुशिया जब तक जिंदा था शांति के हाथों में ही घर की सारी बागडोर थी। इधर निमोनिया के कारण खुशिया खुदा को प्यारा हो गया तो घर की सत्ता केन्द्र के सारे समीकरण बिगड़ते चले गए। खुशिया तो बरगद के समान था, जिसकी छाया के नीचे सारा कुनबा फल-फूल रहा था। शांति और उसके जेठे पुत्र किसना के बस में नहीं था कि वे अपनी लियाकत या सूझ-बूझ के दम पर इतने बड़े कुनबे को एक साथ रख सकें।

खुशिया का सारा श्रम बेकार गया। खुशिया के मरने के एक साल के भीतर ही उसके बच्चों ने अपनी अपनी रसोई अलग कर ली। शांति के लिए यह कड़ी परीक्षा की घड़ी थी। वह फैसला नहीं कर पा रही थी कि वह किस बहू के साथ रहे। जमीन के तीन हिस्से बांट लिए गए। वर्कशॉप पर बड़े बेटे किसने का ही कब्जा कायम रहा क्योंकि पिछले कई सालों से सारा काम वही देखता था। शांति ने जमीन में अपना हिस्सा नहीं लिया। किसी ने उसे बताया ही नहीं कि पास कुछ न होने पर बहुएं उसे नहीं पूछेंगी। शांति को दमे का रोग लगा तो सारी बात वहीं से बिगड़ती गई।

हर चीज का इलाज हो सकता है, मगर बुढ़ापे का कोई हल नहीं। खुशिया के जाने के बाद शांति तेजी से ढलने लगी। उसकी तीनों बहुएं अपने-अपने घरों में शेर बन चुकी थीं। उनकी एक-दूसरे से रीस-परीसी में सबसे ज्यादा शांति को ही पिसना पड़ा। शांति की आंखें भी जाती रहीं। अपने मोतियाबिंद का ऑपरेशन उसने किसी अच्छी जगह से करवाया होता तो शायद यह नौबत न आती। उसका बोझ ढोने को कौन तैयार होता भला? उसका छोटा बेटा एक बार उसे शहर के एक अस्पताल में ले गया था तो डॉक्टर ने पचास हजार का खर्च बताया था।

घर में आकर भाइयों ने सलाह भी की थी कि मिलकर वे अपनी अंधी होती जा रही माँ की आँखों का ऑपरेशन करवा देते हैं, मगर खर्च के नाम पर एक राय न बन सकी। सबसे बड़े बेटे के बच्चे अब बड़ी कक्षा में पढ़ते थे। मंझले की जिद थी कि वह 5 सालों से माँ की देखभाल कर रहा है इसलिए ऑपरेशन का खर्च बाकी दोनों भाई दें। अंत में यही सलाह बनी कि पड़ोस के कस्बे में लगे मुफ्त आई-कैंप में शांति की आँखों का ऑपरेशन करवा देते हैं।

ऑपरेशन से शांति की रही-सही ज्योति भी चली गई। अब उसे दमे ने भी घेर लिया। दमे की मारी शांति अपनी कुटिया में दिन-रात अकेली ही पड़ी रहती। बिरादरी के डर से तीनों बहुएं एक एक टाइम का खाना उसके आगे रख आतीं। खुशिया जिंदा होता तो क्या यह सब होता?

आस-पास के लोग चर्चा करते कि शांति के तीन बेटे मिलकर एक अकेली माँ को प्यार और इज्जत की रोटी नहीं दे सकते। खुशिया अपने बेटों के लिए कितना कुछ कमा कर रख गया था, मगर अनपढ़ और सीधी-सादी शांति को अपना हक लेने का कोई इल्म नहीं था। उसकी जमीन सोना उगलती थी। खुशिया के नायाब दिमाग के कारण यह कुनबा गाँव में सबसे अमीर माना जाने लगा था।

खुशिया के बड़े बेटे किसने का बाग-परिवार बढ़ गया था। उसके घर दो बहुएँ आ गई थीं। पोते-पोती आंगन में खेलने लगे थे। किसना भी बरगद जैसा हो गया था। सारे इलाके में उसका बहुत रौब था।

जिस रात शांति अकेले कमरे में बिना किसी देखभाल के दम घुटने के कारण चल बसी, उससे एक दिन पहले गाँव में सरपंची के चुनाव थे। खुशिया का बड़ा बेटा किसना गांव का सरपंच बन गया था। बिरादरी को दिखाने के लिए सारा कुनबा शांति की मौत पर फूट-फूटकर रोया था। किसी ने यह नहीं सोचा कि पिछले दस बरसों से दमघोंटू बीमारी की मारी हर वक्त तड़पती अकेली उपेक्षित शांति ने उस अँधेरी काल कोठरी में एक-एक पल कैसे साँस ली होगी? ■

आपको यह अंक कैसा लगा, हमें जरूर बताएं

ई-मेल :
editorbhartiyarailrb@gmail.com

पत्र लिखें :
संपादक, भारतीय रेल,
337-बी, रेल भवन, नई दिल्ली-110 001

चित्रकूट

श्री सुरेन्द्र अग्निहोत्री

चित्रकूट मंदाकिनी नदी के किनारे पर बसा भारत के सबसे प्राचीन तीर्थस्थलों में एक है। उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में 38.2 वर्ग किमी के क्षेत्र में फैला शांत और सुन्दर चित्रकूट प्रकृति और ईश्वर की अनुपम देन है चित्रकूट! यह एक ऐसी अनुपम तपस्थली है, जहां की मिट्टी, पहाड़ों, वनों और झरनों की खुशबू देश-विदेश के योगियों, ऋषियों और श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करती रही है। विचित्रताओं के परिवेश में पल्लवित होती धरा का नाम अतीत से ही चित्रकूट ही है। बुन्देलखंड की वीर धरा पर आने वाला सैलानी यहां के अद्भुत नयनाभिराम दृश्यों को देखकर आनंदित हो उठता है। विचित्रताओं और विभिन्नताओं वाले इस क्षेत्र पर कहीं कल-कल करती मंदाकिनी का सुन्दर जल है तो कही विंध्य पर्वत श्रृंखलाओं का उन्मुक्त यौवन बिखेरती पहाड़ियां हैं तो कहीं सुन्दर गुफाओं में भित्ति चित्र हैं। विंध्य पर्वत में फैले विशालकाय वन आगन्तुक पर्यटकों का मन मोह लेते हैं। धर्म-अध्यात्म का संदेश सुनाता चित्रकूट देश में मौजूद अन्य पर्यटन केंद्रों से सबसे अलग है। इस भूमि पर जब तक प्रभु श्रीराम रहे, हर कंटक से मुक्त रहे। चित्रकूट आने वाले के मूल में धार्मिकता के दर्शन होते हैं। प्रकृति की अनमोल धरोहरों से आनंदित होता व्यक्ति जब सुबह उठते ही 'बम-बम भोले' और 'जय श्रीराम' के उद्घोष घंटे- घटियालों के साथ सुनता है तो वह रोमांचित होकर धर्म की इस नगरी में आकर अपने आपको पुण्य का सबसे बड़ा भागी मानता है।

रामघाट

मंदाकिनी के पश्चिमी तट पर बने हुए घाटों के मध्य में स्थित घाट को 'रामघाट' कहते हैं। इसका यह नाम पूज्य पाद गोस्वामीजी द्वारा भगवान राम के मस्तक में चन्दन लगाने की घटना से सम्बद्ध है। पूज्यपाद गोस्वामी जी को श्रीराम के दर्शन श्री हनुमानजी की प्रेरणा से इसी घाट में हुए थे, जिसका उल्लेख हनुमानजी के द्वारा कहे हुए दोहे से स्पष्ट होता है-

चित्रकूट के घाट पर भइ संतन की भीर।
तुलसीदास चन्दन घिसैं तिलक देत रघुवीर॥

तोतामुखी श्री हनुमानजी द्वारा इस दोहे का निर्देश किए जाने से यहाँ पर एक तोतामुखी हनुमानजी की प्रतिमा आज भी है।

दूसरी प्रसिद्धि 'श्रीरामचरितमानस' के अनुसार श्री राम का यह निर्देश कि-

रघुवर कहो लखन भल घाट।
करहु कतहु अब ठाहर ठाटु॥

यह भी रामघाट की ओर संकेत कर रहा है।

इस घाट के पश्चिम की ओर यज्ञवेदी एवं पर्णकुटी नामक स्थान आज भी स्थित है, जोकि भगवान राम के निवास की स्मृति को आज भी ताज़ा बना रही हैं।

गणेश बाग

चित्रकूट धाम कर्वी से लगभग 3 किमी दूर दक्षिण की ओर गणेशबाग स्थित है। यह स्थान श्री बाजीराव पेशवा के शासन काल में निर्मित हुआ था। गणेशबाग की स्थापत्य कला का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि पेशवा काल में स्थापत्य कला अपनी चरम सीमा पर थी। पंच मंजिलों के समूह को 'पंचायतन' कहते हैं। इस पंच मंजिले मन्दिर के शिखर पर काम

रामघाट

तोतामुखी हनुमान मंदिर

गणेश बाग

कला के खजुराहो शैली पर आधारित विस्तृत चित्रांकन है। कुछ स्वतंत्र मैथुन मुद्रा में हैं, तथा कुछ पुराणों एवं 'रामायण' पर आधारित हैं। यहाँ काम, योग तथा भक्ति का अद्‌भुत सामंजस्य देखने को मिलता है। मन्दिर के ठीक सामने एक सरोवर है, जिसके ऊपर मन्दिर की ओर स्नान के लिए एक हौज है, जिसमें दो छिद्रों से पानी आता है। मन्दिर में फानूस में लगे हुए लोहे के हुक आज भी कला-कृति एवं साज-सजावट की दस्तान बताते हैं। मन्दिर से कुछ हटकर पंचखंड की बावली है, जिसके चार खण्ड भूमिगत हैं। ग्रीष्म ऋतु में जलस्तर कम होने पर तीन खंडों के लिए रास्ता जाता है।

'कर्वी' पेशवा कालीन राजमहल (वर्तमान कोतवाली) से गणेश बाग तक गुप्त रास्ता है, जो पेशवाओं के पारिवारिक सदस्यों के आने-जाने के लिए प्रयुक्त किया जाता था। यदि इसे 'छोटा खजुराहो' कहा जाए तो अतिश्योक्ति न होगी।

कोटि तीर्थ

यह स्थान रामघाट से पूर्व 6 मील दूर स्थित है। यहाँ पर एक कोटि मुनीश्वर श्रीरामजी के दर्शनार्थ तप करते थे। उनके ऊपर प्रसन्न होकर श्रीरामजी ने सबको एक साथ दर्शन दिए। यहाँ पर एक शिवजी का मन्दिर है। इस स्थल को सिद्धाश्रम कहते हैं। अग्नि, वरुण, सूर्य, चन्द्र, वायु आदि अनेक तीर्थ के होने से इसे 'कोटि तीर्थ' कहते हैं।

हनुमान धारा

यह स्थान मन्दाकिनी गंगा से पूर्व 3 मील दूरी पर विंध्याचल की श्रेणी में स्थित है। कहा जाता है कि लंका को जलाते समय अग्नि की लपटों से संतप्त श्री मारुति नन्दन समुद्र में कूद पड़े थे, फिर भी उनका दाह दूर नहीं हुआ। अस्तु रामराज्य होने के बाद भगवान राघवेन्द्र की सेवा में रहकर श्री हनुमंत लालजी ने अपनी जलन की वेदना को शान्त करने के लिए भगवान श्रीराम से प्रार्थना की और भगवान राम ने उन्हें चित्रकूट में स्थित विंध्यगिरि पर निवास करने के लिए कहा, जहाँ पर पर्वत से निकली हुई जलधारा अनवरत आज भी श्री हनुमंत लालजी के पावन देह को प्लावित करती है। अत: यह स्थान 'हनुमान धारा' के नाम से प्रसिद्ध है। यहां रोप-वे बन गया है।

सीता रसोई

यह स्थान विंध्य पर्वत पर हनुमान धारा के ऊपर स्थित है। इसका पुराना नाम 'जमदग्नि तीर्थ' है। ऐसी किंवदंति है कि

हनुमान धारा, चित्रकूट

भगवान राम एवं लखनलालजी के लिए माँ जानकीजी ने इस स्थान पर फलाहार तैयार किया था। अत: इस स्थान को 'सीता रसोई' के नाम से जाना जाता है।

राघव प्रयाग

यह स्थान मन्दाकिनी गंगा के पश्चिम तट पर स्थित है। यहाँ पर मन्दाकिनी पयस्वनी एवं सरयू गंगा का संगम है। इन तीनों नदियों के उद्‌गम स्थान पृथक्-पृथक् हैं। मन्दाकिनी अत्रि मुनि के आश्रम से निकली है। पौराणिक गाथा के अनुसार, श्री अत्रि मुनि की पत्नी अनुसुइयाजी ने अपने तपोबल से प्रकट किया है। पयस्वनी गंगा का उद्‌गम ब्रह्मकुण्ड है, जो श्री कामदगिरि के दक्षिण तट पर स्थित है। कामदगिरि के उत्तरी तट से श्री

सरयूजी का उद्गम है। यहीं तीनों नदियाँ मिल करके प्रयाग के रूप में परिवर्तित हो जाती हैं। रघुकुलभूषण श्रीरामजी ने अपने पूज्य पिता के लिए यहीं पर पिण्डदान दिया था, इसलिए उक्त स्थान को 'राघव प्रयाग' कहा जाता है।

श्री कामदगिरि

पूर्वोक्त श्री कामदगिरि पर्वत के सम्बन्ध में कहा जाता है, कि यह चित्रकूट का प्रधान अंग है। इसके सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि पर्वत कई तरह की धातुओं, मणियों से अलंकृत है। प्रमाण में इस श्लोक को प्रस्तुत करते हैं -

सुवर्ण कूटं रजताभिकूटं, माणिकयकूटं मणिरत्नकूट्म।
अनके कूटं बहुवर्ण कूटं, श्री चित्रकूटं शरणं प्रपद्य॥

इस पर्वत में रघुकूल भूषण श्रीराम ने अपने वनवास के काल में जीवन के साढ़े ग्यारह वर्ष व्यतीत किए। उनके रहने से यह पर्वत ऋतु में प्रत्येक प्रकार के फलों, पुष्पों आदि से भरा पूरा रहता था एवं श्रीराम की ही कृपा से यह मनुष्यों की सम्पूर्ण कामनाओं का पूर्ण करने वाला है-जैसे कि 'श्रीरामचरितमानस' में लिखा है।

कामद्गिरी में राम प्रसादा।
अवलोकत अपहरत विषादा॥

श्रद्धापूर्वक नर-नारी इस पर्वत की परिक्रमा लगाते रहते हैं।

कामदगिरि हनुमान धारा रोपवे

मुख्यद्वार

चित्रकूट का सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान श्री कामदगिरि है। इसको भगवान का ही स्वरूप माना जाता है। इसमें प्रवेश के चार द्वार हैं, जिसमें श्री कामदगिरि का उत्तरी द्वार मुख्यद्वार के नाम से जाना जाता है। श्री रामघाट से स्नान करके अधिकतर लोग श्री कामदगिरि के मुख्य दरवाजे पर आते तथा यहीं से प्रदक्षिणा आरम्भ करते हैं। इस स्थान में वैष्णव सन्तों के आश्रम बने हुए हैं।

भरत मिलाप

कैकेयी के द्वारा श्रीराम को वनवास दे दिए जाने पर जब श्री भरत अपने ननिहाल से अयोध्या पहुंचे तथा उन्हें श्रीराम के वनवास की खबर मिली, तब वह अपने छोटे भाई शत्रुघ्न सहित गुरु वशिष्ठ एवं तीनों माताओं, मंत्रियों तथा राज्य के असंख्य नर-नारियों को लेकर भगवान राम को मनाने चित्रकूट आए और श्री कामदगिरि के दक्षिण किनारे पर भगवान राम से उनका मिलाप हुआ। उनके मिलाप काल में पर्वत का जड़ पाषाण भी द्रवित हो उठा, जिसके कारण पाषाण शिला में उनके चरण चिन्ह अंकित हो गए हैं। बन्धुओं का यह मिलन भारतीय संस्कृति में स्नेह का जीता-जागता स्वरूप है। पूज्यपाद गोस्वामीजी ने 'श्रीरामचरितमानस' में दिखाया है कि सारा विश्व इनके मिलन को अपलक देखता रह गया था, जैसे -

बरबस लिए उठाइ उर, लाए कृपानिधान।
भरतराम की मिलनि लखि, बिसरे सबहि अपान॥

लक्ष्मण पहाड़ी

श्री कामदिगरी के दक्षिण में 'लक्ष्मण पहाड़ी' नाम की छोटी पहाड़ी है, जिसमें श्री लक्ष्मणजी का मन्दिर है। कहा जाता है कि भगवान राम और अम्बा जानकी रात्रि में जब सोते थे, तब शयनस्थान से कुछ दूर, हाथ में धनुष-वाण ले करके उनकी रक्षा में जागरण किया करते थे - जैसे कि 'मानस' में उल्लेख है कि -

कछुकि दूरि धरि वान सरासन।
जागन लगे बेठि बीरासन॥

यहाँ पर एक कूप है, जो धरातल के स्तर से काफी ऊँचाई में स्थित है, किन्तु इसमें हमेशा जल मौजूद रहता है। मन्दिर से सम्बन्धित एक दलान है, जिसमें कुछ स्तम्भ हैं, जिन्हें लोग सप्रेम भेंट करते हैं। यूपी का पहला रोप-वे का निर्माण 'लक्ष्मण पहाड़ी' पर हो जाने से पर्यटकों को 400 सीढ़ियों पर चढ़े बिना ही दर्शन लाभ मिल रहा है।

जानकी कुण्ड

यह स्थान प्रमोद वन से दक्षिण की ओर 2 फर्लांग की दूरी पर श्री मन्दाकिनी के पश्चिमी तट पर स्थित है। यहाँ पर एक कुण्ड है। कहा जाता है कि इसी कुण्ड में जगत् जननी जानकीजी ने स्नान किया था। इसी कारण इसको 'जानकी कुण्ड' कहते हैं। यहाँ पर आज भी पाषाण शिला में श्री जानकीजी के चरण-चिन्ह अंकित हैं, जो उनकी स्मृति को इतने समय बीतने पर भी ताजा बनाए हुए हैं। यहाँ बहुत से ऋषिगण फलाहार करके श्रीरामजी की आराधना करते हैं। यहां श्री जानकी मन्दिर, हनुमान मन्दिर तथा रामानन्दाश्रम आदि प्रसिद्ध मन्दिर हैं।

रघुवीर मन्दिर

यह स्थान मन्दाकिनी गंगा के पश्चिम तट पर जानकी कुण्ड में स्थित है। इसका निर्माण वीतराग महान तपस्वी परमार्थ भूषण संत शिरोमणि श्री रणछोड़दास महाराज से विशेष आग्रह करके, उनके प्रिय शिष्य श्री भीमजी भाई ने विक्रम संवत् 2009 में कराया। यहां पर भगवान श्री राम, अम्बा जानकीजी की मूर्ति विराजमान है। इस मंदिर के समीप उत्तर की ओर परम पूज्य श्री

रड़छोड़दासजी का मंदिर है, जिसमें उनकी मूर्ति विराजमान है। पूज्य महाराज श्री की तपस्या का प्रभाव दिगदिगन्त में व्याप्त था। इनका सबसे बड़ा उद्देश्य परोपकार था। दीन-हीन व्यक्तियों की सेवा करने में इन्हें परमानन्द की प्राप्ति होती थी। वे अपने शिष्यों को यही उपदेश देते थे कि दूसरों की सेवा करो। सेवा ही भजन है, धन की सर्वश्रेष्ठ गति परोपकार है। इस सम्बन्ध में उनका एक बहुत प्रिय दोहा उद्धृत है -

पानी पीने से, घटै न सरिता नीर।
धर्म किए धन न घटै, सहाय करै रघुवीर॥

अत: श्री महाराजजी ने सन्तों की सेवा के लिए सदाव्रत एवं भारतीय संस्कृति के रक्षा के लिए संस्कृत विद्यालय की स्थापना की थी। यह सेवा अनावरत चलती रहे, इसलिए 'श्री रघुवीर मन्दिर ट्रस्ट' की स्थापना श्री महाराजजी ने सन् 1968 में की थी, जो आज भी विद्यमान है।

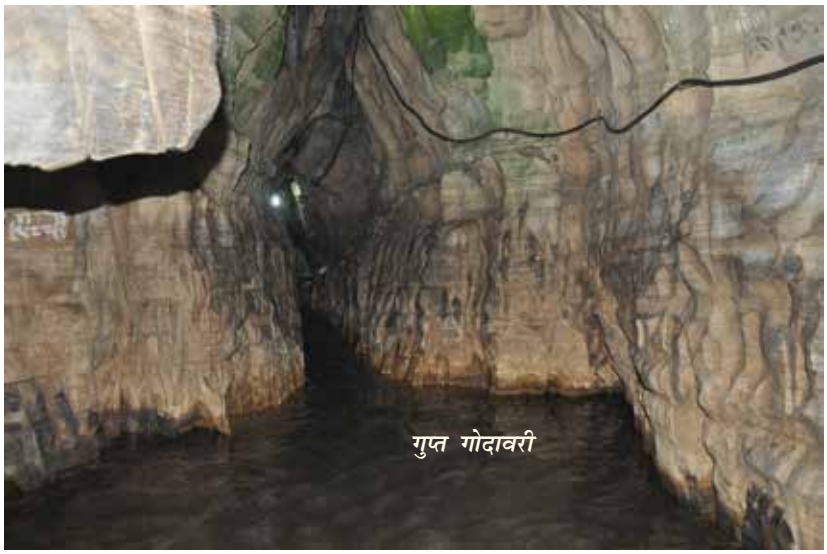
गुप्त गोदावरी

स्फटिक शिला

यह जानकी कुण्ड से 1 किमी दक्षिण मन्दाकिनी किनारे पर स्थित है। 'श्रीरामचरितमानस' के अनुसार, श्रीरामजी ने इसी शिला पर माँ जानकी का शृंगार किया था, जैसे-

एक बार चुनि कुसुम सुहाए।
निसकर भूषन राम बनाए॥
सीतहि पहिराए प्रभु सादर।
बैठे स्फटिक शिला पर सुन्दर॥

देवांगना तीर्थ में श्रीरामजी तथा लखन सहित मां जानकी के दर्शन कर देवकन्या स्वर्गलोक गई। स्वर्गलोक जाकर अपने पति जयन्त से श्रीराम सीताजी के दर्शन के लिए कहा, तो जयन्त ने कहा कि स्वर्गलोक का वासी मृत्युलोक में दर्शन नहीं करेगा। फिर भी जब देवकन्या नहीं मानी, तब जयन्त ने आकर कौवे का रूप धारण किया तथा सीताजी के चरण में चोंच मार के भागा। उसी क्षण जयन्त की दुष्टता पर श्रीराम ने ब्रह्म कण का प्रयोग किया था। अन्त में जयन्त ने दुष्टता पर क्षमा माँगी।

वर्तमान में श्रीराम जानकी एवं जयन्त चिन्ह अंकित हैं। यह शिला स्फटिक मणि के सदृश उज्ज्वल है, जिससे इसे 'स्फटिक शिला' कहते हैं, इसके पश्चिम लक्ष्मण शिला तथा श्रीरामजी का मन्दिर स्थित है।

श्री वाल्मीकि आश्रम

यह स्थान चित्रकूट से कर्वी इलाहाबाद मार्ग पर 32 किमी पूर्व स्थित है। यहाँ श्री वाल्मीकिजी का आश्रम है। कहा जाता है कि श्री वाल्मीकिजी ने 'रामायण' की रचना यहीं पर की थी, जोकि संस्कृत भाषा का आदि काव्य माना जाता है। वनवास के समय भगवान श्रीराम ने यहाँ आकर श्री वाल्मीकिजी से अपने निवास के लिए स्थान पूछा, तो श्री महर्षिजी ने चित्रकूट में रहने के लिए निर्देश किया था - जैसा 'श्रीरामचरितमानस' में कहा है -

चित्रकूट गिरी करहु निवासू।
जहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू॥

यहाँ पर एक छोटी-सी पहाड़ी है, जिसमें देवीजी की मूर्ति है। यहाँ संस्कृत विद्यालय भी है।

सती अनुसूइया

यह स्थान स्फटिक शिला से लगभग 10 किमी दूर मन्दाकिनी के तट पर स्थित है। यहाँ पर महर्षि अत्रि का आश्रम है। महर्षिजी की परम सती तपस्विनी पति परायण पत्नी अनुसूइया देवी के सतीत्व के प्रताप से से मन्दाकिनी गंगा का उद्गम हुआ है। सती अनुसूइया ने अपनी सतीत्व की परीक्षा में आए हुए ब्रह्मा, विष्णु और शंकर को बालक के रूप में परिवर्तित कर दिया था, जिससे उनकी सतीत्व की प्रशंसा त्रैलोक्य ने की थी, और सबने उनके चरणों में सिर झुकाए थे। यही कारण है कि यह स्थान सती अनुसूइया के नाम से प्रसिद्ध है।

वायु मार्ग

चित्रकूट का नजदीकी विमानस्थल प्रयागराज है। खजुराहो चित्रकूट से 185 किमी दूर है। चित्रकूट में भी हवाई पट्टी बन कर तैयार है, लेकिन यहां से उड़ानें अभी शुरू नहीं हुई हैं।

रेल मार्ग

चित्रकूट से 8 किमी दूर कर्वी निकटतम रेलवे स्टेशन है। प्रयागराज, जबलपुर, बांदा, दिल्ली, झांसी, हावड़ा, आगरा, मथुरा, लखनऊ, कानपुर, ग्वालियर, झांसी, रायपुर, कटनी, मुगलसराय, वाराणसी, बांदा आदि शहरों से यहाँ के लिए रेलगाड़ियां चलती हैं।

सड़क मार्ग

चित्रकूट के लिए प्रयागराज, बांदा, झांसी, महोबा, कानपुर, छतरपुर, सतना, अयोध्या, लखनऊ, मैहर आदि शहरों से नियमित बस सेवाएं हैं। दिल्ली से भी चित्रकूट के लिए बस सेवा उपलब्ध है। ■

सिक्किम

(पहला भाग)

डॉ. मुकुल श्रीवास्तव

मेरे लिए यात्रा का मतलब घूमना कभी नहीं रहा। अमूमन मेरा पालन-पोषण जिस परिवेश में हुआ है वहां महज घूमने के लिए यात्रा करना पैसे की बर्बादी है। हाँ, अगर आप किसी काम से कहीं जा रहे हैं और उसके साथ यात्रा हो जाए तो बढ़िया। मैंने अपने जीवन में कई परम्पराओं को तोड़ा है जिसके गवाह मेरे अपने रहे हैं। जब तक माता-पिता के ऊपर आर्थिक रूप से निर्भर रहा, उनके हिसाब से जीवन जीया, पर जैसे ही आर्थिक रूप से स्वावलंबी हुआ, सारी बेड़ियाँ एक-एक करके तोड़ता गया और उन्हीं बेड़ियों में से एक है कि जब मौका मिले, कहीं घूमने निकल जाओ। सच बताऊँ, मैं बहुत आरामतलब आदमी हूँ और यात्रा मुझे कष्ट देती है, पर यह कष्ट मुझे मजा देता है। हर यात्रा के बाद मैं एक नए तरह का नजरिया लेकर वापस लौटता हूँ। मैं कौन हूँ, इस दुनिया में क्या कर रहा हूँ, ऐसे प्रश्नों के जवाब तो नहीं मिलते, पर जवाब के थोड़ा और करीब हो जाता हूँ और शायद इसीलिए जब भी मुझे मौका मिलता है, मैं इस कष्ट का मजा लेने निकल पड़ता हूँ।

वो कहते हैं न 'मेरे मन कुछ और कर्ता के मन कुछ और' तो जिस यात्रा के लिए मैं इस बार निकल रहा था तब मेरे दिमाग में सिर्फ कुछ दिन आराम करना और भारत को थोड़ा और करीब से देखने से ज्यादा कुछ नहीं था। पर जब मैं इस यात्रा से लौटा तो जीवन के प्रति एक नया नजरिया पुष्ट होता गया और वो था 'कर्ता बनने की कोशिश न करो'। जीवन एक नदी है। बस, जिस तरफ नदी ले जा रही है, चुपचाप बहते चलो। हम कुछ नहीं कर रहे हैं, हमसे सब करवाया जा रहा है क्योंकि हमारा जीवन एकांगी नहीं। यह बहुत से लोगों के जीवन से बंधा हुआ है, इसलिए यह संभव ही नहीं है कि आप कुछ कर रहे हैं। मैं अपनी बात और स्पष्ट करता हूँ और लौटता हूँ उस यात्रा वृत्तांत की ओर, जिसकी उम्मीद में आप मेरा यह लेख पढ़ रहे हैं। इस बार मैंने पूर्वोत्तर भारत देखने का निश्चय किया, पर कहाँ जाऊं, कुछ समझ नहीं आ रहा था। गूगल किया और उससे भ्रम काफी बढ़ गया। पूर्वोत्तर में कई राज्य हैं, सबकी अपनी विशिष्टताएं हैं। मेरे पास किसी तरह एक हफ्ते

का समय था तो मैंने सिक्किम जाने का निश्चय किया और जिसमें तीन दिन गंगटोक, एक दिन पीलिंग और दोदिन दार्जिलिंग शामिल थे। मैंने पहले ही लिखा मैं बहुत आरामतलब इंसान हूँ और इसी कारण पहले से ही सब व्यवस्था कर ली थी।

दिल्ली से बागडोगरा हवाई जहाज से, लखनऊ से दिल्ली ट्रेन से, सब निश्चित था। मतलब, कहीं कोई तनाव न हो और मैं यात्रा का लुत्फ उठा सकूँ, पर यहीं से होनी का खेल शुरू हुआ। मेरी फ्लाइट के जाने और ट्रेन के पहुँचने के बीच लगभग सात घंटे का फासला था, पर हमारी ट्रेन रास्ते में ही रह गई और फ्लाइट हमें छोड़ कर बागडोगरा के लिए उड़ गई। यात्रा अभी शुरू हुई ही थी कि मेरे अनुभवों का खजाना भरने लग गया। एक नए तरह का अनुभव, जिसकी आज तक कोई ट्रेन न छूटी हो उसे हवाई जहाज के छूटने का सदमा सहना था। खैर, थोड़ी देर तनाव रहा, फिर 'गीता सार' याद आया कि 'क्या ले के आए थे', बस, सारा तनाव छू-मंतर। अब शांत दिमाग से आगे की योजना पर ध्यान देना था, नए टिकट बुक करने थे और समय पर बागडोगरा पहुंचना था, जिससे आगे की बुकिंग न प्रभावित न हो। खैर, एयरपोर्ट पहुँचने से पहले मैं टिकट बुक कर चुका था। अब अगली फ्लाइट का इन्तजार था, जो दिन के 03:00 बजे उड़ने वाली थी। मैं सोच रहा था कि अगर मेरी फ्लाइट न छूटी होती तो इस वक्त मैं बागडोगरा में होता। खैर, जीवन 'यूँ होता तो क्या होता' जैसी सोच में बीत ही जाता है। खैर, हम नियत समय पर बागडोगरा पहुँच गए। बागडोगरा एयरपोर्ट सिलीगुड़ी शहर में सेना द्वारा बनाया एयरपोर्ट है। हरे-भरे खेतों के बीच एक बहुत छोटा-सा हवाई अड्डा, जहाँ आप परेशान हो जाएगे। पिछले एक दशक में पूर्वोत्तर भारत आने वाले पर्यटकों की संख्या में खासी वृद्धि हुई है, पर एअरपोर्ट की हालत बुरी है। खैर, दिनभर की भागा-दौड़ी के बाद अभी हम अपनी मंजिल पर नहीं पहुंचे थे। यहाँ से सिक्किम की राजधानी गंगटोक हमारा ठिकाना थी। लगभग 120 किमी की सड़क यात्रा अभी और करनी थी, और वह भी पहाड़ी रास्तों में! हमारी टैक्सी पहले से ही बुक थी।

ड्राइवर सुकुल राय मिले। पहली नजर में मुझे वो एक घाघ टैक्सी ड्राइवर लगे। मैंने सोचा, पूरे रास्ते मैं चुप रहूँगा और दिन भर की थकान को सोकर पूरा करूँगा। और हो भी क्यों न, मैं सुबह 03:00 बजे से जग रहा था और मेरी ट्रेन के दिल्ली पहुँचने का सही समय 04:30 बजे था। खैर, हम बागडोगरा एयरपोर्ट से बाहर आए। कहने को हम पश्चिम बंगाल में थे, पर हर जगह बिहार के लोग मिल रहे थे। उनके बोलने के अंदाज से साफ अंदाजा लगाया जा सकता था कि इनकी जड़ें बिहार में हैं। मैंने सुकुल जी से पूछा गंगटोक पहुँचने में कितना वक्त लगेगा तो उसने कहा कि हम बड़ी आसानी से तीन साढ़े तीन घंटे में गंगटोक पहुँच जाएंगे। मैंने शुक्र मनाया कि रात के 09:00 बजे तक हम होटल के अपने कमरे में होंगे, पर वो दिन सचमुच एक खराब दिन था और आगे नियति हमारे सब्र की और परीक्षा लेने वाली थी। हम सिलीगुड़ी से गंगटोक के लिए बढ़े। जमीन धीरे-धीरे ऊँची होने लगी। मतलब, हम पहाड़ पर जा रहे थे। सच बताऊँ, किताबों के अलावा मुझे पूर्वोत्तर भारत का कोई खास अंदाजा नहीं था, पर यह यात्रा मेरी भारत के बारे में धारणा को हमेशा के लिए बदलने वाली थी। हम उत्तर भारतीय लोग सिर्फ टीवी चैनल से अंदाजा लगाते हैं कि भारत क्या है और उसकी समस्याएं कैसी हैं? मेरे अंदाजे के विपरीत सुकुल (ड्राइवर) एक भले और ईमानदार इंसान निकले। अगर उनको मैं पूर्वोत्तर के वाहन चालकों का प्रतिनिधि मानूं तो जो मेरी धारणा उत्तर भारत के ड्राइवरों को देख कर बनी थी

कि पूर्वोत्तर के ड्राइवर ज्यादा स्वाभिमानी और मेहनतकश होते हैं। उन्होंने बताया हम लगभग दो घंटे पश्चिम बंगाल में चलेंगे और पैंतालीस मिनट सिक्किम में। शाम हो चुकी थी, सूरज डूब रहा था और पहाड़ पहले हरे फिर धीरे-धीरे काले होने लग गए। हवा में ठंडक थी, पर इतनी भी नहीं कि आपको ठंडक लगे। गाड़ी के शीशे खोल दिए गए और मैं जल्दी से सिक्किम पहुँच जाना चाहता था।

पहाड़ी संकरे रास्ते को सुकुल जी नेशनल हाई-वे बता रहे थे। इतने संकरे रास्ते को हम उत्तर भारतीय गली ही कह सकते हैं। गाड़ी धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। मेरी निगाह थकान के बावजूद रास्ते पर जमी हुई थी। मेरा एक अवलोकन रहा है कि वो चाहे लद्दाख हो या उत्तरांचल या फिर ओडिशा और अब पूर्वोत्तर की देहरी पर सड़क किनारे एक खाने की चीज जरूर मिलती और वो है भुट्टा (मक्का)! यहाँ भी सड़क के किनारे भुट्टे बिक रहे थे। बीच-बीच में कुछ लोग मुजफ्फरपुर की लीची भी बेच रहे थे। हालांकि उससे सस्ती लीची मैं लखनऊ में खाकर गया था। हमारे साथ-साथ तिस्ता नदी भी अपनी रास्ता तय कर रही थी। वही तिस्ता जिस पर येशु दास का मशहूर गाना 'तिस्ता नदी सी तू चंचला' सुनकर मैं बड़ा हुआ था। अँधेरा पूरी तरह घिर चुका था, पर सड़क पर लगने वाला जाम खत्म होने का नाम नहीं ले रहा था। हमारी गाड़ी सरक-सरक कर आगे बढ़ रही थी। सुकुलजी, जो मूलत: सिक्किम के रहने वाले नेपाली गोरखा थे, अपनी स्थानीय भाषा में आते हुए अपने साथी ड्राइवरों से बात कर रहे थे। उनसे मिली सूचना के हिसाब से हमारे पहुँचने का समय अब बढ़कर रात के 11:00 बजे हो चुका था। उन्होंने जाम लगने की जो कहानी बताई वो काफी रोचक थी। दो दोस्त एक इनोवा गाड़ी पर जा रहे थे। दोनों में किसी बात पर झगड़ा हुआ और एक दोस्त ने इनोवा की चाभी निकाल कर उसे नीचे खाई में फेंक दिया और उनकी गाड़ी रोड पर खड़ी हो गई। बाद में सेना की मदद से किसी तरह उनकी गाड़ी सड़क के किनारे की गई। हमने जाते समय रोड पर उस खड़ी इनोवा और उन दोस्तों को भी देखा, जिनको पुलिस वाले कुछ समझा रहे थे। धीरे-धीरे रात गहराने लग गई और रास्ते सूने होने लग गए। दुकाने बंद थीं। मैंने पूछा कि इतनी जल्दी? अभी तो 08:00 ही बजे हैं। सुकुलजी ने बताया कि यहाँ शाम के 7:00 बजे दुकानें बंद हो जाती हैं और सुबह चार 04:00-05:00 बजे खुल जाती हैं।

मैं भारत में ही था, पर रास्ते में कोई गाड़ी हॉर्न नहीं बजा रही थी। सब शान्ति से एक-दूसरे को पास देते हुए आगे बढ़ रहे थे। चढ़ती गाड़ी को रास्ता देने के लिए अगर गाड़ी थोड़ी पीछे भी करनी पड़े तो कोई हर्ज नहीं। सब कुछ शान्ति से हो रहा था। मोड़ पर जब दोनों तरफ की गाड़ियां एकदम अगल-बगल होतीं, ड्राईवर हँसते-मुस्कुराते हुए एक-दूसरे का हाल-चाल लेते। तिस्ता नदी की हर्र-हर्र की आवाज डराने वाली थी। रास्ते में कई बाँध भी मिले, जिनसे बिजली की जरूरतों को पूरा किया जा रहा है, पर रात होने के कारण हम गाड़ी से नहीं निकले। फोटो खींचने का कोई सवाल ही नहीं था। रात के 10:00 बज चुके थे अभी हम गंगटोक से एक घंटे दूर थे, पर भूख जोर मार रही थी। सोचा, चलो किसी पहाड़ी ढाबे के भोजन का आनंद लिया जाए। वो भी धीरे-धीरे बंद हो रहे थे।

तिस्ता दिन के समय

गाड़ी किनारे लगी। हमने चाउमीन और चाय का ऑर्डर दिया। सुकुलजी ने हाथ-मुंह धोने के लिए एक जगह दिखाई। मैंने हाथ-मुंह धोने के बाद जैसे ही सिर उठाया, नीचे विशाल तिस्ता नदी अपने पूरे वेग से उस चांदनी रात में बहती दिखी। उस दूधिया रौशनी में तिस्ता का पानी चांदी जैसा चमक रहा था और मैं विस्मित खड़ा सोच रहा था कि आखिर कौन थे वे लोग जो सबसे पहले मानव सभ्यता के केन्द्रों से दूर यहाँ आकर बसे होंगे, जहाँ जीवन कठिन, लेकिन खूबसूरत है। वो कौन से कारण रहे होंगे जो लोगों को मैदान छोड़कर पहाड़ में बसने के लिए प्रेरित करते होंगे, वो भी तब, जब सभ्यता को विकास का रोग नहीं लगा था और यहाँ बसना बहुत दुष्कर रहा होगा। बात ड्राइवरों की हो रही थी। जब हम नाश्ता कर रहे थे तो मैंने सुकुलजी से कहा, ''आप भी नाश्ता कर लो''। उन्होंने विन्रमतापूर्वक कहा कि वो सिर्फ चाय पिएंगे। हम चाय पी ही रहे थे कि मैंने उनको अपने लिए एक शीतल पेय खरीदते देखा। चूँकि उत्तर भारत में हमने ड्राइवरों का एक दूसरा रूप देखा है, जिसमें भले ही ट्रेवल एजेंसी कहती है कि उनके खाने-पीने से सवारी को कोई मतलब नहीं रहेगा, पर वे इस जुगाड़ में रहते हैं कि पैसेंजर उनके खाने-पीने का खर्चा उठाए, पर यहाँ का ड्राइवर इस सारे मामले से ऊपर है और अपने खाने-पीने का बोझ किसी भी जुगत से अपनी सवारी पर नहीं डाल रहा था। मैंने तुरंत उन्हें पैसा देने से रोका और कहा कि इसका पैसा भी मैं ही दूंगा। हमारे इस वार्तालाप में ढाबा मालिक भी शामिल हो गया। उसने पूछा कि मैं कहाँ से आया हूँ। मैंने गर्व से बताया कि लखनऊ से। बस, फिर क्या था? वो बताने लगा वो भी लखनऊ से है और विकास नगर में घर है। मैंने कहा, ''यहाँ काहे चले आए जंगल में?'' उसने कोई स्पष्ट जवाब नहीं दिया और मुस्कुरा के बात को बदल गया। उसकी बोलने की शैली से लग रहा था कि उसकी जड़ें बिहार में हैं। हो सकता है, लखनऊ में कोई रिश्तेदार रहता हो या उसका आना-जाना लगा रहता हो। एक उत्तर भारतीय के ढाबे में सारे कामगार मजदूर स्थानीय लोग थे। यही है चमत्कार। वो अपनी जमीन पर मजदूर थे और बाहर से आया एक आदमी मालिक बना बैठा था। अभी हमारा सफर जारी था। सुकुलजी की हिन्दी को समझने में थोड़ी दिक्कत हो रही थी, इसलिए ज्यादा बातचीत न हो पा रही थी, पर एक चीज हम दोनों में कॉमन थी और वो थी पुराने हिन्दी गानों के प्रति प्रेम, खासकर नब्बे के दशक के जब हम जवान हो रहे थे। शांत चांदनी रात में हम नदीम श्रवण, कुमार शानू, अलका याग्निक और समीर की शानदार जुगलबंदी में गंगटोक की तरफ बढ़ते चले जा रहे थे। रास्ते धीरे-धीरे चौड़े होते जा रहे थे, पर ऊँचाई बढ़ती जा रही थी। सिक्किम में प्रवेश का एक विशाल द्वार हमारा स्वागत कर रहा था और गूगल मैप बता रहा था होटल देवाचीन रिट्रीट दस मिनट की दूरी पर है। हम गंगटोक में थे। ... ■

डिपार्टमेंट ऑफ जर्नलिज़्म एंड मास कम्यूनिकेशन
लखनऊ विश्वविद्यालय

मर्दाना जिस्म, वो भी रूई के फाहे-से नरम

धरम

श्री अविनाश त्रिपाठी

दिसम्बर की बेहद ठंडी रात में जब कोहरे की रजाई में लिपटे सितारों से ठंडी आंच रह-रह कर झर रही थी, पंजाब के एक गाँव के घने तिमिर में अचानक एक बाल रुदन से घर के प्रतीक्षारत चेहरों पर मुस्कान आ जाती है। गाँव के तालाब, खेत की मिट्टी में धूल के फूल की तरह पलता-बढ़ता यह बच्चा बड़ा होकर लुधियाना के स्कूल से जिन्दगी का ककहरा सीखने लगता है। ग्राम बालक के कच्चे भीगे मन में न जाने कहाँ से श्वेत धवल परदे पर अपनी आकृति उकेरने का शौक चढ़ गया। जहाँ चाह रगों से होते हुए रूह में मिल जाती है, उसका रास्ता निकालने को परमेश्वर भी मजबूर हो जाते हैं। एक दिन मैगजीन में नए अभिनेता की तलाश का इश्तेहार देखा और पंजाब के शादाब गाँव से निकले इस उठते-से नौजवान ने पाँव में मुंबई का सफर बाँध लिया। लगभग 6 दशक तक किरदारों को अपना जिस्म चेहरा और रूह देते इस सबसे खूबसूरत मरदाना अभिनेता का नाम धर्मेंद्र, धर्मेंद्र सिंह देओल था।

फिल्मफेयर की प्रतियोगिता जीत धर्मेंद्र मुम्बई में 'दिल भी तेरा, हम भी तेरे' से परदे के अपने ख्वाब को पूरा करने निकल पड़ते हैं। सुनहरा सफर जब 'बंदिनी' के पड़ाव तक पहुँचता है, धरम, लड़कियों की चाहत की फेहरिस्त में शिखर पर पहुंच जाते हैं।

परदे पर धर्मेंद्र जब रौशन होते, लड़कियों के दिल, दिल के दरिया में डूबने लगते। धरम अपनी नायिका को प्रेम करते तो दर्शकों में लाखों लड़कियों के हृदय के रेतीले कछार टूट जाते। मर्दाना खूबसूरती, पुरुषत्व से भरे, बलिष्ठ शरीर वाले धरम बेहद सहज अभिनय वाले अभिनेता रहे। नूतन के साथ 'बंदिनी' में धरम जिस्म के उधड़े हुए जख्म को सी, न जाने कब रूह की परतें सँवारने लगते हैं। जेल में कैदी की भूमिका में नूतन जीवन के उहापोह में होती हैं। जेल के डॉक्टर बने धरम कैदी नूतन के रिसते जख्म पर सहानुभूति का ठंडा फाहा रख देते हैं। बिमल रॉय की इस फिल्म ने धरम के मजबूत कद-काठी में बेहद नाजुक तरह से धड़कते दिल को दुनिया के सामने रख दिया। धरम के

ख्वाब अब रंग ले रहे थे। 'काजल' में मीना कुमारी से अभिनय की नई बारीकी सीखते धरम को मीना का साथ अच्छा लगने लगा और दिल का एक अनछुआ हिस्सा नम होने लगा। नूतन के साथ बंदिनी में प्यार के शीर्ष बिंदु तक पहुंचते धरम एक बार 'दिल ने फिर याद किया' में नूतन के समक्ष खड़े होते हैं। इस बार नूतन के दोहरे किरदार की उलझन में सुलझन तलाशते धरम मोहब्बत में पड़े हुए किरदार में मोहब्बत की नई ऊंचाई पाते हैं।

अपनी कद-काठी, ग्रामबालक की सहजता, बेहद गढ़े हुए सुदर्शन चेहरे के अनुरूप ख्याति तो मिल गई थी, लेकिन घने तिमिर वाली रात में ध्रुवतारा बनना अभी भी बाकी था। यह जादू हुआ 'फूल और पत्थर' में, जब धरम एक अभिनेता से एक बड़े स्टार में तब्दील हो गए। दुनिया की नाइंसाफी का शिकार धरम एक दिन एक घर लूटने चलता है और बीमार मीना कुमारी की हालत उसे इंसान बना देती है। पहली बार बिना कमीज के दिखे धरम और कलाकृति-सी मांसपेशियों में न जाने कितनों का दिल लपेट लेते हैं। मीना कुमारी का धरम के प्रति अनुराग हर फ्रेम में सुलगता हुआ दिखाई देता है। बेहद शालीन, सुदर्शन धरम का अभी कई चेहरे इंतजार कर रहे थे। 70 के दशक में धरम ने अपना चेहरा बदला और अमिताभ के साथ 'शोले' में बीरू हो गए। यह फिल्म धरम के परदे की जिन्दगी में बेहद महत्त्वपूर्ण होने के साथ उनके निजी जीवन की जरूरी फिल्म बन गई। किरदार की लोकप्रियता के साथ धरम ने उस गाँव की दोशीजा का भी दिल जीत लिया, जिसके घर के बाहर बहुत-से अभिनेताओं की कतार लगी थी। स्वप्नसुंदरी हेमा मालिनी बीरू के प्यार में हार अपनी जिन्दगी उनके नाम लिख देती हैं।

हालाँकि शोले से पहले 'सीता और गीता', 'राजा जानी' जैसी कई फिल्म में धरम और हेमा अपने किरदारों के बहाने मोहब्बत की आग को हवा दे रहे थे, लेकिन 'शोले' ने धरम के नाजुक दिल में लम्हा-लम्हा सुलगते जज्बात को भड़का कर, शोला कर दिया था। बेहद दिलचस्प है कि धरम इस फिल्म में ठाकुर बलदेव सिंह का किरदार ओढ़ना चाहते थे। फिल्म के ठीक पहले संजीव कुमार ने अपने दिल की वसीयत पर हेमा का नाम लिखने की कोशिश की और उनकी ये कोशिश हेमा द्वारा खारिज कर दी गई। बीरू का रोल संजीव कुमार के पास जाने और दोनों के बीच मोहब्बत के पगने की संभावना को देखते हुए धरम ने फौरन बीरू का किरदार खुद करने का और खुद को हेमा के करीब जाने का मौका देने का फैसला किया। इसी फिल्म के दृश्य, जिसमें धरम हेमा को निशानेबाजी सिखाते हैं, धरम की चंचलता और मोहब्बत का बेहतरीन उदाहरण है। इस दृश्य में धरम लाइटमैन को हर रोज रिश्वत देते थे ताकि वो, हेमा को देर तक दिल के करीब रख सकें।

'सत्यकाम' में धरम ने अपने सुदर्शन चेहरे से कहीं आगे बढ़कर किरदार में अपना कतरा-कतरा लहू डाल दिया। सत्यनिष्ठा से काम करने की कोशिश में लगे एक नौजवान को बार-बार कामयाबी के लिए दूसरे रास्ते पर जाना पड़ता है। अपने सामने एक महिला के सतीत्व की रक्षा न कर पाने और जीवन में कुछ हासिल न कर पाने का बिछोह, सत्यप्रिय (धर्मेंद्र) को अंदर से तोड़ने लगता है। कुछ जख्म रगों से बहते हुए रूह तक पहुंच जाते हैं। पश्चात्ताप की आग में जलते हुए धर्मेंद्र इस फिल्म में अभिनय की उस यात्रा पर पहुंच जाते हैं, जो उन्हें सबसे बड़े तीर्थ का उत्तराधिकारी बना देती है। धरम अब शर्मीले और शालीन किरदारों के इतर बेहद खुले हुए चरित्रों की आवाज में बोलने लगे।

'चुपके-चुपके' में जहाँ उनकी हास्य क्षमता और खिलंदड़े रूप का दर्शन हुआ वहीं मजबूत बहादुर युवक की भूमिका में धरम 'धर्मवीर' में नजर आए। 'जुगनू', 'चरस' सहित बहुत सी फिल्मों में प्रयोग करते धरम के दिल में एक बाप भी बोलने लगता है और आखिर अपने बेटे सनी को 'बेताब' में प्रोड्यूस कर धरम एक नई कुर्सी पर बैठ जाते हैं।

धर्मेंद्र के कॅरियर की दूसरी पारी में अनिल शर्मा जैसे फिल्मकार ने उनकी शख्सियत को अलग-अलग रंग देने की कोशिश की और वो एक हद तक कामयाब भी हुए। 90 के दशक में जब सैकड़ों फिल्मों और दर्जनों हिट के बाद भी धरम को कोई अवॉर्ड नहीं मिलता तो उन्हें 'फिल्मफेयर लाइफ टाइम अवॉर्ड' से नवाजा जाता है। अवॉर्ड शो में दिलीप कुमार का यह कहना कि मुझे काश, धरम जैसा सुदर्शन बनाया गया होता, भोले धरम की आँखों में अचानक बरसात भर देता है। मर्दाना मजबूत जिस्म, बेहद सुदर्शन चेहरे और रूई के फाहे की तरह नरम दिल जैसा धरम होना इन्तेहाई मुश्किल बात है। ■

फिल्म निर्माता, समीक्षक, टीवी पत्रकार,
अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में ज्यूरी एवं सदस्य

FLUID CONTROLS®
ENGINEERING CONNECTIONS EVERYDAY

AT THE **FOREFRONT** OF **INNOVATION**

Design & Engineering
High Performance Connectors
Onsite Installation
Swaging Services
Pre-Piped Assemblies

Fluid Controls® has over 45 years of experience in design and engineering connections for Rail & Metro brake piping assemblies. At our DSIR-approved R&D center, we offer customers design and FEA services, performance testing at our state-of-the-art laboratory and customized pre-fabricated tube and hose assemblies.

प्रिय विज्ञापनदाता

रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एकमात्र मासिक हिन्दी पत्रिका

भारतीय रेल

में अपना विज्ञापन देकर लाखों उपभोक्ताओं के तक अपना उत्पादों की पहुंच बनाएं

विज्ञापन दरें

(विज्ञापन चार कलर में) — नीचे दी गई दरों के साथ 5 प्रतिशत की जीएसटी/आइजीएसटी प्राप्य होगी

विवरण	विशेष दर (वार्षिक अंक) (₹)	सामान्य अंक मासिक दरें	
		सामान्य दरें (₹)	अनुबंधित दरें (₹)
बैक कवर	13,300	11,400	10,450
सेकेण्ड कवर	12,350	10,450	9,500
थर्ड कवर	11,400	9,500	8,550
पूरा पृष्ठ (विशेष स्थिति, जैसे टेक्स्ट से पूर्व व बाद में)	9,500	8,550	7,600
पूरा पृष्ठ	8,550	7,600	6,650
आधा पृष्ठ	6,650	5,130	4,180
सेंटर स्प्रेड	17,000	15,000	13,300
सेंटर स्प्रेड (दो पेज इकट्ठे (स्पेशल पोजीशन)	18,500	16,500	14,700

* तीन महीने या ज्यादा समय के लिए लगातार अथबा बारी-बारी देने पर अनुबंधित दरें लागू।

तकनीकी विवरण

पत्रिका का आकार
28 X 20.5 सेमी

छपाई क्षेत्र
23 X 16.5 सेमी

भुगतान का माध्यम : व्यापार प्रबन्धक, भारतीय रेल, नई दिल्ली के पक्ष में डिमाण्ड ड्राफ्ट अथवा नकद राशि रूम नं. 310, रेल भवन, नई दिल्ली - 110 001 में जमा की जा सकती है

संपर्क करें

व्यापार प्रबन्धक, प्रशांत कुमार पट्टनायक
310, रायसीना रोड, नई दिल्ली - 110 001
टेलिफोन : 011-233822531, 23303665, 23304456

विज्ञापन सामग्री : ई-मेल, आर्टपुल, सीडी

पत्रिका का प्रसार : समग्र देश में

रेल, पर्यटन व साहित्य को एक साथ संजोए
रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एक मात्र हिन्दी मासिक पत्रिका

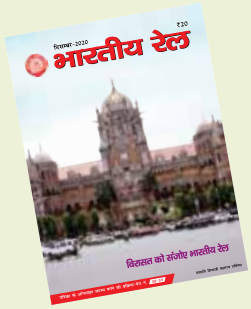

भारतीय रेल

की सदस्यता अब ऑनलाइन भी उपलब्ध

विजिट करें : **www.irctctourism.com/IRBRmag/#/home/hn**

सदस्यता शुल्क

मद		ऑफलाइन सदस्यता शुल्क (₹)	ऑनलाइन सदस्यता शुल्क (₹)
एक प्रति (मासिक अंक)		20	–
एक प्रति (विशेषांक)		70	–
वार्षिक सदस्यता (सर्व साधारण)	एक वर्ष	250	263
	दो वर्ष	460	483
	तीन वर्ष	675	709
वार्षिक सदस्यता (रेलकर्मी)	एक वर्ष	200	210
	दो वर्ष	370	389
	तीन वर्ष	540	567
वार्षिक सदस्यता (विदेशी) सी-मेल द्वारा		1,250	1,313
वार्षिक सदस्यता (विदेशी) एयर-मेल द्वारा		2,500	2,625

(वार्षिक सदस्यता शुल्क विशेषांक के साथ)

भुगतान का माध्यम

ऑनलाइन — सदस्य www.irctctourism.com/IRBRMag पर सदस्यता शुल्क का भुगतान कर सकते हैं।

ऑफलाइन — डी.डी./चेक/म.ओ./पो.ओ./नगद **देय** – 'व्यापार प्रबन्धक, भारतीय रेल, नई दिल्ली'

सदस्यता फॉर्म

नाम .....

पता .....

पोस्ट..... जिला.....

राज्य..... पिन कोड .....

मोबाइल ..... ई-मेल .....

रेल कर्मचारी : हाँ / नहीं वर्तमान सदस्यता (हो तो) संख्या ..... तारीख .....

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : व्यापार प्रबन्धक, कमरा नं. 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001,
टेलीफोन: 011-47845378, 23382531, 45380 (रेलवे) **bmpr310rb@gmail.com**

पंजीयन संख्या : दिल्ली पोस्टल नं. डी.एल. (एन.डी.)-11/6031/2021-22-2023
आर.एन.आई. रजिस्टर्ड नं. 14427/1960
आई.एस.एस.एन. 2457-0001
दिनांक 08 को प्रकाशित तथा दिनांक 10-11 को प्रेषित

Coaches & Trainsets

Air Conditioners with Micro-processors

Bio Vacuum Toilet Systems

FRP Toilet Cubical

Side Panels and Roof Panels for Coach Interiors

Seats and other Accessories for Coach Interiors

Diesel Locomotives

Traction Alternators

Traction Motors

Radiator Cooling Fans

Dynamic Brake Grids

Dynamic Brake Blower Motors

Auxiliary Generators

Dustbin Blower & Motor

Driver Cab Air Conditioners

Electric Locomotives

Traction Motors

Traction Transformers

Pantographs

Harmonic Filters

Driver Cab Air Conditioners

Daulat Ram
ENGINEERING

10/2, NH-12, Simrai, Post Obedullahganj, Dist. Raisen, Near Bhopal 464 993 INDIA
Tel.: +91 7480 231400 / 252 / 253, 8889000732 / 34 / 35 / 36. Fax: +91 7480 231250
e-mail: info@daulatram.org • web: daulatram.com

मुद्रक व प्रकाशक : **प्रशान्त कुमार पट्टनायक** द्वारा रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) के लिए मैसर्स जे.के. ऑफसेट ग्राफिक्स प्रा.ली., बी-278, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-20 में मुद्रित व 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली से प्रकाशित। संपादक : **योगेश अवस्थी**